मैथिली

साहित्य

ताराशंकर बंद्योपाध्याय

महाश्वेता देवी

MT
891.443 092 4 B
223 M
भारतीय

MT
891.443092
B223M4

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोधनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

ताराशंकर बंद्योपाध्याय

लेखिका
महाश्वेता देवी

अनुवादिका
निभा सिंह

साहित्य अकादेमी

Tarashankar Bandyopadhyay : Maithili translation by Nibha Singh of Mahasweta Devi's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 891.443 092 4 B 223 M
00117163

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९६

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पन्द्रह टाका

117163
10.12.04
SHIMLA

ISBN 81-7201-983-1

MT
891.443 0924
B 223 M

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

अध्याय १

ताराशंकर बंद्योपाध्यायक जन्म २५ जुलाई १८९८ ई. मे पश्चिम बंगालक वीरभूम जिलाक लाभपुर नामक गाममे भेल छल। हुनक पिताक नाम श्री हरिदास बंद्योपाध्याय और माताक नाम श्रीमती प्रभावती देवी छल। ओ परिवारमे सभसँ पैघ छलाह। हुनका एकटा बहिन और दूटाभाय छलनि।

पौराणिक कथा सभमे लाभपुर अट्टहास नामसँ प्रसिद्ध अछि और ओहि ५१ पवित्र स्थान सभमे सँ एक अछि जत' सतीक शरीरक छिन्न-भिन्न अंग खसल छलनि। लाभपुरमे शक्ति और विष्णु दुनू सम्प्रदाय सशक्त छलैक।

बंगालक आन जिला सभ जकाँ वीरभूम सेहो लोक संगीतक धनी अछि। बाल्यावस्थामे ताराशंकरक नींद ओहि बाउल वैष्णव एवं शाक्त गायक सभहक गीत सुनि क' खुजैत छल जे प्रातःकाल दान– दक्षिणा लेबाक लेल द्वार पर अबैत छलाह आ जनिका सभकेँ ग्रामीण कहियो मना नहि करैत छलनि। मुसलमान भक्त से हो अबैत छलाह और मुसलमान पीर सभहक एवं हिन्दू-देवता सभहक भक्तिक भजन गबैत छलाह। बीरभूमक लोक सभमे सदिखन साम्प्रदायिक सद्भाव रहल अछि। इस्लामक अनुयायी पटुआ नामक एक विचित्र वनजारा जातिक लोक अबैत छल और भगवान श्रीकृष्ण तथा गोरांग महाप्रभुक जीवन–चरितक चित्रावली ग्रामक लोकसभकेँ देखबैत छल एवं भजन गबैत छल। व्यावसायिक सपेरा सभ सेहो मुसलमान छल। पुरुष अपन सौन्दर्यक लेल प्रसिद्ध छल और महिला लोकनि उदार प्रेम और कुशल नृत्यक लेल। बाजीगर अबैत छल और नवयुवक सभहक मनकेँ मोहि लैत छल। एहि अद्भुत बनजारा जातिक स्त्रिगण सभ प्रणयवर्द्धक तथा जादुई दबाइ सभ सीधा-सादा ग्रामीण सभक हाथ बेचैत छली। पुरुष खरहा, सनगोहि आ साहीक शिकार करैत छल।

गामक छोट–पैघ जमींदार उच्च वर्गक छलाह। हुनका लोकनिमे सँ किछु कोइलाक खान सभ किनबाक बाद समृद्ध भ' गेल छलाह। गरीब सभहक जीवन घोर दरिद्रतामे बीतैत छल, मुदा उच्च वर्गक लोक सभहक लेल जीवनयापन सस्त छल। ताराशंकर लिखैत छथि ''चारि-पाँच हजार रूपैया साल (हुनक छोट सन जमींदारीक आमदनी) पर केओ

राजा जकाँ रहि सकैत छल। साग-सब्जी पर मासमे पचहत्तर पाइ खर्च होइत छल। एहिपर प्रत्येक पन्द्रह दिनमे एक बेर हाटक दिन मात्र सैंतीस पाइ खर्च होइत छल। एक नौकरकेँ मासमे डेढ़ रूपैया देल जाइत छल और कुशल खानसामाकेँ अढ़ाइ रूपैया देल जाइत छल। पुरूषभनसीया केँ अढ़ाइ रूपैया तथा महिला भनसीया केँ तीन या साढ़े तीन रूपैयासँ बेसी नहि भेटैत छलैक।''

खानदानी रईस सभ और कोइलाक नव धनिक व्यापारी सभहक बीच तरे-तर प्रतिद्वन्दिता चलैत रहैत छल। व्यापारी वैष्णव छलाह आ जमींदार शाक्त। के मन्दिरक मरम्मत कराओत वा के पोखरिक घाट सभहक मरम्मत कराओत के प्राथमिक विद्यालय खोलत वा के हाई स्कूलकेँ वित्तीय सहायता देत, एहि विषय सभपर भारी प्रतिद्वन्दिता चलैत रहैत छलैक। मांगलिक अवसरपर दुनू दल फटक्का फोड़ि क' वा नाटक क' क' एक–दोसराकेँ हरैबाक प्रयास करैत छल। लाभपुरमे नाटकक नीक परम्परा छल। गाम मे स्थायी रंगमंच छलैक, जाहिमे बिजली लागल छलैक एवं एकटा प्रेक्षागृह सेहो छलैक। प्रसिद्ध यात्रा–मंडली सभहक लोक गाममे नाटक करबाक लेल अबैत छलाह।

एहन छल समाज आ एहन छलाह लोक। बीरभूमक लाल और सुखायल माटि, आ दुर्दान्त कोपाई नदी ताराशांकरक जीवनमे कम महत्त्वपूर्ण स्थान नहि रखैत अछि। हिन्दू धर्मक विकसित रूप आ तकर प्रहारक अछैत, प्राचीन पूजा-पद्धतिक अवशेष साधल चुड़ैल जकाँ यातना सँ चिचिआईत धूराक विहाड़ि, वर्षा सँ मुक्ति पबैत धरतीक झुलसल प्राण आ बाढ़िसँ आप्लावित नदी–ताराशंकरक अधिकांश कथा आ उपन्यासक आधार भूमि इएह सभ अछि। ''चैताली घुरनी'' (बैशाखी बिरड़ो) सँ ल' क' मृत्योपरांत प्रकाशित ''शताब्दीर मृत्यु'' (शताब्दीक मृत्यु) धरि ओ एही धरती, एही माटि, एही प्रकृति और एही जनमानसक अन्वेषण तथा पुनरान्वेषण करैत रहलाह।

हुनक पिता स्कूलक शिक्षा पूरा नहि कैने छलाह। ओ अपना सँ पढ़लनि आ बहुपठित भेलाह। हुनका लग नीक पुस्तकालय छल और ओ विभिन्न पत्र–पत्रिका एवं दैनिक पत्र सभहक ग्राहक छलाह।

जखन ताराशंकर मात्र आठ वर्षक छलाह हुनक पिताक मृत्यु भ' गेल छल। हुनक माता पटनाक एक शिक्षित परिवारक छलीह। पुरान खानदानी अंग्रेजी शिक्षाकेँ प्रोत्साहन नहि दैत छल, मुदा हुनक मातृकुल अंग्रेजी शिक्षामे बड़ आगाँ छल। हुनक माता हुनका बड़ प्रभावित कैने छलीह। अव्यवस्थित एवं अस्त-व्यस्त घरकेँ ओ योग्यतापूर्वक ठीक कैलनि और योग्यतासँ चलैलनि। ताराशंकरक पिताक बहिन (पीसी) अपन पति एवं पुत्रक संगहि एकहि दिन मुइलाक पश्चात् अपन भायक संग रह' लगलीह। ओ ताराशंकरकेँ बड़ बेसी स्नेह करैत छलीह। सही वा गलतक नीक समझ और मूल्यक उच्च मानदंडकेँ रखनिहारि ई दुनू महिला ताराशंकरक जीवनक प्रारम्भिक अवस्थामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कैलनि।

हुनक माता अपना संग अनेक नव आ सुखद परिवर्तन अनलनि । ओ खिस्सा कहवामे कुशल छलीह । हुनक केकटा रचनामे हमरा सभकेँ एक उत्कृष्ट खिस्सा सुनवै वाला भेटैछ जेना ''गणदेवता'' और ''पंचग्राम'' (लोक ईश्वर आ पाँच गाम) में न्यायरत्न । हुनक माता देशभक्त परिवारसँ आयल छलीह । हुनकभाय लोकनि अपना समयक राष्ट्रीय आन्दोलन सभमे भाग लेने छलाह । १९०५ ई. मे लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल-विभाजनक दुर्भाग्यपूर्ण दिन ताराशंकरक पित्ती अपन बहिनक हाथमे राखी बन्हलनि एवं ओ बदलामे अपन बेटाक हाथमे दोसर राखी बन्हने छलीह, जे एकदम बेदरे छल ।

अपन पिताक मृत्यु, अपन माताक साहस एवं धैर्य, अपन पीसीक अधिकारपूर्ण स्नेह–एहि सभहक कथा निष्ठापूर्वक ''धातृदेवता'' मे चित्रित भेल अछि ।

जमींदार सभहक वर्ग खर्चीला, शराबक शौकीन एवं अत्यधिक घमंडी छल । हुनका लोकनिक वैयक्तिक और सामाजिक व्यवहारक स्तर बड़ ऊँच छल । ताराशंकरक मनमे अन्त धरि जमींदार सभहक लेल अत्यधिक अनुराग छलनि यद्यपि ओ अपन लेखनमे ओहि व्यवस्थाक दुर्गुण सभहक पर्दाफाश कैलनि अछि । ई जमींदार लोकनि धार्मिक अनुष्ठान सभक पालन बड़ निष्ठासँ करैत छलाह । ताराशंकरक परिवार धर्मपरायण तथा परमात्मामे विश्वास करऽ वला छल । नीक और बेजाय सही और अधलाह सब स्पष्ट रूपें विभाजित छल । नीक, नीक छल और बेजाय, बेजाय छल, सही सही छल और अधलाह अधलाह छल । अधलाह काज मात्र एही लेलसही नहि भ' जाइत छल जे प्रभावशाली और धार्मिक ओकरा करैत छलाह । एहने विचार सभक मध्य ताराशंकर वयस्क भेलाह । युवावस्था धरि हिनक धारणा सभ स्थापित जीवन मूल्य रूप बनि गेल छल । एहि प्रकारें जन–साधारण, प्रकृति, समाज आ परिवारक संगहि धार्मिकता एवं परमात्मामे विश्वास हुनक विचार सभक गठन कैलक आ हुनक चिन्तनक ढंगक निर्माण कैलक ।

अध्याय २

जीवनक अत्यन्त संवेदनशील समयमे जखन ओ किशेरावस्थासँ युवावस्था दिस बढ़ि रहल छलाह, तखन ताराशंकरक भेंट विख्यात नौजवान क्रान्तिकारी नलिनी वागचीसँ भेल। नलिनी बागची हुनका मे राजनैतिक जोश भरलनि। ई सभ जनैछ जे प्रथम विश्व-युद्धक समय हमरा सभक क्रन्तिकारी सभ दूटा कार्यपर विशेष ध्यान देलनि। पहिल, सेनाकेँ विद्रोहक लेल भड़ कैलनि और दोसर जर्मनीसँ हथियार मँगौलनि आ जतीन्द्रनाथ मुखर्जी जे 'बाघा जतीन'क नामसँ प्रख्यात छलाह-सन नेता लोकनिक नेतृत्वमे युद्ध कैलनि। ई दुनू योजना असफल रहल। आतंकवादी या त' लड़ैत मारल गेल या दीर्घकालीन सजाय कटबा लेल जेल चलि गेल। किछु गोटेँकेँ मृत्यु–दण्ड सेहो भेटलनि।

ताराशंकर १९१६ ई. मे लाभपुरक यादवलाल इंगलिश हाई स्कूलसँ मैट्रिक परीक्षा पास कैलनि। ओही साल हुनक विवाह भ' गेल। हुनका कलकत्ताक' सेंट जेवियर्स कॉलेजमे भरती कैल गेलनि मुदा हुनका कॉलेज छोड़ए पड़लनि, कियेक तँ हुनक नाम संदिग्ध राजनैतिक व्यक्ति सभक सूचीमे छल। बादमे ओ 'साउथ सुबर्बन' कॉलेज मेनाम लिखौलनि, जे आब 'आशुतोष कॉलेज'क नामसँ जानल जाइत अछि। एहि बेर अस्वस्थताक कारणेँ हुनका अपन पढ़ाइ बन्द करे पड़लनि।

क्रांतिकारी क्रिया-कलापमे एक प्रकारक अस्थायी शिथिलताक पश्चात् १९२१ ई. क क्रान्ति नव लहरि ल' कए आयल। महात्मा गाँधीक अहिंसात्मक असहयोगक विचार ताराशंकरक भावुक कल्पनाकेँ उत्तेजित कैलक। हुनक आत्म-कथात्मक रचना सभसँ हमरा लोकनिकेँ ज्ञात होइछ जे हुनका मनमे अपन देशक सेवा करबाक प्रबल इच्छा छल। हुनका ने कोनो दलसँ जुड़बाक इच्छा छल आने आतंकवादी काज सभमे हुनका कोनो विशेष रूचि छलनि। आतंकवादी सभक संग हुनक सक्रिय सम्बन्ध अत्यन्त कम छल। हुनक अर्ध–कथात्मक उपन्यास "धातृदेवता" मे हुनक राजनैतिक विचार उजागर भेल अछि।

ताराशंकर वास्तवमे भारतीय आतंकवादी सभक क्रान्तिकारी विचारक प्रति कखनो समर्पित नहि रहलाह। 'कल्लोल–दल'क लेखक गणक विषयमे लिखैत काल बादमे ओ लिखलनि, "हम विद्रोही नहि छलहुँ।" राजनीतिमे हुनक रूचि मुख्यतः भावनात्मक छलनि

जे बादमे साहित्यिक रूचिमे परिवर्तित भ' गेलनि । गाँधीजीक आदर्शमे हुनका ओहि सब प्रश्नक उत्तर भेटलनि जे हृदयकेँ मथैत रहैत छलैक । राजनैतिक सवतन्त्रता व्यक्तिकेँ स्वतन्त्र नहि क' सकैछ । कोनो व्यक्ति ताबत धरि स्वतन्त्र नहि भ' सकैछ जाबत धरि ओ अन्धविश्वास, लोभ, अज्ञानता आ संकीर्ण विचार सभक दास रहत । राजनैतिक स्वतन्त्रता भारतक करोड़ो नागरिककेँ कखनो स्वतन्त्र नहि क' सकैत छल । ओकरा गरीबी, शोषण, बीमारी, अशिक्षा एवं भाग्यवादसँ मुक्त करबाक छलैक । अपन देशवासीक लेल एहने चिन्ता हुनका हृदयमे अन्त धरि छल ।

अपन जीवन कालमे हुनका एक महान लेखक मानल गेल । यदि ओ महान लेखक छथि तँ हुनक रचना सबमे महानताक इएह सभ गुण अछि जेना लोकक लेल चिन्ता, ममत्व स्नेह आ सहानुभूति । एहन व्यक्ति सभहक विषय मे बेर-बेर लिखि क' ओ ओकर पीड़ाकेँ कम क' देबाक भावनात्मक संकल्प करैत प्रतीत होइत छथि । हुनक प्रतिबद्धता राजनीतिक नहि, व्यक्ति सभक प्रति छल ।

हुनक व्यक्तिक अवधारणा ओकर सम्पूर्णतामे निहित अछि । हुनक प्रमुख उपन्यास सभक नायकक चरित्र चित्रण आदर्श मूलक अछि, जेना ''गणदेवता'' आ ''पंचग्राम'क देबू, ''धातृदेवता''क शिवनाथ और ''सन्दीपन पाठशाला'' क सीतानाथ (गामक प्राथमिक स्कूल जकर नामकरण ओहि संतक नाम पर कैल गेल जे भगवान् श्रीकृष्णकेँ शिक्षित कैलनि) ।

एक पूर्ण व्यक्ति अपन वैयक्तिक, घरेलू, सामाजिक और राजनैतिक दायित्वसँ अपन मुँह नहि मोड़ैत अछि । ओ अपना समक्ष उच्चादर्श रखैत अछि आ ताही अनुसारेँ चलबाक पूर्ण प्रयास करैत अछि । ओ सदा आनक हितक लेल अपन हितक त्याग करैत अछि । पूर्ण व्यक्तिक सम्मान तँ सब करैत अछि किन्तु बुझैत केओ केओ अछि । तेँ ओ मूलतः एकाकी भ' जाइछ ।

और ओकर खूब प्रशंसा भेल । सम्पादक दोसर कथाक माँग कैलक । ओहो छपि गेल । एक आन अत्याधुनिक पत्रिका "काली कलम" लिखलक जे ई कथा सब अद्‌भुत अछि । ई सब कथा १९२९ ई. मे प्रकाशित भेल छल ।

"कालीकलम", "कल्लोल", "उपासना" और "धूपछाया" हुनकासँ रचना मँगलक । ओ सहर्ष रचना पठौलनि । एहि अवधिक लिखल कथा सभमे "श्मशानेर पथे" सेहो छलैक, जे कि जमींदार सभक, स्थानीय तथा पठान सूदखोर सभक शोषण, मलेरिया आ प्रशासनक 'बर्बर निष्ठुरताक' कारणेँ एक गामक शनैः–शनैः किन्तु अपरिहार्य मृत्यु–प्रक्रियाक कथा थीक । ई कथा हुनक "चैताली घुरनी" क आधार–भूमि बनल ।

विभिन्न काजें ओ समय-समयपर कलकत्ता अबैत रहैत छलाह । एहि बेर ओ "कल्लोल" और "कालीकलम" क कार्यालय गेलाह । हुनक साहित्यिक आत्मकथा "आमार साहित्य जीवन" (हमर साहित्यिक जीवन) सँ ज्ञात होइछ जे यद्यपि "कल्लोल" पत्रिका सर्वप्रथम हुनक प्रतिभाकेँ परखने छल मुदा 'कल्लोल–दल'क लेखकगणसँ हुनक प्रथम भिड़न्त असुविधाजनक छल । ओ हुनका सभक मध्य अपनाकेँ आत्म सचेतन एवं पृथक अनुभव कैलनि । शैलजानन्दकेँ ओ पहिनहिसँ जनैत छलाह । आन नवयुवक लेखकक वर्ग स्वप्नद्रष्टा, निष्कपट प्रेम एवं अपन नामक प्रभा–मण्डलपर मुग्ध छल । शहरक जीवनसँ ताराशंकर कम परिचित छलाह । ओ ई नहि बुझि सकलाह जे हुनका सभक शान्त उदासीनता और आत्म विश्वास एकटा निर्दोष देखाबा मात्र थीक । ताराशंकर हुनका सब जकाँ यौवनक प्रथम चरणमे नहि छलाह । ताराशंकर गामसँ आयल छलाह । ओ सभ नगरक निवासी छलाह । ओ ओहि समय विवाहित छलाह और हुनका संतानो छलनि । ओ सब जीवनक कुरूपताक संधान क' रहल छलाह, कल्पनासँ ठोस अनुभवक दुनियामे प्रवेश क' रहल छलाह । हुनका जीवनक कुरूपताक कल्पना नहि करय पड़ैत छलनि, कियेक तँ ओ जीवनक यथार्थ देखने छलाह । हुनका अनुभव भेलनि जे ओ शहरी साहित्यकारसँ पृथक छथि । प्रथमहि भेंटमे हुनकर उत्साह मंद पड़ि गेलनि । भावुक आ अतिसंवेदनशील ताराशंकर मात्र सहज सरल स्नेहक वातावरणमे स्वतन्त्रताक अनुभव क' सकैत छलाह । ओ शीघ्रहि "कालीकलम" क सम्पादक मुरलीधर वसुक निकट आबि गेलाह । एहि बीच हुनक सम्पर्क नृपेन्द्रकृष्ण चटर्जी, दिनेश दास, पवित्र गांगुली, अचिंत्यकुमार सेनगुप्त, प्रेमेन्द्र मित्र, सरोज कुमार रायचौधरी, सावित्री–प्रसन्न चटर्जी आदि एहि समयक लेखकगणसँ भेलनि । सवित्री प्रसन्न "उपासना" क सम्पादक छलाह, जे बादमे "चैताली घुरनी" क प्रकाशनमे हुनक सहायता कैलनि । उक्त लेखक सबमे सँ अनेको आगाँ चलि क' हुनक आजीवन–मित्र बनि गेलाह ।

१९२९ ई. क पश्चात् भारतमे कष्टकर अशान्तिक काल आयल । एहि उथल-पुथलक इतिहासमे 'मेरठ षड्‌यन्त्र' और चटगाँव शस्त्र डकैतीक विशेष उल्लेख आवश्यक

अछि। महात्मा गाँधी एहि अशान्तिकेँ 'सिविल नाफरमानी' आन्दोलनक दिस मोड़ि देलनि। ६ अप्रैल १९३० ई. केँ ओ अपन ७८ अनुयायीक संग विख्यात दांडी पद-यात्रा कैलनि। भारतक उत्तर–पश्चिमी सीमान्त प्रदेशसँ बम्बई धरि चहुँ दिस लाखक–लाख लोक गाँधीक आह्वानपर आन्दोलनमे कूदि पड़ल। मईमे गाँधीजी गिरफ्तार भ' गेलाह। जून मे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस केँ अवैध संगठन घोषित क' देल गेल। दस मासमे ९० हजारसँ बेसी लोक गिरफ्तार भेलाह।

१९३१ ई. मे पश्चिम बंगालक मिदनापुरक हिजली जेलमे पुलिसक गोलीसँ दू टा राजनैतिक बन्दी मारल गेलाह। कलकत्तामे एकर विरोधमे विशाल आमसभा भेल जाहिमे टैगोर जनताकेँ सम्बोधित कैलनि।

ताराशंकर १९३० ई. मे जेल गेलाह। ओ जेलमे जे किछु देखलनि ताहिसँ स्पष्ट भ'गेल जे राजनीति तेजीसँ सत्ता हथियैबाक खेल बनि रहल अछि। किछु बन्दी सभक राजनैतिक उन्मादसँ ओ स्तब्ध छलाह। जेलमे ओ दूटा नव उपन्यास ''चैताली घुरनी'' और ''पाषाण पुरी'' लिखव आरम्भ कैलनि। दिसम्बर १९३० ई. मे ओ जेलसँ छुटलाह।

जेलसँ छुटबाक तुरंत बाद ओ पहिल बेर सुभाषचन्द्र बोससँ भेँट कयलनि। सुभाषचन्द्र आ जे. एम. सेनगुप्तक बीच किछु मतान्तर भ' गेल छल। एहि विषयक छानबीन करबाक लेल श्री अणे कलकत्ता आयल छलाह। ताराशंकरकेँ गवाहक रूपमे वीरभूमसँ बजाओल गेल। जखन ओ सुभाषचन्द्रसँ भेंट कैलनि त' हुनकासँ कहलनि जे हुनका सन सामान्य कार्यकर्त्ता काँग्रेसक सेवाक लेल आयल छल व्यक्ति सभक लेल नहि। एहि दू टूक जबाबसँ सुभाषचन्द्र बड़ प्रभावित भेलाह। ताराशंकर सुभाषचन्द्र बोसक व्यक्तित्वसँ एतेक प्रभावित भेलाह जे बादमे ओ अप्रन पहिल उपन्यास ''चैताली घुरनी'' हुनके समर्पित कैलनि। घर आबि ओ अपन परिवारक महिला सभक जेवर बेचि क' बोलपुरमे एक छोट सन प्रेस कीनि लेलनि। एक छोट संन कोठरीमे छापाक मशीन लगायल गेल। ''उपासना'' और ''अभ्युदय''क सम्पादक सरोजकुमार राय चौधुरी जखन जेलसँ छुटि क' अयलाह तखन ई एहिपत्र सभक लेल लिखऽ लगलाह।

बंगालक लोकनृत्यक पुनरूद्धारमे लागल एक जिला-प्रशासक अपन पदक दुरूपयोग क' गाम सबसँ जबरदस्ती पुराकृति सभ एकत्र करब आरम्भ क' देलक आ एहिसँ ओ ग्रामीणक मध्य अप्रिय भ' गेल। लोकनृत्यक प्रति ओकर उत्साहपर सन्देह कैल जाय लागल जे ओ वास्तव मे बंगालक नवयुवक सबकेँ राष्ट्रीय आन्दोलनक पथसँ विमुख करै चाहैछ। एहि तरहक शंकाकेँ पूर्णतः मिथ्या नहि कहल जा सकैछ। ओकर गाम सभक मूर्तिक संग्रहपर व्यापक क्षोभ पसरि गेल। एक क्रुद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता ताराशंकरक अनुपस्थितिमे हुनक प्रेससँ एकटा लोकप्रिय गीतक पैरोडी छापि देलक। प्रशासककेँ लक्ष्य क' लिखल ओ गीत स्वांग आ उपहास सँ भरल छल। प्रशासक तमसा गेल। संबद्ध व्यक्ति

गिरफ्तार क' लेल गेल । ताराशंकर कोपभाजन बनलाह । जँ हुनका कोनो आरोपमे गिरफ्तार नहि कैल जा सकैत छल तँ दोसर झूठ आरोपमे फँसैबाक प्रयास होमए लागल । बोलपुर स्टेशनपर ताराशंकरकेँ दोसर बेर सुभाषचनद्र बोससँ भेँट भेलनि । ओ ताराशंकरकेँ सलाह देलनि जे ने त' ओ लिखित अनुबन्ध देथि, ने समर्पणे करथि । ताराशंकर छापा मशीनक कल-पुर्जा खोलि बैलगाड़ीपर लादि लाभपुर घुरि गेलाह ।

जीवनक एहि चरणमे काँग्रेससँ हुनक सम्बनध कमे छल । गामक जीवन उबाऊ छल । गामक लोक बेर-बेर विफल होयवाला व्यक्तिकेँ नहि बूझि सकल । बेचैनीमे ओ एकबेर पुनः जिला सभक भ्रमण करब आरम्भ कैलनि । ओ एकटा छोट बालिकाक मृत्यु पर कथाक पहिल भाग लिखलनि, मुदा ओहि कथाकेँ पूर्ण करै सँ पहिनहि हुनक ६ सालक बेटी बुलूक मृत्यु भ' गेल ।

शोक–संतप्त भय ओ कलकत्ता चलगेलाह । ''उपासना' क सम्पादक सावित्रीप्रसन्न चटर्जी अपन पत्रिका बन्द करैवला छलाह । ओ तारार्शकर कँ ''उपासना'' मे प्रकाशित हुनक एकटा उपन्यास एवं एकटा कथाक बकाया पारिश्रमिक देलनि । सजनीकांत दास अपन पत्रिका ''बंगश्री''क लेल ''उपासना''क कार्यालय ल' रहल छलाह । तत्कालीन लेखक सभक सभामे ताराशंकर अपनाकेँ पृथक आ एकाकी अनुभव करैत अपन व्यक्तिगत सन्ताप मे छटपटा रहल छलाह । ओ लाभपुर घुरि गेलाह ।

किछु दिनक पश्चात् ओ ग्राम–विकासक कोनो काजक सन्दर्भमे टैगोरसँ भेँट करबाक लेल शान्तिनिकेतन गेलाह ।

ओ जनैत छलाह जे हुनका पाई नहि चाही । मुदा ओ की चाहैत छलाह ? हुनक पत्नीक सम्बन्धी सब हुनका कोइलाक व्यापारमे लगबय चाहैत छलाह, मुदा विफल रहलाह ।

आब लाभपुर ताराशंकरक गामक रूपमे बेसी प्रसिद्ध अछि । मुदा हुनक अपन जीवन–कालमे गामक लोक एहि विचित्र व्यक्ति कँ देखय नहि चाहैत छल । हुनक व्यवहार असाधारण छल । ई आदमी हुनका सबकेँ बूझबामे नहि अबैत छल जे कखनो जेल चलि जाइत छल, कखनो गाम सभक भ्रमण करए लगैत छल, कखनो धनार्जनसँ दूर भ' जाइत छल आ कथा आ उपन्यास लिखैत रहैत छल । जँ गामक समाज संकुचित होइछ, तँ लोक ओहि व्यक्ति पर अविश्वास करै लगैत अछि जे भिन्न स्वभावक होइछ । यदि ओ व्यक्ति ओकरा सभक चीन्हल–जानल रहैछ तँ ओ सब दुश्मनी ठानि लैत अछि । एकटा तुच्छ विषयपर ताराशंकरकेँ दुश्मनी मोल लेबय पड़लनि । ताराशंकर गाम–समाजक आलोचनाक विरूद्ध ओहि व्यक्तिक पक्ष लेलनि जे अपन बेटीक विवाह हालेमे विलायतसँ घूरल युवकक संग क' देने छल । लाभपुर किछु बेसिए संकीर्ण रहल हैत, कियेक तँ उनैसम शताब्दीमे पश्चिम बंगालक अनेक जिलासँ लोक उच्च अध्ययनक लेल इंगलैंड जा चुकल छल । बंगालक पुनर्जागरण वास्तवमे पश्चिम बंगालेक लोक सभक प्रयत्नसँ सम्भव भेल छल ।

ताराशंकर कलकत्ता आबि गेलाह। हुनक कथा ''श्मशान घाट'' जे एकटा बच्चाक मृत्युक विषयमे छल, सँ सजनीकांत दास एतेक बेसी प्रभावित भेलाह जे ओ ओकरा ''वंगश्री''क पहिल अंकमे छपलनि।

ताराशंकर अनुभव कैलनि जे घटनाक केन्द्रमे रहबाक लेल हुनका कलकत्तामे रहबाक चाही। प्रसिद्ध चित्रकार यामिनी राय सेहो हुनका यैह सलाह देलनि। कलकत्तामे रहबाक लेल मासिक बीस पच्चीस रूपैया आवश्यक छल। एतबा ओ कोना कमैताह ? सवित्रीप्रसन्न चटर्जी बारह अंकमे प्रकाशित उपन्यासक लेल १० (दस) रूपैया हुनका देने छलाह। मुदा सभ सम्पादकसँ एतेक उदारताक आशा नहि कैल जा सकैछ। पुस्तकक दोसर संस्करण कदाचित होइत छल। लेखनसँ पैसा कमैबाक आशा कोनो लेखक नहि करैत छल। ओ लाभपुर घुरि गेलाह। बेचैनी आ दौड़धूपक एकटा आर क्रम चलल। ''वंगश्री'' आ ''भारतवर्ष'' मे हुनक दू टा उल्लेखनीय कथा छपल। एकटा गामक मेलापर छल आ दोसर एकटा दीन-हीन स्त्रीक विषयमे, जकरा गाममे चुड़ैल कहल जाइत छल।

अपन कथा सभक लेल सामग्री जुटबैत काल अकस्मात् हुनका एक मित्र पुलिस अफसर चेतैलकनि जे जिलाक पुलिस प्रधान शमशुद्दोहा हुनक विषय मे पूछताछ क' रहल अछि।

बीरभूमक लोक शमशुद्दोहा कें सरलतासँ नहि बिसरि सकैत अछि। ओ जिलामे आतंकक राज शुरू क' देने छल। ताराशंकर कलकत्ता आबि गेलाह। शमशुद्दोहा कलकत्तामे हुनक जीविकाक स्रोतक विषयमे पूछताछ कैलक। सजनीकांत दास ताराशंकरक रक्षा कैलनि। ओ अपन खाता - बहीमे देखा देलनि जे ताराशंकर तीस रूपैया मास पर हुनका लेल काज करैत छथि।

वास्तवमे ताराशंकर कोनहु तीस रूपैया मास नहि पबैत छलाह। खाता–बहीमे शंका दूर करबाक लेल हेरा-फेरी कैल गेल छल। ताराशंकर अपन लेखनसँ उपार्जन करैत छलाह। ओ दक्षिण कलकत्तामे टीनक छत वाला एकटा कोठली भाड़ापर ललनि। किराया पाँच रूपैया मास छल। एक रूपैया ओ बिजलीक लेल दैत छलाह। गरीब सभक एकटा होटलमे दू वेरक भोजनक' आठ टाका मास लगैत छलनि। चाय आ नाश्तापर सातसँ आठ रूपैया और एतबे सवारीपर खर्च होइत छल। सफाई धोआइ ताराशंकर स्वयं करैत छलाह। ओ धरतीपर सुतैत छलाह आ टीनक वक्साकें लिखबाक डेस्कक रूपमे व्यवहार करैत छलाह।

एहि तरहें ओ व्यावसायिक लेखकक' जीवन आरम्भ कैलनि।

अध्याय ४

१९३३ ई. मे जखन ताराशंकर रहबाक लेल कलकत्ता ऐलाह तखन वंगालक साहित्यिक वातावरण केहन छल ?

वर्त्तमान समय जकाँ कलकत्ता ओहि समयमे सेहो बंगालक गतिविधिक केन्द्र छल। राजनैतिक गतिविधिक विभिन्न केन्द्र सेहो। छोट-छोट शहर सभमे सेहो साहित्यिक केन्द्र छल; मुदा कलकत्ता एहन स्थान छल जाहिठाम लेखक एकत्र होइत छलाह, पत्रिका एवं पुस्तक सभ प्रकाशित होइत छल। टैगोर एवं शरतचन्द्रक अतिरिक्त आन कोनहु लेखककेँ नीक पारिश्रमिक नहि भेटैत छलनि तथापि वहुतो, लेखनकेँ अपन व्यवसाय बनौने छलाह। साहित्य हुनका सभक जीवन छल।

किछु गोटे मरि गेलाह। अचिंत्यकुमार सेनगुप्त लिखैत छथि "–हमरा मृत्युसँ प्रेम भ' गेल छल। राजनैतिक एवं साहित्यिक दुनू प्रकारक क्रांतिकारी सभक लेल मृत्यु रोमांचसँ भरल छल।" (कल्लेक युग : अचिंत्यकुमार सेनगुप्ता) ई ओ युग छल जखन कल्पनाशील आ समर्पणक भावना सँ युक्त नवयुवक वा तँ लेखक बनि जाइत छल अथवा क्रांतिकारी।

लेखक लोकनि जनैत छलाह जे लेखनक व्यवसाय चुनबाक निश्चित अर्थ अछि गरीबी और भुखमरी। ताराशंकरकेँ थोड़ेक जमीन छलनि। ओ भूखसँ नहि मरितथि। यद्यपि हुनक ई निर्णय सरल नहि छल। ओ संयुक्त परिवारक सभसँ पैघ पुरुष सदस्य छलाह। दोसराक कल्याणक दायित्व हुनकेपर छल। वर्त्तमान शताब्दीक दोसर दशकक अन्तिम आ तेसर दशकक' प्रारम्भिक वर्षमे टैगोरक "मालंच" (फुलवारी); 'चारि अध्याय', "दुइ बोन" (दू बहिन); शरतचन्द्रक "श्रीकांत : तृतीय पर्व (श्रीकांतक जीवनक तेसर भाग) और "शेष प्रश्न" प्रकाशित भेल। टैगोरक "चतुरंग", "घरे–बाइरे" और शरत्चन्द्रक "पथेर दाबी" पहिनहि प्रकाशित भ' गेल छल। "पथेर दावी" एक निर्भीक क्रान्तिकारीक विषयमे लिखल उपन्यास छल जे बंगालमे क्रांति आनि देने छल।

"कल्लोल" पत्रिका आ ओहिसँ जुड़ल लेखक सभक विषयमे बहुत किछु कहल जा चुकल अछि। सत्य तँ ई अछि जे विश्व सामान्यतः राजनैतिक एवं आर्थिक महापरिवर्त्तन

तथा आशांति कालक अनुभव क' रहल छल। अनित्य कालावधिक अशांतिमे फँसल ओहि समयक जनताकेँ सौम्यता, संतोष एवं मौन सम्मतिक साहित्य अवास्तविक लगैत छलैक। गुलाम देशक जनतापर रूसी क्रांतिक जबरदस्त प्रभाव पड़ल छल। युद्धक पश्चात् (१९१४ ई.–१८ ई.) विश्व छोट भ' गेल छल आर लोक आन लोक सभक, आन देश सभक विषयमे जनबाक लेल उत्सुक छल एवं युवा पाठक एहन लेखक सभक स्वागत करैत छलाह जिनक रचना सभसँ ओ देश तथा भाषाक सीमा नाँघि विभिन्न विचार सभसँ तादात्म्य अनुभव क' सकैत छलाह। जोला, गोर्की, हैमसन, बोजर, रोलाँ एवं अन्य लेखकगण स्वभावतः बंगालक नव पाठक एवं लेखक सभकेँ आकर्षित क' रहल छलाह।

कटु–यथार्थ एवं रूमानी–निराशावादक चित्रण ''कल्लोल'' मे प्रकाशित कथा, उपन्यास एवं कविता सभक मुख्य स्वर प्रतीत होइछ। मुदा ''कल्लोल'' सेहो कोनो नव धरतीक सृष्टि नहि कैने छल। ''भारती'', ''सबुज पत्र, ''मानसी'' आदि पत्रिका सभकेँ ध्यानसँ देखबाक पश्चात् ई बात स्पष्ट भ' जाइछ जे किछु लेखक बंगला साहित्यमे एहि प्रवृत्ति सभक समारम्भ पहिनहि क' चुकल छलाह। पूर्ववर्ती पीढ़ीक लेखक सभमे सँ चारूचन्द्र बनर्जी, प्रेमकुमार अतर्थी, मणिन्द्रलाल बसु और हेमेन्द्र कुमार राय विशेष रूपसँ उल्लेखनीय छथि। जगदीश गुप्त और रमेशचन्द्र सेन किछु बादमे लिखब आरम्भ कैलनि, मुदा एहि दुनू लेखकक लेखनमे सेहो सामाजिक यर्थाथक गम्भीर अन्तर्दृष्टि भेंटैछ।

''कल्लोल'' पत्रिकाक विषयमे बहुत किछु कहल गेल अछि, मुदा एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक तथ्यपर बड़ कम ध्यान देल गेल अछि। एहि पत्रिकासँ जुड़ल लेखक नवयुवक छलाह। हुनक युग चरम अशांतिक युग छल, तथापि ओ लोकनि नितान्त अराजनैतिक रहलाह तथा देशकेँ विचलित करयवला धारासँ पृथक् रहलाह। समसामयिक अशांतिक प्रति उदासीन रहि ओ लोकनि एक तरहक परम्पराक आरम्भ कैलनि, जकर पालन आइ धरि हमरा सभक अधिकांश लेखक क' रहल छथि। ''कल्लोल'' क स्थापना तेसर दशकमे भेल छल। १९२४ ई. मे भारतीय कम्युनिस्ट सभक पहिल दलपर कानपुर षड्यंत्रक मोकदमा चलल। ओहि साल एक बंगाली युवक, गोपीनाथ साहा, एक यूरोपीय व्यक्तिकेँ एक कुख्यात अँग्रेज पुलिस अफसर बुझि कलकत्ताक सड़कपर गोली मारि देलनि आर बादमे एहि लेल हुनका फाँसी भेल। १९२५ ई. मे किछु आतंकवादी काकोरी रेलवे स्टेशन पर गार्डसँ खजाना छीनि लेलक, और बाद मे काकोरी मोकदमामे किछु लोककेँ फाँसी द' देल गेल। ओही वर्ष दक्षिणेश्वर बमकांड भेल। १९२६–२७ ई. मे मजदूर और किसान पार्टीक स्थापना भेल छल। चटगाँव शस्त्रागारपर हमलाक उल्लेख ऊपर भ' गेल अछि। १९३१ ई. मे मिदनापुरक हिजली जेलमे गोली चलाक' पुलिस दूटा कैदीकेँ मारि देलक। १९३१, ३२ और ३३ ई. मे मिदनापुरक तीन टा अँग्रेज जिला मजिस्ट्रेटकेँ आतंकवादी मारि देलक। पुलिस द्वारा यातना और आतंक अक्षुण्ण रूपसँ चलैत रहल। ई आशा करब

स्वाभाविक छल जे प्रत्येक लेखक एहन घटना सभपर प्रतिक्रिया व्यक्त करत तथा अपन लेखनमे अपन विचार सभकेँ लिपिबद्ध करत। मुदा ''कल्लोल'' क लेखक सभसँ ई नहि भेल। हुनक साहित्यिक चिंतनपर प्रमुख रूपसँ रूमानी–निराशावादिता और साहित्यिक रूढ़िक विरूद्ध अस्पष्ट विरोध, यैह प्रभाव परिलक्षित होइछ। मुदा इहो कहल जा सकैछ जे हुनक अराजनैतिक दृष्टिक पाछाँ कोनहुँ आन उद्देश्य नहि छल। ओहि मे सँ किछु लेखक दलित और सुविधाहीन सभक प्रति प्रेमकेँ अपन मुख्य विषय बनैलनि। शराबी, वेश्या, और अपराधीक विषयमे मनीश घटकक (उपनाम : युवानश्व) ''कल्लोल'' क लेल लिखल गेल कथा सभ उल्लेखनीय अछि। नृपेन्द्रकृष्ण चटर्जी उचित समय बुझि गोर्कीक उपन्यास ''माँ'' क अनुवाद कैलनि, मुदा ओ ''कल्लोल''क लेल नहि छल। हमरा सभक समयक ऐतिहासिक सन्दर्भमे देखल जाय तँ ''कल्लोल''क साहित्यिक उपलब्धि बेसी महत्त्वपूर्ण नहि बुझायत।

ताराशंकर एहि समयक उल्लेख सहानुभूति एवं उदारतासँ कैलनि, ''आलोचक कहैछ जे एहि समयक साहित्यिक धारा तत्कालीन यूरोपीय साहित्यिक धाराक प्रतिध्वनि आर अनुकरण छल, आ से आलोचक मिथ्या नहि कहैत छथि। एहन अनुकरण निस्संदेह भेटैछ मुदा, बेसी सत्य ई अछि जे लेखक असंतोष आ अशांतिसँ संत्रस्त छलाह। जनांदोलन दू बेर–१९२१ ई. एवं १९३० ई. मे विफल भ' चुकल छल। अहिंसक आन्दोलनक सिद्धान्त और यथार्थक मध्य समन्वय स्थापित करबाक प्रतिश्रुतिसँ हम सभ बड़ आश्वस्त भेल छलहुँ। ओ प्रतिश्रुति भंग भ' गेल। प्रथम विश्व युद्धक फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्वमे राजनैतिक एवं आर्थिक उथल-पुथल भ' चुकल छल। हमरा सभक जीवन सामान्यतः असन्तोष आर अशांतिसँ भरल छल। अहिंसाक अवज्ञामे आतंकवादक पुर्नगमन वस्तुतः वैह असन्तोषक अभिव्यक्ति छल। साहित्यक उद्देश्य समन्वयक लालसाक प्रतिफलन नहि, अपितु विद्रोह करव छल। साहित्यक मुख्य उद्देश्य यैह छल। अतएव नव साहित्य–धाराक आरम्भ अधैर्य और अशांतिक मध्य भेल।''

बंगालाक राजनैतिक वातावरणक युवा लेखक सभपर कोनहु प्रभाव पड़ल हो, एहन नहि प्रतीत होइछ। ओ सभ साहित्यमे क्रांति आनय चाहैत छलाह ने कि व्यवस्था मे। मुदा हुनक विद्रोहक भावना ओहि अशातिसँ भरल वातावरणमे जागल छल जाहिमे ओ साँस ल' रहल छलाह। सब लेखक अपन प्रथम परिचयक लेल ''कल्लोल'' पर निर्भर नहि छलाह। ''प्रवासी'', ''विचित्रा'' और ''भारतवर्ष'' तीनू अत्यंत प्रसिद्ध पत्रिका छल। ''प्रवासी'' केँ सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त छल। अचिंत्यकुमार सेनगुप्त ''कल्लोल'' सँ पूर्व ''प्रवासी'' क लेल लिखने छलाह। माणिक वनर्जी, ''विचित्रा'' क लेल कथा सभ लिखने छलाह। विभूति भूषण बनर्जीक १९२९ ई. मे प्रकाशित ''पथेर पाँचाली'' (पथक पाँचाली) साहित्यक दृष्टि सँ आरो बेसी महत्त्वपूर्ण छल। ई प्रसिद्ध उपन्यास ''विचित्रा'' मे

धारावाहिक रूपमे छपल छल । सजनीकान्त दास ''शनिवारेर चिट्ठी'' (शनि दिनक चिट्ठी) नामक पत्रिकाक सम्पादन करैत छलाह जे अपन अनुदारवादी एवं दृढ़ विचारक लेल विख्यात छल । सुरेशचन्द्र चक्रवर्ती बनारससँ ''उत्तरा''क सम्पादन करैत छलाह । धूर्जटीप्रसाद मुखर्जी ''उत्तरा''क नियमित लेखक छलाह । सुधीन्द्रनाथ दत्त १९३१ ई. सँ ''परिचय'' नामक त्रैमासिकक प्रकाशन आरम्भ कैलनि । बुद्धदेव बसुक काव्य–त्रैमासिक ''कविता'' पहिल बेर १९३६ ई. मे बहरायल । ''परिचय'' गम्भीर साहित्यक उच्च स्तर स्थापित कैलक । आधुनिक–काव्यक प्रेरणाक दिशामे ''कविता''क अपार सेवा रहल । ''कविता'' एहन समयमे आधुनिक कवि सभकेँ छापि आधुनकि काव्यक धरातलक निर्माण कैलक जखन आधुनिक कविता लिखब पाप बूझल जाइत छल । कोनहु आन पत्रिका नव कवि सभकेँ प्रोत्साहन नहि देलक ।

टैगोरसँ ताराशंकरक पहिल भेँट ग्राम–विकासक कार्यक्रममे भेल छल । किछु समयक उपरान्त ताराशंकर अपन उपन्यास ''राइकमल'' (एकटा वैष्णव कन्याक नाम) और कहानी संग्रह ''छलनामयी'' (दुर्ग्राह्य) डाकसँ टैगोरकेँ पठौलनि । टैगोरकेँ उपन्यास पसिन पड़लनि आर ओ हिनका ई लिखबो कैलनि । एक दोसर पत्र आयल, जाहिमे कथा सभक बड़ प्रशंसा कैल गेल छल । ताराशंकर टैगोर सँ भेंट करबाक लेल शान्तिनिकेतन गेलाह । टैगोर केँ ताराशंकरसँ अपन प्रथम भेँटक स्मरण नीक–जकाँ छलनि, ओ कहलनि जे बंगला साहित्यमे ग्रामीण विषयपर ताराशंकर सन चित्रण हुनका, पहिने कतहु नहि भेटल छल । गामक चुड़ैलक विषयमे लिखल गेल कथाक सन्दर्भमे टैगोर कलकत्ताक एक विद्वानसँ अपन वार्तालापक उल्लेख कैलनि । ओ विद्वान कहने छलाह जे ई विषय–वस्तु निश्चित रूपसँ पाश्चात्य साहित्यसँ लेल गेल हैत । अपन धरतीसँ बंगला लेखकक अपरिचयपर टैगोर दुःख प्रकट कैलनि । टैगोरक प्रशंसा पादि ताराशंकर अभिभूत भ' गेलाह । ओ टैगोर सँ पुनः कलकत्तामे भेंट कयलनि एवं हुनका ''जलसाघर'' नामक कथा–संग्रह भेँट कैलनि । ठीक एकर पश्चात् टैगोर गम्भीर रूपसँ अस्वस्थ भ'गेल छलाह । अस्वस्थतासँ ठीक पहिनहि ओ ''रायवाड़ी'' (राय सभक मकान) कथा पढ़ने छलाह । ओहि कथामे रावणेश्वर राय अपन घर छोड़ि कए जा रहल अछि मुदा जखन ओ घरक अन्तिम दर्शनक लेल पाछाँ घूमि कए देखैत अछि, ओकरा जलसाघरक बड़ैत दीपक संकेत सँ आपस बजबैत प्रतीत होइछ और ओ घूरि जाइत अछि । टैगोरकेँ अपन बेहोशीसँ होशमे आयब और रावणेश्वरक आपसीमे साम्य भेटलनि ।

पुनः जखन ओ शांतिनिकेतन गेलाह तँ टैगोर ई जानय चाहलनि जे ताराशंकर कियैक नहि जल्दी-जल्दी शांतिनिकेतन अबैत छथि । ताराशंकरक साहित्यिक संस्मरण सभसँ ज्ञात होइछ जे टैगोर ताराशंकरकेँ शान्तिनिकेतन सँ बेसी घनिष्ठतासँ जोड़ेय चाहैत छलाह । ओ आगाँ स्मरण करैत छथि जे टैगोरक कहब छलनि जे जिलाक निवासी सभक

लेल शांतिनिकेतन एक अपरिचित स्थान बनल अछि। ओ ई नहि बूझि सकैत छलाह जे अन्ततः बाधा कतय उपस्थित छैक। ई स्पष्ट अछि जे टैगोर ताराशंकरमे अजस्त्र सम्भावना देखने छलाह। यदि ओ अन्य तरहक व्यक्ति होइतथि तँ ओ टैगोरसँ बेसी आत्मीय होयबाक प्रयास करितथि। उदीयमान लेखक सभक लेल टैगोरक उदारता विख्यात छल। टैगोरकेँ ताराशंकरक रचना सभ नीक लगैत छल और ओ हुनका ई कहनहु छलाह। ताराशंकर अपन लाभक लेल एकर उपयोग नहि कैलनि, जाहिसँ हुनक दृढ़ चरित्रक पता चलैछ।

जखन ओ लेखक नहि छलाह तखन हुनका बेसी कष्टक सामना करै पड़लनि। यद्यपि अपन लेखनक आरम्भ मे हुनका किछु बाधाक सामना करै पड़लनि, तथापि सौभाग्यसँ तत्कालहि मान्यता सेहो हुनका भेटलनि। हुनका जकाँ बड़ कम लेखक एतेक सहजतासँ उत्कर्ष प्राप्त कैने छलाह। सौभाग्यसँ साहित्यिक जगतक अनेक प्रभावशाली व्यक्ति हुनक घनिष्ठ मित्र बनि गेल छलाह। सजनीकान्त दास, जिनकर तीक्ष्ण लेखन और कटु उक्तिसँ अनेक लेखक अशांत भ' जाइत छलाह, ताराशंकरक घनिष्ठ मित्र और सहयोगी छलाह। ओहि समयक एक अग्रगण्य कवि, निबन्धकार तथा आलोचक मोहितलाल मजुमदारक कहब छलनि जे ओ ताराशंकरकेँ अपन समयक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लेखक मानैत छथि।

बृजेन्द्र नाथ बनर्जी, जे प्रसिद्ध विद्वान, लेखक और १९ सम शताब्दीक बंगालक सर्वश्रेष्ठ दस्तावेजकार छलाह, ताराशंकरक मित्र और शुभचिन्तक छलाह। महान् सम्पादक एवं पत्रकार रमानन्द चटर्जी ताराशंकर केँ नियमित रूपसँ छपैत छलाह। यद्यपि प्रारम्भिक वर्षमे ताराशंकर केँ अपन एकटा पुस्तक छपैबाक लेल पाइक जोगार करै पड़ल छलनि, मुदा बादमे हुनका प्रकाशक भेटै मे विशेष कोनो कष्ट नहि भेलनि। गामक विषयमे ओ एक नव दृष्टिकोणसँ लिखि रहल छलाह। ओ एहन किछु नहि लिखैत छलाह जाहिसँ प्रश्न आ विवाद उठै। अनेक अर्थे ओ एक परम्परावादी छलाह। बंगालक पाठक समुदायकेँ सर्वदा एहन लेखक बेसी स्वीकार्य होइछ जें एक परिचित वातावरणक विषयमे, ग्रामीण बंगालक विषय मे लिखैत अछि। आधुनिक क्लासिक्सक रूपमे मान्य बेसी पुस्तक सभ ग्रामीण वंगालक विषयमे अछि। ताराशंकर एक नव उत्साह आर दुर्लभ निष्ठाक संग लिखि रहल छलाह, मुदाओ कोनो नव पथक निर्माण नहि क' रहल छलाह। ओ सहजहि स्वीकृत भ' गेलाह।

अध्याय ५

बंगला साहित्यमे ताराशंकरक प्रथम प्रवेश कथा लेखकक रूपमे भेल ।

हुनक कथा सभक संख्या बड्ड बेसी अछि आर ओकरा श्रेणीबद्ध करब सेहो कठिन अछि, कियैक तँ राजनीति और इतिहासक प्रति अपन जागरूकताक कारणेँ ताराशंकर अपन जीवनक अनुभवक प्रत्येक विषयपर लिखने छथि । हम हुनक किछु प्रमुख कथा सभक चर्चा करब एवं ई देखब जे लेखकक मुख्य चिन्तनक विषय ओहिमे कोन तरहेँ प्रतिफलित भेल अछि । ''जलसाघर'', ''रायबाड़ी'', ''साढ़े सात गंडार जमींदार'' (एकटा छोट जमींदार) एवं किछु आन कथा सब जमींदार सभक जीवनक विभिन्न पक्ष पर अछि । दरिद्र जमींदार सभक ह्रास और पतनक पुनरावृत्ति बहुतो कथा सभमे भेटैछ । ''रायबाड़ी'' उनैसम शताब्दीक जमींदार सभक प्रतिनिधि रूप रावणेश्वर रायक विषयमे अछि । तानाशाही, निष्ठुरता, निरंकुशता एवं उदारताक ओ मिश्रण अछि । ओकर पूर्वज कृषक सभक शोषण कय लूटि-खसोटि कए सम्पत्ति अर्जन केने छल । लम्पट आ कामुक रावणेश्वर राय एक आमोद-भवनक निर्माण करबैत अछि । जाहि दिन ओहि भवनमे ओकर रंगरेली आरम्भ होइछ ओही दिन ओकर पत्नी और पुत्रक मृत्यु भ' जाइछ । एहिसँ ओकरा भीषण आघात होइछ और ओ घर छोड़ि दैछ । मुदा जखन ओ पाछाँ घूमि अन्तिम बेर अपन महलक दिसि देखैत अछि तँ ओकरा घरक बरैत दीपक संकेत सँ आपस बजबैत प्रतीत होइछ और ओ घूरि जाइत अछि ।

ओकर पौत्र आ ''जलसाघर'' क नायक विश्वम्भर राय विरासतमे एक विशाल कर्ज, एक नम्हर मोकदमा आर राजसी मिजाजक अतिरिक्त अपन पूर्वजसँ और किछु नहि पबैत अछि । अतीत एवं ओकर मध्य कड़ीक रूपमे अव्यवहृत महल, एक वृद्ध घोड़ा और एक वृद्ध हाथी मात्र रहि जाइत अछि । जाहि दिन प्रीबी काउंसिलमे नवका धनिक, गांगुलीसँ ओ मोकदमा हारैत अछि, ओहूदिन ओहि भवनमे ओकर रंगरेली नहि रूकैत छैक । गांगुलीसँ अपमानित भए उत्तेजना मे आबि ओ भवनमे दूटा गायिका नर्तकीकेँ बजबैत अछि । एहि अन्तिम उत्सवमे ओ अपन एक-एक पाइ खर्च क' दैत अछि । प्रातःकाल उठि ओ पहिने जकाँ घोड़ाक जीन कसि घुमबाक लेल बहराइत अछि । मुदा जखन ओ

117163
10.12.04

उत्तेजित भए घोड़सवारी करैत गांगुलीक हाथेँ हारल गाम भ' कए जाइत अछि तखन ओकरा यथार्थक बोधहोइछ। ओ एक उपहास कयनिहार नग्न आर घृण्य संसारक आँखिक समक्ष स्वयंकेँ नग्न अनुभव करैछ। ओ घर घूरि अबैछ। सीढ़ी पर चढ़ैत ओ देखैत अछि जे भवनक द्वार खुजल अछि, दीपाधारक दीप बरि रहल अछि। मढ़ल फोटोसँ ओकर पूर्वज व्यंग्यसँ एकटक ओकरा देखि रहल छथि। भयभीत भए ओ घूमि जाइत अछि। पूर्वजक फोटो सभमे ओकरा अपन प्रतिबिम्ब देखाइ पड़ैछ। जेना ओ पूर्वजसँ बिरासतमे भेटल कामुकताक प्रतिमूर्ति हो। आतंकित भए ओ नोकर सभकेँ आमोद-भवनक द्वार बन्द करबाक आदेश दैत अछि।

राय वंशक चरित्रांकनमे असाधारण सहानुभूति भेटैछ। जमींदार सभक प्रति ताराशंकरक सहानुभूति अन्त धरि बनल रहल। ई दुनू कथा अत्यनत नाटकीयता और आवेशपूर्ण संवादसँ भरल अछि। ''साढ़े सात गंडार जमींदार''क बनबिहारी सरकार वृद्ध, पराजित एवं समय द्वारा अस्वीकृत अछि। ओ अपन भातिजक संग रहैछ और अपन अधीनस्थ सँ कर संग्रह करबाक प्रयास करैछ। वास्तवमे क्यो कर देबाक परवाहि नहि करैछ, कियेक तँ प्रथमतः ओ एक अत्यन्त छोट जमींदार अछि, एवं दोसर कृषक वर्ग ई जनैछ जे ओ किछु करबामे पूर्णतः सामर्थ्यहीन अछि। ओकर व्यवहारसँ ओकर भातिज लज्जाक अनुभव करैछ। जखन एहि वृद्धकेँ ई अनुभव होइत अछि जे ओकर अस्तित्व निरर्थक अछि, तखन ओ अपन भातिजसँ अनुरोध करैत अछि जे ओकरा बनारस पठा देल जाय। ओकर त्रासदी दरिद्र जमींदारक त्रासदी ओतेक नहि अछि जतेक कि वृद्ध और असहाय लोकक त्रासदी, जे जनैछ जे ओकर निरन्तर उपस्थिति दोसरक जीवनक लेल बाधक अछि। निरर्थक और आश्रित ओकर जीवन आनक लेल अड़चन बनि जाइत अछि।

हुनक कथा सभक आधार प्राकृतिक भावावेश और नैसर्गिक रूप अछि। ओ एहि विचारकेँ स्वीकारैत छलाह जे मनुष्यक असाधारण व्यवहार विचित्र मनोवेगक कारणेँ होइत अछि। तीव्र भावना और अतिनाटकीयता हुनका प्रिय छलनि, तेँ असामान्य परिस्थिति सबमे घटित नाटकीय घटना–सभमे हुनक रूचि छलनि। मानवीय मूढ़ता, प्रेम अवं भावावेश ''बेदेनी'' (बंजारिन) और ''तारिणी माझी'' क विषय अछि, पहिल प्रेमक विषयमे अछि, और दोसर मनुष्यक आत्मरक्षात्मक स्वभावक विषयमे। बंजारिन राधिका प्रत्येक वर्ष अपन संगी शम्भू, एक वृद्ध तेंदुआ आर एक तम्बू ल' कए गामक मेला मे अबैत अछि। शम्भूक नारंगी केस और पिंजरामे बन्द तेंदुआक आकर्षणमे ओ अपन पतिकेँ छोड़ि चुकल अछि। आब तेंदुआ और शम्भू दुनू वृद्ध भ' गेल अछि। राधिका जवान अछि और उत्साहसँ भरल अछि। एक विलक्षण निष्ठासँ ओ शम्भूक संग दैत अछि। एहि वर्ष राधिकाकेँ बंजारा युवक केष्टो भेटैत अछि जे मेला वला मैदानमे एक तम्बू गाड़ने अछि। राधिका और शम्भू दुनू एकरा अपन अपमान बूझैत अछि और केष्टोक तम्बूकेँ जारि देबाक

निश्चय करैत अछि । मध्य रात्रिमे जखन ओ केष्टोक तम्बूमे प्रवेश करैत अछि तखन केष्टोक जुआन और मनोहर चेहरा देखि ओ भावावेशक लहिरसँ अभिभूत भ' जाइत अछि । ओ ओकरा जगा दैत अछि औरअपना संग चलबाक लेल कहैत अछि । एक लापरवाह बंजारा और दुःसाहसी जुआन केष्टो एको क्षणक लेल संकोच नहि करैत अछि । राधिका शम्भूक तम्बू पर किरासिन छीटि आगि लगा दैत अछि । ''जरि कए मरि जायत बुढ़बा'', ओ आनन्दित भए हँसैत अछि । जीवाक अधिकार मात्र जुआन और प्रेमी सभकेँ अछि । ई संसार वृद्ध और जर्जरक लेल नहि अछि । ''बेदेनी'' ताराशंकरक एक प्रमुख कथा अछि । ओ वास्तविक जीवनसँ एहि पात्रकेँ लेलनि और ओकर जीवनसँ ओ नीक जकाँ परिचित छलाह । राधिकाक चित्रणमे ताराशंकर अपन किछु प्रिय बिम्ब प्रयुक्त कैलनि अछि । राधिका कारी-नागिन सन एकहरा और लम्बा अछि । ओकर व्यक्तित्वसँ मादकता झरि रहल अछि जेना ओ सुरा–सागरसँ स्नान कए बहरायल होए । बंजारिन सभक मुस्कानक पाछाँ तीक्ष्ण धार नुकायल रहैत अछि । ओकरा सँ प्रेमक अर्थ अछि, मृत्यु ।

तारिणी मलाहक कथामे ताराशंकर मनुष्य स्वभावक नग्नतम रूप चित्रित कैलनि अछि । तारिणी मयूराक्षी नदीसँ मनौती करैछ जे बाढ़ि आवै, कियेक तँ मात्र बाढ़िये टामे ओ नाव चला सकैत अछि । बाढ़िसँ परेशान लोक ओकरा धिक्कारैत अछि । मुदा बाढ़ि सूखल खेतकै उर्वर बनबैत अछि और खेतक सिंचाई सेहो करैछ । तारिणी अपन पत्नीक प्रेममे अभिभूत अछि । दीर्घ अकालक पश्चात् एक भयंकर बाढ़ि अबैछ । तारिणी अपन पत्नीक संग नावमे बैसि कए भगैत अछि । नाव डूबि जाइछ । ओ भँवरमे फँसि जाइत अछि । आतंकित ओकर पत्नी ओकरासँ लपटि जाइत अछि । पानि ओकरा माथ परसँ बहि रहल अछि । आब संघर्ष एहन अछि जे मात्र एकहि व्यक्ति जीवित बचि सकैत अछि । दानवी क्रोधोन्माद मे तारिणी अपन पत्नीक कण्ठ दाबि दैत अछि और ओकर मृत चाँड़ुर सँ अपनाकेँ मुक्त करैत अछि । ओ हवामे सांस लैत अछि और जीवित रहबाक मदमस्त आनन्दक अनुभव करैत अछि । मानवक आदिम नग्नताक वर्णनमे ताराशंकर श्रेष्ठ छथि । एहन परिस्थितिमे मनुष्यक एकमात्र व्यवहार ओहि मनोवेगक अनुसारेँ होइत अछि जे ओकर रक्तमे अछि, जे ओकर पाशविक मनोवेग अछि । अर्जित विशेषतासँ पृंथक होयबाक पश्चात् मनुष्य केहन व्यवहार करत एकर अनुमान हुनका छलनि ।

मानव-प्रवृत्तिमे अलौकिकताक प्रति असत्यधर्मी विश्वास प्रायः अन्तर्निहित रहैत अछि और ताहि हेतु मनुष्य ओहि असत्यधर्मी विश्वासक कारणेँ अस्वाभाविक कार्य क' सकैत अछि । किछु कथा सभमे एहि विषयवस्तुक प्रमुखता अछि । एहि तरहक कथा सभ एहि अप्रिय–सत्य केँ उजागर करैछ जे अंधकार युग और प्रकाश युग संग-संग चलैछ । कोनहुँ व्यक्ति अपन जीवनक अधिकांश भागमे एक सभ्य व्यक्ति जकाँ आचरण करैत रहि सकैछ । मुदा, हठात् वैह व्यक्ति अपन आदिम पूर्वज जकाँ व्यवहार सेहो क' सकैछ,

ज ब च्चाकेँ नदीमे फेकने छल, वाल-विधवाकेँ चितामे जारने छल, अथवा कोनहु व्यक्तिकेँ कालीक वेदीपर बलि चढ़ैने छल। ''छलनामयी'' कथामे कोइला–खदानक मैनेजर तांत्रिक साधनासँ परमशक्ति प्राप्त करै चाहैछ। ओ प्रकृतिपर विजय प्राप्त करै चाहैछ। ओकरा किछु शुभ-चिह्नसँ युक्त पुरुष-शवक आवश्यकता अछि। जखन ओ श्मशानसँ ओहन शव प्राप्त करबामे असफल भ' जाइछ तखन ओ ओहि चिह्नसँ युक्त एक मनुष्यकेँ मारि दैत अछि। मुदा श्मशानमे साधना करैत काल ओकरा अपन बेटीक भयाक्रांत चीत्कार सुनाइ पड़ैछ, कियेक तँ अनजानहिमे पिता अपन जमायक हत्या क' देने अछि। पिता रात्रिक अंधकारमे पड़ा जाइत अछि। आदर्श शवक उपरान्तो ओकरा अपन लक्ष्य नहि भेटैछ। परमशक्ति ओकर हाथ नहि अबैत अछि। तांत्रिक, साँप, बनजारा, शव-क्रिया, शिकार, रक्तपात, क्रूरता, बर्वरता, हिंसा, कुटिलता, पशुता–एहि विषय सभक अपार क्षमता तकनिहार ताराशंकर पहिल लेखक छलाह और ओ अपन कथा सभ मे एहि सभक अत्यन्त सफल प्रयोग कैलनि अछि। तीव्र नाटकक नीक ज्ञान रखनिहार लेखके एहन विषय सभक उपयुक्त प्रयोग क' सकैछ। ताराशंकर मे एहि तरहक नाटकीय वोध छल। हुनक संवाद नाटकीयतासँ भरल अछि। नाटकीय ढंगमे लिखल गेल ''अग्रदानी'' विकृत विषयपर एक नीक कथा अछि। ''अग्रदानी'' (ओ ब्राह्मण जे कोनहु मृतकक लेल निवेदित भोजन करैछ एवं दक्षिणा स्वीकारैछ) कथा चक्रवर्ती नामक एक ब्राह्मणक विषयमे अछि जे मृतात्माक लेल निवेदित भोजन करैछ, ताहि हेतु आन ब्राह्मण सभक घृणाक पात्र अछि। चक्रवर्तीक पत्नी और वच्चा भूखसँ मरैत अछि, मुदा ओकरा मात्र अपन पेटक चिन्ता छैक। लोलुपता ओकरा प्रायः पशु बना देने अछि। लोभवश ओ जमींदार क घर पर नजरि रखैत अछि जतय ओहि राति एकटा पुत्र जन्म लैत अछि। जमींदारक बच्चा जन्म लेवाक संगहि मरि जाइत अछि। यदि ई बच्चा जीवित रहैत तँ चक्रवर्तीकेँ जमीन और मन्दिरसँ भोजन भेटैत। ओहि राति चक्रवर्तीक पत्नी सेहो एक पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। जखन जमींदारक बेटा मरि जाइत अछि तखन चक्रवर्ती मृत बच्चाक स्थानपर अपन बेटा राखि दैत अछि, जे जीवित अछि। ककरहु एहि अदला-बदलीक जानकारी नहि छैक। ओकर बेटा जमींदारक वेटा जकाँ पैघ होइत अछि। ओ जुआन भ' जाइछ। जखन ओ मरैत अछि तखन चक्रवर्ती मृत-भोजसँ मना करैछ मुदा जमींदार ओकरा भोजनक लेल विवश करैत अछि। ओकर अति लोभ ओकरा ई अस्वाभाविक काज करबाक लेल विवश करैछ। ''पुत्रेष्टि'' (पुत्र प्राप्तिक लेल कैल गेल पवित्र साधना), मे एक वृद्ध जमींदार पुत्र-प्राप्तिक लेल नर-वलिक आयोजन करैछ। ओकर पत्नी ओकर प्रयत्नकेँ विफल क' दैत अछि।

चुड़ैलपर विश्वास प्रारम्भिक कालहिसँ चलल आबि रहल अछि। ''डाइनी'' (चुड़ैल) नामक कथामे ई विश्वास, मानवक अंधविश्वास और प्राकृतिक प्रकोपकेँ लेखक वड़ नीक जकाँ गँथने छथि। रौदसँ जरल मैदान मे, जतय ने घास जनमैत छल और ने चिड़ै चहचहाइत

छल, ततय एक स्त्री रहैत अछि, जे गामक चुड़ैलक रूपमे जानल जाइत अछि। अनका जकाँ ओकरो ई विश्वास अछि जे ओ मानवक अनिष्ट करबाक शक्ति रखैत अछि। ओ असगर रहैत अछि जकरासँ क्यो गप्प नहि करैछ। डरसँ ग्रामीण ओकरा भोजन द' अबैछ। यदि क्यो मरैत अछि तँ ओकरासँ सम्बन्ध जोड़ल जाइछ जे ओ मानव रक्तक लेल लालायित अछि। एक दिन एक प्रेमी युगल ओकर घर लग अबैत अछि। चुड़ैल मनुष्य जकाँ व्यवहार करैत ओहि लड़काकेँ सांत्वना देबाक प्रयास करैछ जकर प्रेमिका ओकरा क्रोधित भए छोड़िक' चलि गेल अछि। लड़का डेरा जाइत अछि, जरैत रौदमे घर दिसि भगैत अछि। लूसँ ओ मरि जाइछ। चुड़ैल डेरा जाइछ जे एहि बेर ग्रामवासी ओकरा मारि देतैक। ओ ओहि स्थानकेँ छोड़ि देबाक प्रयास करैछ मुदा तखनहि धूरसँ भरल प्रचण्ड आन्ही आयल और दुर्बल बुढ़ियाकेँ उड़ाय देलक। दोसर दिन ग्रामवासीकेँ एकटा गाछक ठारिमे फँसल ओकर शरीर भेटैछ। एहि अप्राकृतक मृत्युक पश्चात् ओकर चुड़ैल हैब दृढ़तासँ सिद्ध भ' जाइछ। ई कथा ताराशंकर किशोरावस्थामे देखल गामक एकटा डाइनक अनुभवपर लिखने छथि। जखन ओ विलक्षणता अवं कुटिलतापर लिखैत छथि अधिकांश समय पाठक केँ लगैछ जे ओ ओहिपर विश्वास करैत छथि। अपन विषयक प्रति लेखकक मुग्धताक चलते डाइनक त्रासद मानवीय पक्ष लुप्त भ' जाइछ।

पशुक जीवन और व्यवहारमे हुनका गम्भीर रूचि छलनि और विशेषरूपेँ साँपमे विशेष अभिरुचि छलनि। मानव-सत्ता और पशुक सम्बन्ध कथाक एक चित्ताकर्षक विषय भ' सकैछ। दू टा लेखक, प्रभातकुमार मुखर्जी और शरतचन्द्र चटर्जी एहि सम्बन्धपर दूटा उत्कृष्ट कथा लिखने छथि– ''आदरिणी'' (पालतू हाथी) और ''महेश'' (एकटा गायक नाम)। पशु विषयक, विशेष रूपसँ साँप विषयक ताराशंकरक प्रतिपादन भिन्न तरहक अछि। अंधविश्वासी और अज्ञानी केँ ओ नीक जकाँ बुझैत छलाह। हुनका ज्ञात छलनि जे साँपक विषयपर भारतमे चिरकालसँ आख्यान, कथा और मिथक गढ़ल जाइत रहल अछि, किएक तँ भारतमे साँपक प्रचुरता अछि। साँप मृत्युक पर्याय सेहो अछि। भारतमे लोक सर्प-दंशक उपचारक लेल अखनुह ओझा लग जाइछ जे मन्त्र पढ़ि और जन्तरक प्रयोगसँ चिकित्सा करैछ। जखन ओ अनुभव करैछ जे दंश प्राण घातक नहि छैक तखन ओ झाड़ि-फूंकि कए प्रभावित व्यक्ति केँ स्वस्थ्य करबामे प्रायः सफल भ' जाइछ। मुदा लोक प्रायः मरि जाइछ। मृत्यु डरसँ सेहो भ' सकैछ। ताहि हेतु साँपक विषयमे लोक नितान्त भाग्यवादी भ' जाइछ। ताराशंकरकेँ मनुष्यक अज्ञानताक ज्ञान अपन समयक कोनहु आन लेखकसँ बेसी छलनि और ओ एहि पर खूब लिखलनि। हुनका ज्ञात छलनि जेहन कि जिम कोरबे और कतेको आन लोक कहि चुकल छथि जे भारतमे लोक साँपक विषयमे बड्ड कम जनैत अछि। भारतवासीक लेल सामान्यतः साँप वंश-वृद्धि, सम्पत्ति और मृत्युक प्रतीक अछि, वस्तुतः साँपकेँ रहस्मय एवं अलौकिक शक्तिसँ युक्त सेहो मानल

जाइछ। औसत भारतवासीक लेल साँप सरीसृप प्राणी मात्र नहि आरो बहुत किछु होइछ। औसत बंगालीक एही आशुविश्वासिताक उपयोग ताराशंकर ''नारी और नागिनी'' कथा और ''नागिनी कन्यार काहिनी'' (नागिन कन्याक कथा) उपन्यास लिखैत काल कैलनि। 'नारी ओ नागिनी'' मे ताराशंकर नागिनकेँ मानव गुणसँ युक्त कैलनि जे अपन सपेराक प्रति एतेक मुग्ध भ' जाइछ जे संगम–ऋतुमे ओ ओकर पत्नीकेँ डसबाक लेल पहुँचि जाइछ। ''हाँसुली बांकेर उपकथा'' (हँसली मोड़क उपकथा) नामक हुनक उपन्यास मे ग्रामवासी मानैछ जे विशालकाय दुबोइया (आजदहा) ओकर भोजन-संरक्षीक प्रतीक अछि। सौभाग्यसँ ''कल्पहार'' (भैंसाक नाम) मे भैंसाक मानवीकरण नहिभेल। ई कथा एक कृषकक अति वास्तविक त्रासदी थिक जे अपन भैंसा बेचबाक लेल बाध्य होइछ, कियैक तँ ओ आब ओकरा खुआ नहि सकैछ। शहरक मवेशी-हाटमे ओ ओकरा बेचि दैत अछि। अपरिचित स्थानमे भैंसा डेरा जाइछ और घरक दिस पड़ैबाक प्रयास करैछ। पुलिस निश्चय करैछ जे भैंसा पागल भ' गेल अछि और ओकरा मारि दैत अछि। ''कामधेनु'' अधिक संश्लिष्ट कथा अछि। बच्चा देबासँ पहिनहि दूध देबय वाली गाय दिव्य मानल जाइछ। एहन गायकेँ देवताक गाय जकाँ ''सुरभि'' नाम द' देल जाइछ। एहन गायक स्वामी बड़ भाग्यवान मानल जाइछ। अनपढ़ मवेशी डॉक्टर नाथू एहने एकटा व्यक्ति अछि। ओ दिव्य गायक स्तुति ''सुरभि-मंगल'' गबैछ और अपन क्षेत्रक बीमार गाय सभक चिकित्सा करैछ। ओ सुरभिकेँ बड़ बेसी चाहैत अछि और जखन ओहि क्षेत्रक एक धनी महिला गायकेँ किनबाक प्रस्ताव दैत अछि तखन ओ ओकरा बेचबासँ मनाकए दैत अछि कियेक तँ नाथूक दृष्टिमे ई एक पाप थिक। मुदा ओकरा फूलमणिसँ प्रेम भ' जाइछ, जकर पति एक सै टाका और पाँच मन चाउरक लेल ओकरा हेफाजद्दी शेखक हाथेँ वेचबाक निर्णय लैत अछि। सुरभि लक्ष्मी अछि, धनक स्रोत अछि, मुदा नाथूक सुन्दरी फूलमणि उर्वशी थिक। नाथू घोर पाप करैत अछि। ओहि धनी महिलाक हाथेँ सुरभिकेँ वेचि फूलमणिकेँ कीनि लैत अछि। आब ओ फूलमणिसँ घृणा करैछ कियेक तँ ओकर सम्मोहन सुरभिकेँ बेचबाक लेल बाध्य कैलक। ओकर अज्ञानी मानसक अंध गर्त्तमे धनिक महिलाक प्रति आक्रोश बढैत अछि। यदि सुरभि नाथू लग नहि रहल, तँ ओ ओकरो लग नहि रहत। ओ सुरभिकेँ जहर द' दैत अछि। आब ओ स्वयं–निराकृत व्यक्ति अछि। ओ फूलमणिकेँ हेफाजद्दी शेखक हाथेँ बेचि दैत अछि और चमड़ा कमबै लगैत अछि। एहि प्रकारेँ ओकर अधः पतनआरम्भ भ' जाइछ। ओ गो-रक्षक आब गायक चाम कमाइछ। गामक रेवाजक अनुसारेँ, एक आदामी, जकर गाय मरि गेल अछि, नाथूक द्वारपर भीख मँगबाक लेल गाय जकाँ डिकरैत अबैछ। हठात् उन्मादमे नाथू ओहि व्यक्तिक हत्या क' दैत अछि। ओ गिरफ्तार क' लेल जाइछ और ओकरा फाँसीक दण्ड सुनायल जाइछ। आब ओकर हृदय शान्त अछि। यदि गायक अंतड़ीयोसँ ओकरा फाँसी देल जाय तँ ओकरा एहिसँ

प्रसन्नता हैत । मृत्युक प्रतीक्षा करैत ओ काठक कोइलासँ देबाल पर फूलमणिक आँखि बनबैत अछि । वैह आँखि ओकर पतनक कारण बनल छल ।

कथा सुरभिक विषयमे कम और नाथूक मानसक वक्र प्रक्रियाक विषयमे बेसी अछि । साधारण व्यक्ति और ओकर मनक कार्य-कलापक विषयमे ताराशंकरक ज्ञान आश्चर्यजनक अछि । ओ सजग शैलीकार नहि छथि । शब्द और मुहावरा सभक प्रयोग ओ स्पष्टतः असावधानीसँ कैलनि । एक भावात्मक लेखक जकाँ ओ अपन कथा कोनो तरहेँ कहैत छथि । हुनका लेल ई, एक तरहक शैली बनि गेल । ओ एहि तरहेँ लिखैत छथि जे क्रूरता, अनाशक्ति और निष्ठुरताक मिलल-जुलल अनुभव होइछ । अपन विषय सभक हुनक कलात्मक प्रतिक्रिया तत्वतः पुरुषोचित होइछ । पाठकक प्रतिक्रिया अछि जे ताराशंकर मात्र कथा प्रस्तुत नहि क' रहल छथि, अपितु ओ स्वयं अपन जीवनक अंश द' रहल छथि । अनगढ़ता, विशृंखलता और फूहड़ताकेँ साहित्यक सन्दर्भमे नहि परखल जा सकैछ । यदि हुनक लेखनमे ई सब दोष अछि, तँ ई दोष मानव-जीवनक ढाँचामे अछि । मानव-जीवन अनगढ़ता, विशृंखलता एवं अप्रिय आश्चर्य सभसँ भरल अछि । हुनक भाषा परूष, ओजस्वी और प्रायः आलंकारिकतासँ भरल अछि । यदि भाषा और शैलीक प्रति बेसी सजग कलाकार रिहतथि तँ सदिखन वैह नहि लिखितथि जे ओ देखलनि । ओ विषयकेँ अपन मस्तिष्कमे धारण करैत छलाह और ओकरा प्रस्फुटित होयबाक अवसर दैत छलाह जाहि सँ भाषा और शैलीक सूक्ष्मता उत्पन्न होइत छल । मुदा तखन ओ ओहि भावावेगकेँ सम्प्रेषित नहि क' सकैत छलाह जे हुनका विचलित करैवला वस्तु सभपर लिखबाक लेल वाध्य करैत छल ।

हुनक बेसी भाग महत्त्वपूर्ण कथा सब माटिसँ एहि तरहेँ जुड़ल अछि जे ओहि कथाक पात्र सब क्षेत्रीय नहि रहि जाइछ अवं पाठक अनुभव करैछ जे क्षेत्र और वातावरणक किंचित परिवर्तनक पश्चात् ओ ग्रामीण भारतक कोनो भागक कथा भ' सकैछ । एक साधारण मनुष्य मृत्यु सँ संघर्ष करैत और अपन वर्तमान समयकेँ सार्थक करबाक प्रयासमे आदर्शरूप बनि जाइछ । 'पौषी लक्ष्मी' (देवी लक्ष्मी, जिनक आराधना पौष मासमे कैल जाइछ) क मुकुन्द पाल वैह आदिरूपक महत्ताकेँ प्राप्त करैछ । ओ एक वृद्ध कृषक अछि आ अपन क्षेत्रमे सभसँ नीक अछि । ई सन् १९४४ ई. थिक बंगालक भयंकर चक्रवात और अकालक बादक साल । एहि साल खेत सभ धानसँ भरल अछि जकरा शीघ्रहि काटब आवश्यक अछि । दोसर विश्वयुद्ध चलि रहल अछि तैं खेतिहर मजदूर मुश्किलसँ भेटैछ और ओहि क्षेत्रक खेतिहर मजदूर सब विभिन्न युद्ध–निर्माण-कार्यमे नियुक्त भ' गेल अछि । पाकल और स्वर्णिम धान मुकुन्दक लेल लक्ष्मी अछि, सम्पत्तिक प्रतीक । मात्र पराक्रमी लक्ष्मीकेँ प्राप्त क' सकैछ । मुकुन्दकेँ अपन शक्ति क्षीणताक अनुभव होइछ । अपन समयक प्रसिद्ध फसल कटनिहार एहि यथार्थकेँ स्वीकार नहि करैछ जे ओ वृद्धक संगहि अशक्त

सेहो भ' गेल अछि । ओ ताकत जुटैबाक लेल मदिरा पान करैत अछि और पैशाचिक शक्तिसँ फसल काटि लैत अछि । जखन धानसँ लदल गाड़ीकेँ ओकर बड़द नहि उठा सकैछ तखन मुकुन्द गाड़ीक तरमे कान्ह लगा कय गाड़ी ठेलवाक प्रयास करैछ । ओहि भारसँ दबि कयओ मरि जाइत अछि–धानक शीशकेँ पकड़ ने और स्वर्णिम खेतक अन्तिम दर्शन करैत; ओ लक्ष्मी केँ नहि जीति सकल ।

''इमारत'' क जनाब अली, ग्रामक प्रमुख राजमिस्त्री, एकटा और आदर्श पात्र अछि । जीवन–भरि ओ शानदार मकान और भव्य मस्जिद सभक निर्माण कैलक एवं अपन दक्ष–कार्यपर ओकरा अभिमान छल । वृद्धावस्थामे ओ कंगाल भ' जइछ और एकटा वटवृक्षक तरमे रहैछ । जाहि ठाम ओ बैसल अछि और मृत्युक प्रतीक्षा क' रहल अछि । आब ओ अपनाकेँ परमस्रष्टा ईश्वरक बेसी निकट अनुभव करैछ । उज्जर मेघ ओकर बनायल कोनो–गिरजाघरसँ बेसी सुन्दर अछि । सघन पातवला वृक्षक गोल गुम्बद ईश्वरक बनायल ''इमारत'' छैक । जखन ओ ईश्वरक आगाँ आत्म-समर्पणक' दैत अछि, ओकर हृदयकेँ शान्ति भेटैछ । एहि कथामे ताराशंकर भाग्यवादी भारतक स्पर्श कैने छथि । जे व्यक्ति जीवन भरि दोसराक लेल घर वनवैत रहल, ओकरा समाज शरण नहि दैत अछि, और ओकरा शरण भेटैछ एकटा वृक्षक तरमे, जकर रचयिता धर्मानुसार ईश्वर छथि ।

हुनक ग्रामीण-पात्र सभ प्रश्नकर्त्ता अथवा विद्रोही नहि अछि । अधिकांशतः ओ सभ स्वीकृत व्यवस्थामे जीबैत और काज करैत अछि । मुदा ओकरा सभमे दुर्लभ मानवीय गुण अछि आ तेँ ओ सभ महान अछि । ई ओ लोक सभ अछि जकरा ताराशंकर जनैत छलाह और ओ तेँ ओकरा सभक महानता दिस बारम्बार हमरा लोकनिक ध्यान आकृष्ट करैत छथि । ''डाक हरकारा'' कथाक नायक दीनू एकटा एहने पात्र अछि । ओ डाक विभागक एक ईमानदार कर्मचारीक रूपमे पन्द्रहटाका मास पर डाकक थैला रेलवे स्टेशन पहुँचबैत अछि । जखन ओकर बेटा निताई रूपैयावला डाकक थैला लुटबाक प्रयास करैछ, दीनू ओकरा चीन्ह लेत अछि और पुलिस केँ कहि दैत अछि । एहि दुर्लभ ईमानदारीपर ओकरा तीन सै टाकाक पुरस्कार देल जाइछ । ओकर बेटा भागि जाइछ । ओकर पत्नी और ग्रामवासी एहि निर्मम काजक लेल ओकर निन्दा करैछ । दीनू एकाकी रहि जाइछ । बहुत दिनक पश्चात् ओकरा ज्ञात होइछ जे निताई अपन पथ सुधारि लेने छल और एक उत्तम उद्देश्यक लेल अपन प्राण द' देलक । निताईकेँ पुरस्कारमे देल गेल स्वर्ण पदक दीनूकेँ देल जायत । आब दीनू अपन नौकरीसँ त्यागपत्र द' दैत अछि । अखन धरि ओ लोक सभकेँ संदेश पहुँचबैत छल आर आब ओकरा अपन संदेश भेटैछ । कोनो तरहेँ दीनूक अशक्त चेतनामे एकटा भाव जगैत अछि जे ओकर भाग्यक चक्र समाप्त भ' गेल अछि । एक गरीब और ईमानदार व्यक्तिक विवेक और अपन पुत्र स्नेहक मध्य संघर्षमे अन्ततः पैतृक स्नेहपर विवेकक विजय दीनूक चरित्रकेँ महान बना दैत अछि । एतहि कथाकारक

रूपमे ताराशंकरक महानता दृष्टिगोचर होइछ । ओ एक साधारण व्यक्तिकेँ लैत छथि और ओकर गहनतामे प्रवेशक' एवं ओकर समस्त सम्भावना सभक संधान क' ओहि पात्रकेँ एक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक आयाम दैत छथि । जनाब अली, मुकुन्द पाल और दीनू ई सब एही श्रेणीमे अबैछ ।

बंगला साहित्य कथाक दृष्टिसँ बड़ सम्पन्न अछि । कथाक क्षेत्रमे पर्याप्त प्रयोग कैल गेल अछि । ताराशंकरक कथा सभमे पारासन दुर्ग्राह्य विशेषताक कमी अछि जे प्रेमेन्द्र मित्र नाटकीयताक किंचित बलसँ प्राप्त कैलनि, अथवा माणिक बनर्जीक गम्भीर एवं तीक्ष्ण जटिलता, अथवा अचिंत्यकुमार सेनगुप्ताक तीक्ष्ण कौशलमे अछि । अखन धरि ओ पैघ कथाकार बनल छथि । ई महानता ओ कोना प्राप्त कैलनि ? हुनक उपलब्धि एहि यथार्थपर अवस्थित अछि जे जीवनक बहुविधि ऐश्वर्य हुनका एतेक मस्तक' दैत अछि जे ओ अपन लेखनसँ प्रत्यक्ष रूपेँ जुड़ि जाइत छथि । गम्भीर अवचेतनक जटिलता, मनोवैज्ञानिक विकृति, समाजक अव्यवस्थामे फँसल दुर्बल मनक वक्र प्रक्रियामे हुनका कोनो रूचि नहि छल । साधारण मनुष्यक प्रति हुनक चिर स्थायी रुचि बनल रहैछ । उपेक्षित शिल्पसँ ओ जे किछु प्राप्त नहि क' सकलाह ओकरा अतिनाटकीयता और मौलिक भावप्रवणताक ओकर शुद्ध रूपमे प्रस्तुत कए प्राप्त कैलनि । ओ सहजहि पाठकक हृदय मे प्रवेश कए गेलाह । हुनक कथा सभमे साधारण मनुष्य अपनाकेँ चीन्हि सकैछ ।

अध्याय ६

''चैताली घुरनी'', ''पाषाणपुरी'', ''नीलकण्ठ'' (शिवक नाम, समुद्रसँ प्राप्त विषक पान करबाक पश्चात् हुनक कण्ठ नील भ' गेल छलनि) और ''मन्वन्तर'' (अकाल) कैँ उथल-पुथलक उपन्यास कहल जा सकैछ। उथल-पुथल और संघर्षक प्रसंग आन उपन्यास सभमे सेहो उपलब्ध अछि मुदा एहि चारूक विशेष उल्लेख आवश्यक अछि।

''चैताली घुरनी'' समृद्ध समाजक बीच फँसल साधारण मनुष्यक दुर्दशाक विषयमे अछि। पुस्तकक आरम्भ ग्रामक अकालक सजीव चित्रणसँ होइछ। चैत (पन्द्रह मार्चसँ चौदह अप्रील धरि) बंगाली सालक अन्तिम मास होइछ। एहि मासमे ''काल बैशाखी'' (आन्ही) सूखल पात कैँ उड़ा ल' जाइछ और बंगाली नव-वर्षक घोषणा करैछ। अकालक चलते लोक सभ भूखसँ मरि रहल अछि। सियार और गीध मुर्दाक हड्डी नोचि रहल अछि। मदतिक लेल क्यो नहि अबैछ तथापि लोक भगवानसँ दयाक विनती करैछ। सम्पूर्ण ग्राम श्मशान-भूमि बनि जाइत अछि। एकटा निर्धन कृषक गोष्ठा अपन पुत्रक मृत्युक पश्चात् अपन स्त्री दामिनीक संग गाम छोड़ि दैत अछि कियैक तँ ओ ने तँ जमींदारक कर्ज चुका सकैत अछि आ ने अफगानी सूदखोरक। ओ एक शहर जाइछ और एकटा छोट सन कारखानामे काज आरम्भ करैछ। एतहु ओ देखैत अछि जे लोक निष्ठुर और गरीबक प्रति निर्मम अछि। एक व्यक्तिकैँ पचास सँ साठि पाइक लेल दिनमे आठ घंटा काज करै पड़ैत अछि। गन्दगीसँ भड़ल जाहि बस्ती मे ओ रहैत अछि, ओ ''समाजक कूड़ादान थिक, धनी वर्गक कूड़ा-पेटी''। सामर्थ्यवानक लेल स्त्रीक सम्मान कोनो अर्थ नहि रखैछ। छोटू मिस्त्री दामिनीक लोभक पाछाँ पड़ल अछि। जखन राजनैतिक कार्यकर्त्ता मजदूर सभकैँ बिना पर्याप्त वेतनक अतिरिक्त काज (ओवर टाइम) करैसँ मना करैत अछि तखन हड़ताल भ' जाइछ और कारखाना बन्द भ' जाइछ। भूखमरीक क्रम आरम्भ भ' जाइछ। मजदूर कारखानाक मालिक लग जा कए पुनः काजक लेल प्रार्थना करैछ। हड़ताल समर्थक ओकरा सभसँ लड़ैत अछि। हाथापाईमे छोटू मिस्त्री क्रोधोन्मादमे गोष्ठाक हत्या कए दैत अछि। उपन्यास राजनैतिक कार्यकर्त्ताक एहि शब्द सँ समाप्त होइछ, ''चैतक आन्ही किछु नहि अछि। ई प्रचण्ड आन्हीक पूर्व घोषणा अछि।''

एहि सजीव और हृदयस्पर्शी लघु उपन्यासक रचनाक आरम्भ कारावास मे भेल छल और सुभाषचन्द्रकेँ समर्पित छल । एहिमे नवीनता अछि । ताराशंकरक विशेष कमीक उपरान्तो ई ओहि समयक प्रलेखनक दृष्टिसँ सफल अछि, जकर आरम्भ ताराशंकरक समयसँ पहिनहि भेल छल और हमरा सभक समय धरि चलैत रहल । आइयो धरि एहि पुस्तकक किछुओ अप्रासंगिक नहि भेल अछि । अखनहुँ हमरा सभक चारू दिस गरीब कृषक सभ महाजन और धनी भूस्वामी सभक हाथे अपन जमीन गमा रहल अछि । ओकरा सभकेँ प्रत्येक वर्ष जबरदस्ती अपन वासभूमि छोड़ि काजक खोजमे औद्योगिक क्षेत्रमे बसे पड़ैत छैक । घोर अन्याय अक्षुण्ण रूपसँ भ' रहल अछि और ने तँ गरीब कृषक सभकेँ आ ने अप्रशिक्षित मजदूर सभकेँ कानून सँ कोनो संरक्षण भेटैछ । दस्तावेजी स्वरूपक कारणेँ ई पुस्तक बहुमूल्य अछि । एकर संरचना परवर्ती उपन्यास सभसँ बेसी गठल अछि और परवर्ती लेखनमे प्राप्त पुनरावृत्ति और अतिरंजना एहिमे कम अछि ।

''पाषाणपुरी'' स्थूल, संरचनाक दृष्टिसँ कमजोर और असंगत अछि । अपन बन्दीगृहक अनुभवक उपरान्तो ताराशंकर जेल जीवनक कमजोर पक्षपर कम बल्कि दण्डित कैदी काली कर्मकारपर बेसी लिखलनि जकरा हत्या और अगिलग्गीक लेल फाँसी देल जाइत । लेखनक प्रथम चरणहिसँ हुनका नाटकीयता और विकृति आकृष्ट कैने छल । जेल-जीवनक विषयमे ओ लिखलनि, ''कानूनक अनुसारेँ शासक अपराधीक अपराध मूल प्रवृत्तिकेँ जंजीरसँ बान्हि और पाथरक देवालमे बन्दी बना क' समाप्त करबाक प्रयास करैछ–व्यक्तिमे निहित अपराधी नहि मरैछ–भयभीत साँप जकाँ ओ मानव-मनक गहनतामे नुका जाइछ–बीलमे नुकैल आहत साँप जकाँ ओ क्रोधमे फुफकारैत अछि । आइयो मनुष्य विषकेँ अमृतमे परिवर्तित करब नहि सिखलक ।–तेँ एक दण्डित चोर जेलक सजाय काटबाक पश्चात् कठोर अपराधी बनि जाइत अछि ।'' साँप, अमृत, विष–ताराशंकरक प्रिय शब्द-बिम्ब एहि ठाम अछि । राजनैतिक कैदीक वर्णन करैत प्रसंगतः ओ सोझे काली कर्मकारकक जीवन-गाथाक वर्णन करै लगेत छथि जे कामवासनामे हत्या कैने छल और जकरा ताराशंकर जिला-अदालतमे देखने छलाह ।

''नीलकण्ठ'', ''पाषाणपुरी'' सँ बेसी स्थूल और उपकथात्मक अछि । ई एक गरीब कृषक श्रीमंत और ओकर पत्नी गिरीक विषयमे लिखल गेल एकटा लघु उपन्यास अछि, जकर जीवन श्रीमंतक सम्बन्धी हरिलालक योजनासँ नष्ट भ' जाइछ । हरिलाल अपन बेटी गौरीक लेल एहि निःसन्तान दम्पतिक प्रेमक अनुचित लाभ उठबैत अछि और श्रीमंतकेँ अपन एकमात्र खेत बेचबाक लेल बाध्य करैत अछि जाहिसँ गौरीक विवाह एक नीक लड़कासँ भ' सकै । हरिलाल एक अयोग्य व्यक्तिसँ अपन बेटीक विवाह क' दैत अछि । श्रीमंत हरिलालपर प्रहार करैत अछि जाहिसँ ओ बन्दी भ' जाइछ । गिरी एकाकी रहि जाइछ और ओ गर्भवती अछि । जखन ग्रामीणकेँ श्रीमंतक प्रति ओकर एकनिष्ठतापर संदेह होइछ,

गिरी गाममे आगि लगा क' भागि जाइछ। ओ शहरक अस्पतालमे एक पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। एकर नाम नीलकण्ठ राखल जाइछ। गिरी आत्महत्या क' लैत अछि। नीलकण्ठ पैघ भ' जाइछ और प्रायः अपन पैतृक ग्राममे फल–संग्रह करबाक लेल अबैत अछि, जकरा ओ शहरमे बेचैत अछि। ओ गामसँ जुड़ल अपन सम्बन्धसँ अनभिज्ञ अछि। जेलक अपन सजायकाटि श्रीमंत गाम अबैछ। ओकरा ई लड़का भेटैत अछि और बिना जान–पहचानक ओ एकरा संग गाम छोड़ि चलि जाइत अछि। उपन्यास कमजोर और कल्पना प्रधान अछि। एकर कोनो पात्र विश्वासोत्पादक नहि अछि। ओ एकर वर्णन नहि करैत छथि जे नीलकण्ठ सन अनाथ बालक कोना पैघ भेल। एकर नामकरण सेहो मिथ्या अछि किये क तँ कथाक घटना सभक प्रतिपादनमे नीलकण्ठक भूमिका बड़ कम अछि।

अपन यथार्थता और दस्तावेजी गुणक चलते "मन्वन्तर" अखनहुँ मूल्यवान अछि। एहि पुस्तकक प्रकाशन सन् १९४४ ई. मे भेल छल। जापानी हवाई आक्रमणक चलते कलकत्तामे पसरल आतंक, कलकत्तामे अकाल-पीड़ित सभक बाढ़ि, आवश्यक उपयोगी वस्तु और खाद्यक अभावक कारणेँ गरीब और निम्न मध्यवर्गक अकथनीय दुर्दशा, महात्मा गाँधीक २१ दिनक उपासपर राष्ट्रव्यापी चिन्ता, एहि तरहक अनेको तत्कालीन घटना सभकेँ एहिमे लिपिबद्ध कैल गेल अछि।

उपन्यासक नायक कनाई भूतपूर्व धनी सुखमय चक्रवर्तीक वंशज अछि। आब चक्रवर्तीक घर तबाहीमे अछि। घरक सदस्य सब पूर्ण बदनामी भोगि रहल अछि। कनाईकेँ नीलासँ प्रेम अछि, मुदा ओ ओकरासँ विवाह करै सँ डेराइत अछि, किये क तँ ओकरा ई लगैत अछि जे ओकर रक्त दूषित अछि और विवाहक पश्चात् ओ घरक आन सदस्य सभ जकाँ रोगग्रस्त भ' जायत। सामंती चक्रवर्ती परिवार एहि लेल निराकृत अछि, यथार्थ केँ अस्वीकार करैत अछि और समयक संग आगाँ बढ़ब छोड़ि देने अछि। परिवारक एक युवा सदस्य घरमे नग्न रहैत अछि। ओकर माता-पिता ओकरा पवित्र मानैत अछि। स्त्रीगण चोरी करैत अछि, आदमी भ्रष्ट अछि। घरमे मात्र कनाईक माय अपवाद अछि।

अकाल पीड़ित और मिदनापुरक बाढ़िक लेल कनाई, नीला और नीला क भाय नेपी राहत कार्य करैत अछि। पश्चिम बंगालक दक्षिणी-पश्चिमी जिला मिदनापुर दुतरफा आघात भोगि रहल अछि। सन् १९४२ ई.क पश्चात् दू वर्षसँ ओहि ठाम पुलिस-अत्याचार भ' रहल छल। चक्रवात फसिलकेँ बर्बाद क' देने छल। कनाईक घरक वातावरण उबाऊ अछि। नीलाक संग काज करैत ओकरा किछु राहतक अनुभव होइछ।

युद्ध विभिन्न परिवारकेँ विभिन्न तरहेँ अपंग और प्रभावित कैलक। कनाईक पड़ोसीक बेटी गीताकेँ स्वयं ओकर पिता दलाली करैवाली स्त्री लग पठा दैत अछि, किये क तँ युद्ध लोक सभकेँ सम्पन्न बना देने अछि और अविवाहित कन्या सभक बड़ माँग अछि। गीताकेँ एक धनी आदमीक हाथेँ बेचि देल जाइत अछि और तत्पश्चात् ओ ओकर

बलात्कार करैत अछि। ओ सुरक्षाक लेल रास्तापर निकलि अबैत अछि। कनाईकेँ ओ सड़कपर भेटैछ एवं ओ ओकरा विजय दा–एक पत्रकार और कम्युनिस्टक लग ल' जाइत अछि। युद्ध एक नव पीढ़ीकेँ जन्म दैत अछि और माता-पिताक मध्य विराग उत्पन्न भ' गेल अछि। कनाई घर त्यागि दैत अछि जखन ओकरा ज्ञात होइछ जे ओकर पिता मेहनतक कमाइ शराबमे उड़ा दैत अछि। नीलाक पिताकेँ अपन पराजयक अनुभव होइत अछि, कियेक तँ नीला अपन परिवारक प्रमुख जीविका–अर्जित कयनिहार अछि और बेटीसँ पाइ लेब हुनक सिद्धांतक विरूद्ध अछि। नीला सेहो घर त्यागि दैत अछि। हालहि वैध संगठन घोषित कम्युनिस्ट पार्टीमे नेपी सम्मिलित भ' जाइत अछि। परिवार बिखरि जाइत अछि। कलकत्तापर बमबारी होइत अछि। चक्रवर्तीक पुरान घर नष्ट भ' जाइछ और अनेक सदस्यक मृत्यु भ' जाइछ। गीताक पिता घर छोड़ि दैत अछि और ओकर माय रस्तापर भीख माँगय लगैत अछि। कनाई अपन रक्तक जाँच करबैत अछि। ओकर रक्त विकार रहित छल। ओ और नीला विवाह क' लेत अछि। पत्रकार वियज दा अपन पत्रक लेल एकटा लेख लिखैत अछि जाहिमे ओ युद्धक समर्थन करैत अछि। ई युद्ध सब युद्धकेँ समाप्त क' देत और गाँधीजीक आदर्श भारतकेँ एक गौरवमय भविष्य देत। भावी समाज समानतापर आधारित हैत।

ताराशंकर अत्यन्त सामयिक विषय चुनलनि जे हुनक लेखकीय विवेकक प्रतिवद्धताक प्रमाण थिक। आलोचक लोकनिक कहब छन्हि जे ताराशंकर पत्रकारिताक लेल साहित्यक बलि चढ़ा देलनि। मुदा, आजुक पाठकक लेल, ई पुस्तक अति गम्भीर रूचिक अछि। सरोजकुमार रायचौधुरीक ''कालोघोड़ा'' (कारी घोड़ा) क अतिरिक्त आन कोनहुँ बंगला उपन्यासमे, युद्धक विभीषिकाक एतेक निष्ठासँ चित्रण नहि भेल अछि, यद्यपि प्रख्यात कथाकार लोकनि युद्धपर किछु स्मरणीय कथा सभ लिखने छथि। मुदा कथे सभ किये ? ई विषय कि एतेक प्रेरक नहि छल जे लेखक बंगालक तत्कालीन यंत्रणाक अनुभव करितथि ? मात्र ताराशंकर एकरा एक अत्यावश्यक और तात्कालिक विषय मानलनि और मात्र उपन्यासे ओहि विभिन्न समस्या सभकेँ समेटि सकैत छल। ताराशंकर एकमात्र लेखक छथि जे यद्यपि कम्युनिस्ट नहि छलाह, तथापि ई अनुभव करैत छलाह जे कम्युनिस्ट पार्टीकेँ नष्ट नहि कैल जा सकैछ कियेक तँ शिक्षित युवावर्ग और पुरान राजनैतिक कार्यकर्त्तापर ओकर बड़ बेसी प्रभाव अछि। निन्दा करबाक लेल बहुत किछु छल मुदा ओहि क्षण अकाल–राहतक लेल कम्युनिस्ट एहि तरहेँ संगठित भए कार्य क' रहल छल जे प्रत्येक दिशासँ ओकरा प्रशंसा भेटल। एकर अतिरिक्त, प्रगतिवादी लेखक एवं कलाकार लोकनि पार्टीक प्रभावमे आबि रहल छल। ताराशंकर यथार्थतः अपन उपन्यासमे एहि यथार्थक समावेश कैलनि। उपन्यासक दृष्टिसँ ''मन्वन्तर'' सुगठित नहि अछि। पुस्तकक सबसँ उल्लेख्य कथांश चक्रवर्ती-परिवारक विषयमे अछि। नीला एकटा कम्युनिस्टक अति

विश्वसनीय रूप चित्र नहि अछि। विजय दा समर्पित, शान्त अछि और ताराशंकर द्वारा सृजित चरित्रक स्मरण करबैत अछि। एहि पुस्तकमे ओ पुरान साहित्यिक शैलीक वर्णनात्मक प्रयोगक स्थानपर संवादात्मक शैली दिस प्रस्थान करैत छथि।

जेना कि पहिनहि कहल गेल अछि, ई पुस्तक अपन सामाजिक प्रलेखनक कारणेँ आजुक पाठकक लेल रूचिकर हैत। ई स्मरण राखब आवश्यक अछि जे अकालमे दस लाख लोकक जान गेल और कारी धनसँ भरल–पूरल कलकत्ताक सड़कपर हजारों लोक मरि गेल, मुदा ने तँ कोनो सिनेमाघर बन्द भेल आ ने मद्यशालाक उच्छृंखल आमोद-प्रमोद रूकल। परिवारकेँ जीवित रखबाक लेल किशोरी वेश्यावृत्तिक लेल बाध्य भ' रहल छल। मिदनापुरक चक्रवातमे हजारों जान गेल। पुस्तकमे उद्धृत एक सरकारी रिर्पोटक अनुसार दूटा गामक दू सै छियासी लोक सभमे सँ मात्र पाँच टा जीवित बाँचल छल।

अध्याय ७

''धातृदेवता'' १९३९ ई. मे प्रकाशित भेल छल। ताराशंकर तुनुकमिजाज लेखक छलाह और हुनका अपन पुस्तककेँ पुनः लिखबाक, परिवर्तन करबाक अभ्यास छलनि मुदा ओ ''धातृदेवता'' केँ ने तँ दोहरा क'लिखलनि वा ने कोनो परिवर्तन कैलनि। ई पुस्तक अर्धआत्मकथात्मक अछि और एहिमे उपन्यासकारक रूपमे ताराशंकरक परिचित विशिष्टता बीज रूपमे विद्यमान अछि। छोट जमींदार सभक समस्या, व्यापारी वर्गक उदय, भूमि सम्बन्धी समस्या, साधारण लोक सभक संघर्ष, प्रभावशाली व्यक्तित्वक स्त्री एवं पुरुष, दयालु जमींदार, संन्यासी, विरोधी विचार वला राजनैतिक कार्यकर्त्ता, अनावृष्टि, हैजा, अकाल–सभ किछु एहि उपन्यासमे अछि। उपन्यासक संरचना साफ-सुथरा और मिश्रित अछि। ई हुनक महाकाव्यात्मक उपन्यास लिखबाक प्रथम प्रयास अछि। एक महाकाव्यात्मक उपन्यास देश और कालकेँ अपन सम्पूर्णतामे प्रतिबिम्बित करैत अछि। एकरा लेल विषयगत निष्ठा और तटस्थता आवश्यक अछि। परवर्ती तीनू महाकाव्यात्मक उपन्यास, ''गणदेवता'', ''पंचग्राम'' और ''हाँसुली बाँकेर उपकथा'' जे ताराशंकर लिखलनि, ''धातृदेवता'' ओहि सभक उपक्रम मात्र छल। ई सभ उपन्यास महाकाव्यात्मक अछि। यद्यपि ओ अपन समयक गप्प कहैत छथि, तथापि ओ देश और जनता, भूत और वर्तमानक एतेक पैघ चित्र प्रस्तुत करैत छथि जे ई उपन्यास समसामयिक सीमा नाँघि सम्पूर्ण देश और समग्र जनताक प्रतिनिधि भ' जाइछ।

शिवनाथ ''धातृदेवता'' क नायक अछि। ओ एकटा छोट जमींदारक एकमात्र पुत्र अछि और ओकर पिताक मृत्यु ओकर बाल्यकालहिमे भ' गेल छल। दूटा असाधारण महिला, एकर माय आ काकी एकर पालन-पोषण करैत छथि। एकर माय स्नेहमयी, सहनशील, शान्त और अनुशासन प्रिय अछि। एकर काकी स्नेहमयी, घमंडी, दबंग और अधीर अछि। शिवनाथक लेले ओकरा स्वत्वात्मक वात्सल्य अछि। ओकरे आग्रह पर शिवनाथक विवाह स्कूलक पढाइ समाप्त करैसँ पहिनहि एक सम्पन्न व्यक्तिक भतीजी गौरीसँ होइत अछि। गाममे हैजाक महामारीसँ संघर्ष करैत ओकर भेँट सुशील और पूर्ण नामक दूटा राजनैतिक कार्यकर्त्तासँ होइत अछि जे भविष्यक सामग्रीक रूपमे आतंकवादी

विचार सभ दिस ओकर मनकेँ परिवर्तित करबाक विचार बना लैत अछि। गौरीक प्रति ओकर प्रेम ओकर काकीकेँ बर्दाश्त नहि होइछ और अंततः गौरीक पित्ती ओकरा कलकत्ता ल' जाइछ जतय ओ एकटा पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। शिवनाथ कॉलेजमे पढ़वाक लेल कलकत्ता अबैत अछि जाहिठाम सुशील और पूर्ण ओकरा अपन काज दिस आकर्षित करैत अछि। शिवनाथकेँ ओहि समय गम्भीर आघात पहुँचल जखन पूर्ण पार्टीक आदेशपर एक पुरान आतंकवादीक हत्या क' दैत अछि जे गाँधीजीक अहिंसक विचार सभक समर्थक भ' गेल छल और अपन हथियार नष्ट क' देने छल। एहि बीच शिवनाथक मायक मृत्यु भ' जाइछ और काकी बनारस चलि जाइछ जाहि सँ कि शिवनाथ और गौरीक एक दोसरासँ मेल–मिलाप भ' सकय। शिवनाथ अपन जमींदारीक एकटा दूरस्थ गाममे जाइत अछि जतय ओ गरीब ग्रामीण सभक कल्याणक लेल काज करैत अछि। असहयोग आन्दोलनक क्रममे शिवनाथ अपन गिरफ्तारी दैत अछि। गौरी और ओकर काकी, जकरामे मेल भ' गेल छल, ओकरासँ भेँट करै जाइत अछि। शिवनाथ दुनू केँ एक संग देखि प्रसन्न होइत अछि और काकीसँ कहैत अछि जे ओकर पुत्र केँ ओहने स्नेह देथि जे कहियो शिवनाथकेँ देने छलीह।

उपन्यासमे ताराशंकर अपन पीसीक मृत्युकेँ ''हमर धातृदेवताक मृत्यु'' कहैत छथि। एहि पुस्तकमे शिवनाथक काकी एकमात्र प्रेरणास्रोत नहि अछि। ओकर माताक भूमिका वेसी महत्त्वपूर्ण अछि। ओ ओकरा देश और लोक सभसँ प्रेम करवाक शिक्षा देलनि। शिवनाथक चरित्रक विकास सुसंगत ढंगसँ होइछ। विभिन्न प्रभाव वला विभिन्न व्यक्ति सभक सम्पर्कमे आबि ओकर चरित्रक विकास होइत अछि। ओकर माता और काकी, गोसाँई बाबा, एक संन्यासी, सुशील, वृद्ध क्रांतिकारी ई सभ ओकर चरित्रक निर्माणमे सहायक होइत अछि। गौरी ओकरा प्रभावित करबामे असफल रहलीह, कारण, ओ एहन पृष्ठभूमिसँ आयल छलीह जाहिठाम एकमात्र पाइयेसँ प्रतिष्ठा भेटैछ। आगाँ चलि गौरीक असंदिग्ध प्रेमक रूपान्तरणक चित्रण बहुत दृढ़ताक संग नहि भेल अछि। भारतमे आतंकवादी सभक विफलताक पश्चात् भगोड़ा और फरारी सुशील केँ शिवनाथक मदतिसँ ई स्पष्ट होइछ जे ताराशंकरकेँ भारतक आतंकवादी सभक विषयमे कतेक जानकारी छलनि। ओ ओकरा सभक विचार कखनो नहि मानलनि, मुदा देशक लेल जान देनिहार आत्मसमर्पित नवयुवक सभक लेल हुनक हार्दिक सहानुभूति रहल और जखन ओकरा सभक हिंसक उपाय विफल भ' गेल तखन क्रांतिकारी सभ रूस, जर्मनी, अमेरिका और आन यूरोपीय देश सभमे भारतक स्वतन्त्रताक लेल काज करवाक केन्द्र बनैवाक लेल फरार भ' गेल। शिवनाथ सुशीलसँ कहैत अछि, ''तैंतीस करोड़ लोकक स्वतन्त्रताक लेल छियासठ करोड़ हाथकेँ उठायब हमर स्वप्न अछि। एक जनक्रांति।'' सुशील शिवनाथक उपाय सँ सहमत नहि होइछ तथापि ओकरा मनमे शिवनाथक लेल सम्मान अछि।

उपन्यासक गठन बड़ नीक अछि, गौरीक अतिरिक्त आन सब चरित्रक विकास तर्क संगत अछि। कथानकक निर्माणक क्रममे अकस्मात् कोनो प्रकारक आश्चर्य नहि अछि। अकाल और महामारीक चित्रण सजीव और विवश क' देबयवला अछि। भाषा सरल और समृद्ध अछि।

''गणदेवता'' और ''पंचग्राम'' मिलि क' पाँचटा गामक कथा पूरा करैत अछि–महाग्राम, देखुरिया, शिवकालीपुर, कुसुमपुर और कंकना। ई दुनू पुस्तक गामक ओहि पंचायत-व्यवस्थाक सजीव चित्रण करैत अछि जे प्राचीन कालसँ एहि उपन्यासक युग धरि चलैत आबि रहल छल और आब शनैः-शनैः टूटि रहल छल। एहि उपन्यासक विषय पुरान सँ नव व्यवस्थामे परिवर्तन अछि और ई ग्राम–जीवनक एकटा पैघ परिदृश्यक प्रतिपादन करैत अछि।

पुरातन और मध्यकालमे बंगालमे गाम नौ, पाँच, तीन अथवा सातक समूहमे आवद्ध होइत छल और प्रत्येक समूह जनताक सहमतिसँ बनायल गेल ग्राम-प्रशासन समाजक माध्यमे चलाओल जाइत छल। नवग्राम, पंचग्राम, सप्तग्राम–एहि प्रकारक नाम एकरे सँ उद्भूत भेल अछि। वास्तव मे ई ग्राम-समाज, ग्राम–प्रशासन एतेक नीक जकाँ चलैत छल जे सुदूरवर्ती राजधानी सभक शासक लोकनिकेँ विशेष चिन्ता नहि करय पड़ैत छलनि। ग्राम समाजक आदेश सभक पालन कठोर रूपेँ कैल जाइत छल।

''गणदेवता'' क आरम्भ ग्राम समाजक अकुताहटि और चिढ़सँ होइत अछि कारण जे गामक लोहार अनिरूद्ध ग्रामीण सभक लेल काज करै सँ मना क' दैत अछि किये तँ आब ग्रामीण ओकर आवश्यकता भरि पर्याप्त धान ओकरा नहि द' सकैत अछि और पुरान प्रथाक अनुसार लोहार, नौआ, कमार और मोची, सभकेँ ग्रामीण सभक सेवाक वदला मे धान देल जाइत अछि। अनिरूद्ध कतहु आन ठाम जा क' काज करै और कमाय चाहैत अछि। ग्राम समाजसँ दण्डित होयबाक उपरान्त अनिरूद्ध ओहि संस्थाक आदेश सभक पालन करै सँ मना क' दैत अछि जे मात्र गरीब सभकेँ दबबैत अछि और गामक सबसँ धनी व्यक्ति श्रीहरिपाल जखन समाजक अवज्ञा करैत अछि तँ ओकर विरोधमे बजबाक साहस नहि करैत अछि। श्रीहरि हठी, कामुक और तानाशाह अछि। ओ अनिरूद्धक निःसन्तान पत्नी पद्माक पाछाँ लालायित छल। ओकर रखैल दुर्गा बावरी जातिक अछि। बावरी सभ गरीब और मेहनती होइत अछि। ओकरा सभक स्त्री उच्चवर्गक ग्रामीण सभक यौन आवश्यकताक पूर्त्तिक व्यवस्था करैत अछि। ई एक पूर्णरूपेण स्वीकृत व्यवस्था अछि। दुर्गाक मनमे गामक प्राथमिक शिक्षक देबू घोषक लेल अटूट निष्ठा अछि। सभसँ ओकरा प्रेम और आदर भेटैत अछि। गरीब कृषकक जमीन हड़पि क' श्रीहरि जमींदार बनबाक और उच्च वर्गमे स्थान पैबाक उद्देश्य रखैत अछि। ओ देबूसँ जे कि एक प्रकारेँ लोकनायक अछि, डेराइत अछि। जखन ओ देबूकेँ एकटा फूसि दोषारोपनमे गिरफ्तार

करा दैत अछि तखन ग्रामीणसँ आरो दूर भ' जाइत अछि कियेक तँ ओ सब देबूसँ स्नेह करैत अछि। ओ पुनः देबूकेँ गठित दोषारोपमे फँसबे चाहैत अछि मुदा अनिरूद्ध ओ दोष अपना ऊपर ल'लैत अछि आ गिरफ्तार भ' जाइत अछि। श्रीहरिक पद्मापर अधिकार करबाक प्रयास देबूक माध्यमसँ विफल क' देल जाइत अछि कियेक तँ ओ एक नजरबन्द कैदी जतीनक घरमे पद्माक रहबाक व्यवस्था क' दैत अछि। हैजाक महामारीमे देबू कठोर परिश्रम करैत अछि मुदा ओकर पत्नी और पुत्र मरि जाइत अछि। ओ शोकातुर अछि। ग्राम समाज ओकर आँखिक समक्ष विघटित भ' जाइत अछि। श्रीहरि कृषक सभकेँ कीनि क' जमींदार बनि जाइत अछि। देबूक मित्र और सहायक जतीनकेँ पुलिस ल' जाइत अछि। मुक्त होयबाक पश्चात् अनिरूद्ध गाम छोड़ि दैत अछि। अपन चरम निराशामे ओकरा महाग्रामक ग्राम-समाजक प्रधान तथा एक विद्वान और सनातनी ब्राह्मण शिवशेखरेश्वर न्यायरत्नसँ सांत्वना भेटैत अछि। भूमिहीन कृषक लगक शहरमे जतय रेलवे यार्ड और कारखाना अछि, विस्थापित भ'क' बसै लगैत अछि कियेक तँ ओ सभ सोचैत अछि जे एक बेर ओहि ठाम चलि जाय तँ भूखल नहि मरब। ई शहर आधुनिक युगमे पहुंचि गेल अछि। पाँचो गाम अखनहु पुरान दिन सभक छायामे आवद्ध अछि।

"पंचग्राम" क प्रारम्भ जमींदार सभक कृषक सभसँ बेसी मालगुजारी पैबाक विषयपर एकजुट होयबासँ होइत अछि कियैक तँ राजस्व-समझौताक अनुसारेँ खेतीक उपजाक मूल्य पछिला एक सौ सालमे बढ़ि गेल अछि मुदा कृषक अखनहु वैह पुरान दर द' रहल अछि। कृषक संगठित भ' गेल अछि कियेक तँ यदि खेतीक उपजा बेसी मूल्य अनैत अछि तँ निर्वाह व्यय सेहो बढ़ि गेल अछि और जाहि तरहेँ होय जमींदार सरकारकेँ पुरनके दर द' रहल अछि। ओ सभ महाग्रामक शिवशेखरक घर पर मिलैत अछि। देबू ओकरा सभकेँ कर भुगतान करबाक लेल कहैत अछि कियेक तँ कानून जमींदार सभक पक्ष लेत। शिवशेखरक पौत्र कृषक सभसँ संगठित रहबाक लेल कहैत अछि जाहिसँ सरकारपर कानून बदलबाक लेल दवाब देल जा सकै। ओकर विचार शिवशेखर आर देबूकेँ भयभीत क' दैत अछि। ओ ब्राह्मण सभक वर्चस्वकेँ अस्वीकार करैत अछि और रूढ़ि सभक अवज्ञा करैत अछि, जे कि शिवशेखरक लेल अक्षम्य पाप थिक, शिवशेखरक अपन पुत्र,विश्वनाथक पितासँ अंगरेजी सिखबाक प्रश्नपर एहन मतभेद छल जे ओ आत्महत्या क' लेने छल।

मुस्लिम बहुल गाम कुसुमपुरमे चमड़ाक व्यापारी दौलत शेख सभसँ प्रभावशाली व्यक्ति अछि। ओ देबूकेँ जमींदारक विरुद्ध ठाढ़ होयबसँ मना करैत अछि कियेक तँ मुस्लिम लीगक लोक और मंत्रीगण जमींदार सभक पक्षमे अछि। गामक स्कूल–शिक्षक इरशाद कहैछ जे मुस्लिम कृषक अलग आन्दोलन प्रारम्भ नहि करत बल्कि ओ हिन्दू कृषक सभक समर्थन करत। देबूकेँ डर छैकजे ओकरा एहि आन्दोलनक भार लेबय पड़त जकरा लेल

अपन घरमे सद्यः घटित शोकक बाद ओ प्रस्तुत नहि भ' सकल अछि। देबू कृषक सभकेँ अपन तरहथ जकाँ जनैत अछि। मई मासँ ओ सभ उधारक अन्नपर जीबैत अछि। ओकरा डर अछि जे ओ सभ जमींदार लोकनिक विरोध नम्हर समय धरि नहि क' सकत।

श्रीहरि आब जमींदार श्रीहरि घोष अछि। आन्दोलन आरम्भ होयबा सँ पहिनहि ओ ओकरा कुचलि देबय चाहैत अछि। ओ देबू और "भल्ला बागड़ी" नामक जनजातिक एक निडर और शूरवीर व्यक्ति टिंकारीक विरूद्ध डकैतीक मोकदमा दायर क' दैत अछि। शहरक मिल-मालिक लोकनिक प्रतिनिधि मुखर्जी बाबू श्रीहरिकेँ सलाह दैत अछि जे ओ अभावक समयमे कृषक सभकेँ अन्न उधार नहि द'क' भूखल मरै देथि। हिन्दू और मुसलमान कृषक एक संग कष्ट पबैत अछि। दौलत शेख देबूक विरूद्ध साम्प्रदायिक उन्माद भड़काबै चाहैत अछि। मुखर्जी बाबू, इरशाद और एकटा लड़ाकू कृषक रहम शेखकेँ गामसँ निष्कासित करबाक प्रयत्न करैत अछि। कुसुमपुरमे दौलत शेख और अपन गाममे श्रीहरि उपकार कैनिहारक ढोंग करैत अछि और कृषक सभकेँ धान उधार दैत अछि। इरशाद और देबू ओहि दिनक पहिनहिसँ अनुमान क' लैत अछि जखन कि ई दुनू मिलि क' कृषक सभकेँ जमीनसँ बेदखल क' देत। जखन बाढ़ि अबैत अछि श्रीहरि कृषक सभक मदति क' ओकरा सभक हृदयकेँ वशमे करबाक अवसरक लाभ उठबैत अछि।

पाँचोगामक लोक जे ग्राम–समाजक स्तम्भ छल एक-एक क' टूटि जाइत अछि। शिवशेखर गाम छोड़ि दैत अछि कियेक तँ विश्वनाथ ओकर खिलाफ भ' गेल अछि। टिंकारी गिरफ्तार भ' जाइत अछि। ओकर विधवा पुत्री स्वर्णा उच्च शिक्षाक लेल शहर चलि जाइत अछि। अनिरूद्धक पत्नी पद्मा नव जीवन आरम्भ करबाक लेल गाम छोड़ि दैत अछि। अनिरूद्ध ग्रामीण सभकेँ मात्र औद्योगिक क्षेत्रमे चलि जयबाक प्रलोभन देबाक लेल आपस अबैत अछि। देबू काँग्रेसमे मिलि जाइत अछि और १९३० ई. मे गिरफ्तारी दैत अछि। १९३३ ई. मे ओकरा छोड़ि देल जाइत अछि। अन्तमे पाँचो ग्राम वर्त्तमान समयक कटु यथार्थसँ सचेत भ' जाइत अछि। जमींदार सभ चारूदिसक कृषि योग्य जमीन हड़पि लेलक अछि। ओ सभ कृषक सभकें बेदखल क' संथाल मजदूर सभकेँ मँगा लेने अछि। इरशाद कृषक संगठनक लेल काज करैत अछि और कानूनक परीक्षाक तैयारी करैत अछि। ओकील बनि क'ओ जमींदार सभसँ लड़बाक उद्देश्य रखैत अछि। धनी बेसी धनी और गरीब बेसी गरीब भ' रहल अछि। देबू अनुभव करैत अछि जे ओ आब बाहरी व्यक्ति बनि क' नहि रहि सकत। अन्ततः ओ सेहो कृषकेक वंशसँ आयल अछि। कृषक वृक्ष जकाँ अछि। ओ अपन जड़ि जमा क' पुनः जीवनक आरम्भ करय चाहैत अछि। देबू आब आरो बेसी यर्थार्थक अपेक्षाकेँ अस्वीकार नहि करत। ओ गामक स्कूल शिक्षिका स्वर्णासँ आब विवाह करत और पुनः अपन स्कूल आरम्भ करत। एक साधारण व्यक्ति बनि क', दैनिक जीवनक आवश्यकता सभक पूर्ति क'– मात्र एही तरहेँ देबू पाँचो गामक लेल ओ सभ काज क' सकैत अछि जे ओकरा करबाक अछि।

वास्तवमे ई दुनू पुस्तक एक उपनयासक दू टा भाग थिक । अपन साहित्यिक संस्मरणमे ताराशंकर उल्लेख कैलनि अछि जे ब्राह्मण सभक लेल हुनक मनमे असीम आदर अछि और हुनका अनुसारेँ शिवशेखर एक आदर्श ब्राह्मण अछि । एहि दुनू महाकाव्यात्मक उपन्यासक बीज संस्कृत शिक्षित शिवशेखर और ओकर अंगरेजी शिक्षित पुत्र शशिशेखरक विषयमे ''पितापुत्र'' नामक कथा अछि । मुदा वास्तवमे एहि उपन्यासमे शिवशेखरक भूमिका बड्ड छोट अछि । उपन्यासमे ओ प्राचीन भारतक प्रतिनिधित्व करैत एक प्रभावहीन व्यक्तित्वक संग विद्यमान अछि । ओ जाहि तरहेँ अपन पुत्र और बादमे अपन पौत्रसँ संघर्ष करैत अछि ओ आजुक पाठककेँ तर्कसंगत नहि लागत । वस्तुतः प्राचीन सम्प्रदायक ब्राह्मण सभक लेल ताराशंकरक आदर हुनक परम्परावादिता सिद्ध करैत अछि मुदा आजुक पाठकक लेल ओकर कोनहु अर्थ नहि हैत । ताराशंकरक विचार किछु रहल हो, ''गणदेवता'' और ''पंचग्राम'' किछु आने प्राप्त करैत अछि, किछु जे कि ब्राह्मणवादक सर्वोपरिता सँ बड्ड बेसी महत्त्वक अछि ।

एहि पुस्तक सभमे एक पूर्ण राष्ट्र और समाज नायक अछि । महत्त्वपूर्ण पात्र सभ एकहि आर्थिक स्तरक अछि । केन्द्रीय पात्र गरीब, पीड़ित, भूमिहीन और शोषित अछि एवं मुख्य घटना सभ ओकरे सभक चारू दिस घुमैत अछि । द्वारिका चौधरी, श्रीहरिपाल, दौलत शेख, मुखर्जी बाबू एवं किछु आन पात्र अपवाद अछि । कृषक सभक लेल ताराशंकरक सहानुभूति रूढ़िवादी मूल्य सभक मध्य पलल व्यक्तिक सहानुभूति अछि । परम्पराक अनुसरण हुनक रक्तमे अछि । ईलेखक द्वारा शिवशेखरकेँ देल गेल महत्त्व और देबूक चरित्रपर ओकर प्रभावक व्याख्या करैछ । मुदा जखन देबू कृषक सभक पीड़ा और शोषणक विरूद्ध प्रतिक्रिया देखबैत अछि तखन शिवशेखरक प्रभाव ओकर क्रियाक मार्गदर्शन नहि करैछ, ओ अपेक्षित ढंगसँ क्रिया करैछ । देबूक चरित्र-चित्रणमे हमरा सभकेँ साधारण लोक और ओकर मानसिक स्थितिक गम्भीर ज्ञानक दर्शन होइछ । कृषक वर्गक समाजमे देबू सन एकटा व्यक्ति प्राप्त शिक्षाक आधारपर स्वयंकेँ दोसरासँ थोड़ सन ऊँच और थोड़ सन भिन्न अनुभव करबाक लेल बाध्य अछि । शिक्षा कृषककेँ ओकर जड़िसँ दूर ल' जाइत अछि ओर ओकरा एकाकी बना दैत अछि । देबू निःसंदेह रूढ़िवादिताक लेल प्रवृत्त अछि मुदा एहन प्रवृत्ति मात्र सतह पर ओकर विचार सभकेँ प्रभावित करैत अछि, ओकर क्रिया सभकेँ नहि । मात्र ओ एवं इरशाद अन्त धरि कृषक सभक आन्दोलनक लेल निष्ठावान रहैत अछि । ''हाँसुली बांकेर उपकथा'क करालीसँ अनिरूद्ध उत्तम अछि । ओ एक कृषक नहि थिक । ओकर जड़ि माटिमे नहि अछि । ओ एकटा लोहार अछि और स्वभावतः एवं तर्कसंगत रूपसँ ओ एकटा एहन ग्राम-समाजक विरोध करैत अछि जे आब जीवित नहि अछि और जे वर्तमानक क्रूर सत्यकेँ नकारैत भूतमे रहैत अछि । एही कारणेँ ओ आन गरीब ग्रामीण सभकेँ औद्योगिक रोजगारक खोजमे गाम छोड़ि क' लगक शहरमे जयबाक लेल कहैत अछि ।

बीरभूममे, गरीब गाम छोड़ि बीरभूमक दोसर शहरमे चलि जाइत अछि जाहिठाम रेलवे-यार्ड और चाउर-मिल सभ अछि। "उद्योग" और "औद्योगिक मजदूर" शब्दक ताराशंकरक व्याख्या पाठकक लेल बेसी स्पष्ट नहि अछि कारण जे जनगणना एवं आन विवरण सँ स्पष्ट होइत अछि जे चारिम दशकमे बीरभूमक लग निश्चितरूपेँ नाममात्रक कोनो पैघ उद्योग नहि छल। बीरभूममे चाउर-मिल सभ अछि और रेलसँ जुड़ल शहर सभमे रेलवे-यार्ड अछि। ओही विवरणसँ स्पष्ट होइछ जे बीरभूमक लोक आश्चर्यजनक रूपसँ रोजगारक लेल आन जिला सभमे प्रवास करबाक लेल अनिच्छुक अछि। पश्चिम बंगालक आन सभ जिला सभमे मात्र यैह जिला अछि जाहिमे प्रायः सभ लोक पीढ़ीसँ एकहि स्थानपर रहैत आयल अछि और शताब्दी धरि एकहि स्थांनपर रहब लोक सभकेँ दुराग्रही जकाँ पुरान रीति रेवाजसँ युक्त क' दैत अछि। अखनो हमरा लोकनिक समय धरि बीरभूम मे सब दिनसँ भूमि सम्बन्धी समस्या सभ रहल अछि, किएक तँ बीरभूमक लोक अखनहु भूमिसँ आहार ग्रहण करबाक प्रयास करैछ। तेँ जखन ताराशंकर औद्योगिक मजदूरीक गप्प करैत छथि तँ हमरा लोकनि ई अनुमान लगा सकैत छी जे प्रवासी ग्रामीण या तँ रेलवे-यार्ड या चाउर मिल सभमे जाइत अछि।

ताराशंकर असाधारण विवेक और सहानुभूतिक संग कृषक सभकेँ पूर्ण अधः पतनमे जैबाक लेल बाध्य कयनिहार मन्द आर्थिक दिवालियापनक इतिहासकेँ चित्रित करैत छथि। जखन जमींदार एकजुट भ' जाइत अछि तखन कृषक धर्मक भेद बिसरि जाइत अछि और इरशाद तथा श्रीहरि दुनू अपन वर्गक लोक सभक पक्ष लैत अछि। ताराशंकर उचित रीतिसँ लक्षित करैत छथि जे वर्गक निर्माण मात्र आर्थिक वर्गीकरणक आधारपर होइछ आन किछु नहि। जमींदारक विरूद्ध हड़ताल चलेबाक निर्णय ओकरा सभक द्वारा विफल कैल जा सकैछ जे साम्प्रदायिक भावना सभसँ खेलबाक लेल प्रेरित अछि। यदि ताराशंकर धर्मक और धर्मसँ जुड़ल विभिन्न, प्रथा सभक बड़ बेसी राग अलापैत छथि तँ ओ एहन एहिलेल करैत छथि जे ओ जे देखैत छथि सैह लिखैत छथि, की होयबाक चाही ई शायदे लिखैत छथि और एहन प्रथा हमरा लोकनिक समाज मे अखनो विद्यमान अछि। भारत मे इतिहासक प्रक्रिया जाहि तरहेँ काज करैत अछि ओकरा ओ नीक जकाँ बुझैत छथि। इतिहासक प्रक्रियामे कोनो समापन अथवा अरम्भक विन्दु नहि अछि। इतिहासक प्रक्रिया मुख्यतः पाछाँ और आगाँ–दू स्तरपर, प्राचीनमे सँ किछुकेँ त्यागैत, किछुकै रखैत अवं प्रगतिक नव आयाम सभकेँ प्राप्त करबाक प्रयासमे आगाँ बढ़ैत काज करैत अछि। देबूक शिवशेखरक लेल समर्थन एवं कृषक सभक लेल काज करब परस्पर विरोधी नहि अछि। अन्ततः भारतमे तथाकथित प्रबुद्ध लोकनि सेहो कर–सामुद्रिक एवं ईश्वरक जीवित अवतार सभसँ युक्त भ' जाइत छथि। मात्र सिद्धान्ते मे एकटा विचारकेँ छोड़ल और दोसरकेँ अपनाओल जाइत अछि। हमरा सभक मनक गहनतामे प्राचीन तथा

मध्ययुग, आधुनिक युगक संग-संग निवास करैत अछि। वास्तवमे की घटित होइत छल ई ताराशंकरकेँ ज्ञात छलनि। ताहि हेतु हुनक कोनहु पात्र आमूल परिवर्तनक अनुभव नहि करैछ। घटित होइत परिवर्तन तर्कसंगत एवं स्वाभाविक रूपसँ एकटा क्रमिक प्रक्रियाक अनुसारेँ होइछ। श्रीहरि बेसी निष्ठुर एवं सत्ता प्रेमी भ' जाइछ। दुर्गा, पुलिससँ देबूक रक्षा करैत अछि। ओ एकटा कामुक वेश्यासँ एकटा स्नेही व्यक्तिमे बदलि जाइत अछि किएक तँ देबू सभक संग वास्तविक शिष्टाचारसँ बर्ताव करैत अछि और पुरुष अथवा स्त्रीक चरित्रक सभसँ नीक पक्षकेँ उद्घाटित क' सकैत अछि। यद्यपि आन लोक गाम छोड़ि क' चलि जाइत अछि तथापि इरशाद और देबू नहि जाइत अछि। ओ बूझैत अछि जे अत्याचारीक विरूद्ध संघर्ष कखनो समाप्त नहि भ' सकैछ और ताहि हेतु अपारणीय विषमताक विरूद्ध संघर्ष आगाँ चलैत रहबाक चाही। स्वर्णा और गौड़ गामक सेवाक लेल आगाँ अबैत अछि। ताराशंकर गामक इतिहासकेँ देशक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत करैत छथि—एहि तरहेँ एहि सत्यकेँ बुझबैत जे गामक मन्द मृत्यु सम्पूर्ण देशक सामान्य विकासकेँ मन्द करबाक लेल बाध्य अछि।

दुनू उपन्यासक संरचना गठित और सुसम्बद्ध अछि। एहिमे पाठक केँ ऊबाबै और ओझराबैवला नम्हर वर्णनात्मक शैली नहि अछि। दोसर किछु उपन्यास सभ जकाँ भाषा कतहु महत्त्वाकांक्षी और आडम्बरपूर्ण नहि भ' क' सरल अछि और ओहिमे बड्ड मितव्ययिता अछि। आन विशेषता सभमे सेहो ई पुस्तक सभ महाकाव्यात्मक अछि। स्वच्छन्दतावाद और प्रगीत तत्व पूर्णतः अनुपस्थित अछि। प्रतिपादनमे प्रशंसनीय विषय-निष्ठता अछि एवं वर्णनक संचालन निर्लिप्त अनासक्त रीतिसँ भेल अछि। देबूकेँ छोड़ि आन कोनहु पात्रकेँ दोसरासँ बेसी महत्व नहि भेटैछ। लेखक सभ पात्रक संग समानताक व्यवहार करैत छथि। केन्द्रीय कथाक रूपमे किछु नहि अछि। पांचो गामक जीवनेसँ कथाक निर्माण होइत अछि। सब पात्र एवं ओकर जीवन-वृत एहि प्रकारेँ अन्तर्ग्रथित अछि जे ओहिमेसँ कोनहुँ एकटाक अभावमे एहि पुस्तकक विषयमे सोचब संभव नहि अछि। लोक इतिहासे मुख्य विषय वस्तु अछि। जखन ताराशंकर एहि दुनू उपन्यासक रचना कैलनि तखन ओ अपन सर्वोत्कृष्ट कृति लिखलनि। ई दुनू महाकाव्यात्मक उपन्यासक रूपमे दीर्घ काल धरि जीवित रहत। उपन्यासक एहि क्षेत्रमे हुनक समर्थ अनुयायी हैत एहन सोचब कठिन अछि किएक तँ एकटा महाकाव्यात्मक उपन्यास लिखबाक लेल लोक, माटि, इतिहास और समयक यथार्थ ज्ञान होयबाक चाही जकर हमरा सभक लेखक लोकनि मे अखनो अभाव अछि। एहि प्रसंगमे एकमात्र लेखक सतीनाथ बनर्जी, जे "जागरी" और "धोनरी चरित मानस" क लेखक छथि, स्मरण होइछ मुदा ओ सर्वथा पृथक शैलीक लेखक छलाह। यद्यपि दोसरो अनुयायी होइतथि तँ ताराशंकरक उपलब्धि कम नहि हैत।

अध्याय ८

१९२९ ई. मे ''कल्लोल'' मे ''राईकमल'' लघु-कथाक रूपमे पहिल बेर प्रकाशित भेल छल। बादमे, ताराशंकर एकरा उपन्यासक रूपमे पुनः लिखलनि। हुनक साहित्यिक संस्मरण हमरा सभकेँ हुनक वैष्णव लोक सभक एवं ओकर सम्प्रदायक प्रति घनिष्ठ परिचयक विषयमे बतबैत अछि। वैष्णवक लेल प्रेम वैयक्तिक और सांसारिक नहि अछि। कृष्णसँ प्रेम, एकमात्र वास्तविक प्रेम अछि। उपन्यासक प्रारम्भहिमे ताराशंकर ''गीतगोविन्द'' क रचयिता सम्मानित वैष्णव कवि जयदेवक चर्चा कैलनि जे १२हम शताब्दीमे बीरभूमक वासी छलाह। जयदेवक समयोसँ पहिने जिलामे वैष्णव-सम्प्रदाय अपन आधार बनौनाइ शुरू क' चुकल छल और चैतन्य महाप्रभुक आगमन धरि ई सम्प्रदाय अपन गम्भीर आधार बना चुकल छल। अखनो वैष्णव-जीवन पद्धतिक किछु दृष्टिकोण सामान्य-जनकेँ आकर्षित करैत अछि। वैष्णव-वादमे जाति-प्रतिबन्ध नहि अछि। सब मनुष्य समान अछि। स्वामी विवेकानन्द वैष्णववादक प्रशंसा एहन धर्मक रूपमे करैत छलाह जे पददलित, बहिष्कृत और उत्पीड़ित सभकेँ आश्रय देने छल।

एक वैष्णव-बहुल गाममे कमलिनी अपन विधवा माय कामिनीक संग रहैत अछि। कामिनीक अपन आश्रम अछि जाहिठाम प्रौढ़ वैष्णव रसिकदास अबैत अछि। ओ कमलिनीकेँ रायकमल नाम दैत अछि। रायकमल धनाढ्य कृषक महेश्वरक पुत्र रंजनसँ प्रेम करैत अछि। जखन रंजन रायकमल सँ विवाह करबाक उद्देश्यसँ वैष्णव बनि जैबाक धमकी दैत अछि, महेश्वर रायकमल सँ अपन एकमात्र पुत्रकेँ छोड़ि देबाक याचना करैछ। कामिनी रायकमल और रसिकदास ग्राम छोड़ि दैत अछि और चैतन्य महाप्रभुक जन्म-स्थान नवद्वीप चलि जाइत अछि। ओहिठाम कामिनी अपन आश्रमक निर्माण करैत अछि। किछु समयक पश्चात् ओकर मृत्यु भ' जाइछ। रायकमल रसिकदाससँ मात्र एहि लेल विवाहक' लैत अछि, जे वृद्ध पुरुष सँ विवाह क' ओ विवाहक शारीरिक पक्षसँ बचि सकै।, मुदा रसिकदास सुप्त कामनाक उत्तेजनाक अनुभव करैछ जे एक धर्मपरायण वैष्णवक लेल पतन अछि। ओ सब नवद्वीप छोड़ि दैत अछि, ओर एम्हर-ओम्हर भ्रमण करबाक पश्चात् अपन गाम घूरि अबैत अछि जाहिठाम रायकमल पुनः आश्रमक निर्माण करैत अछि। रायकमल

ई अनुभव करैछ जे रंजन ओकरा प्रति ओहन निष्ठावान नहि रहल जेहन कि ओ अछि। ओ वैष्णव बनि गेल अछि और पारोसँ विवाहक' लेने अछि। रायकमल जयदेवक एक मन्दिरमे ओकरासँ भेँट करैत अछि औरदुनू एक भ' जाइछ। आनन्दक अल्प समयक पश्चात् रंजन एकटा आन नवयुवतीकेँ ल' अबैछ कियेक तँ ओ प्रेम-पंथक पुजारी अछि एवं ओकरा युवा संगी सभक सदिखन आवश्यकता रहैत अछि। रायकमल पूर्ण रूपसँ आश्वस्त अछि जे पार्थिव प्रेममे अपन निष्ठाकेँ ओझरायब मिथ्या अछि। आब ओ वास्तविक वैष्णवी बनि जाइछ और गीत गबैत अज्ञातक लेल प्रस्थान करैछ।

वैष्णववादक आध्यात्मिक और धार्मिक पक्षसँ उपन्यास, बेसी गम्भीरतासँ सम्बद्ध नहि अछि। अनाशक्ति और अस्वात्वात्मकता वैष्णव-प्रेम-दर्शनक एकटा विचित्र लक्षण अछि। रायकमलक कथा वस्तुतः प्रेम और रोमान्सक कथा अछि। पात्र, पार्थिव, तुच्छ वासनाक गुलाम एवं विश्वसनीय अछि। उपन्यासमे भक्ति कम एवं मानवीय पक्ष बेसी अछि। रायकमलक अपन एकमात्र प्रेमी रंजनकेँ छोड़बाक पश्चात् अन्तमे उपन्यास उन्नत भेल अछि। ओ एहन कहि सकैत अछि, मुदा ओ एकटा स्थाई प्रेमक खोजमे नहि जा रहल अछि, ओ रंजनकेँ छोड़ि दैत अछि कियेक तँ ओ रूकि क' रंजनक अपक्षयक साक्ष्य नहि होमय चाहैछ। भाषा गीतात्मक अछि। रसिकदासक चरित्रक बड़ नीक चित्रांकन भेल अछि। रंजनक चरित्र किंचित अपूर्ण प्रतीत होइछ मुदा रायकमलक सृष्टिमे लेखक अपन सम्पूर्ण स्नेह अर्पित क' देलनि। रंजनक प्रति ओकर एकपक्षीय प्रेम कथाकेँ आकर्षक और मर्मस्पर्शी बनबैत अछि। ई लघु उपन्यास संरचनात्मकताक दृष्टिसँ सुगठित अछि।

नाचयवला और गावयवला लोक ताराशंकरकेँ बड़ बेसी आकर्षित करैत छल। एहि लोक सभकेँ ओ अपन आँखिसँ देखने छलाह और जेहन उनमुक्त जीवन ओ सब व्यतीत करैत छल, मानवीय-प्रेमकेँ जेहन सर्वोच्च महत्त्व ओ सब दैत छल, ई कथा-सामग्रीक रूपमे हुनका आकृष्ट कैलक। जखन कखनहु ओ सांसारिक, जनसामान्य एवं तात्विक वासनाक गुलाम लोकक विषयमे लिखने छथि तखन ओ सर्वदा सर्वोत्कृष्ट रहल अछि। एकटा ग्रामीण कविक जीवन हुनका उपन्यासक सामग्रीक रूपमे प्रलोभित कैलक। वंगला साहित्यक सभसँ नीक रूमानी उपन्यास सभमे सँ एक ''कवि'' एकर परिणाम छल। पश्चिम बंगालक ''कवियल'' अथवा कवि-संगीतकार ई प्रमाणित करैत अछि जे हमरा सभक वेद, लोक-साहित्य, दन्तकथा, पौराणिक कथा और लोक-कथाक संग पुस्त धरि विस्तृत दीर्घ परिचयक कारणेँ अनपढ़ सेहो उच्च श्रेणीक कलात्मक प्रौढ़ता प्राप्त क' सकैत अछि। भारतक अनपढ़ लोक कोनो तरहेँ अशिक्षित अथवा असंस्कृत नहि अछि। कला और संस्कृतिक लेल ओकर संवेदनशीलता उच्च श्रेणीक अछि। ''कवियल'' स्वतः प्रवर्तित गीत रचैत अछि एवं ओकरा धुनपर बैसबैत अछि। कविक मध्य झगड़ा अथवा ''कविर लड़ाई'' क समानार्थ भारतक आन भाग मे सेहो अवश्ये हैत। दूटा कवि–संगीतकार द्वारा

निर्देशित दूटा समूह गीत गाबि क' और गीत सभमे प्रश्न जकरा लेल विपरीत दल शीघ्र रचित गीतमे उत्तर दैक, राखि क' एक–दोसराकेँ पराजित करबाक प्रयास करैत अछि। ''कवि'' १९४४ ई. मे प्रकाशित भेल छल। एहि उपन्यासकेँ लिखबासँ पूर्व ताराशंकर एगारह वर्षसँ कलकत्तामे रहि रहल छलाह। उपन्यासक समय ओहि अवधिमे रखलनि अछि जखन प्रत्येक शहर अथवा नम्हर गाम सभमे सिनेमा घरक उदय नहि भेल छल। एहन समयमे ई कवि रचयिता एवं दोसर समूहक लोक सभक सांस्कृतिक एवं मनोरंजनक आवश्यकताक प्रबन्ध करैत छल। बीरभूममे लोक गीतक एकटा सम्पन्न परंपरा अछि एवं बीरभूमक ''कवियल'' समूह सभक जिलामे अखनो बड़ माँग अछि।

जखन एकटा डोम, एकटा अधम जातिक व्यक्ति निताई कविक रूपमे जानल जाइत अछि तखन गामक लोक बड़ अचम्भित होइत अछि। अधम जातिक रूपमे जानल जायवला डोम एक समय स्थानीय सरदार सभक छायामे बड़ लड़ाकू होइत छल एवं सामंतवादक अंतक संगहि अपराधक जीवन अपनाय लेने छल। सरकार किछु जातिपर अपराधी होयबाक कलंक लगा देने छल। ई आश्चर्यजनक अछि जे कलंकित जाति नहि रहबाक पश्चात् डोम अपराधीक रूपमे जानल जाइत अछि, माताक पक्षसँ निताई एकटा खूनीक दोहित्र, एकटा डकैतक भातिज, पिताक पक्ष सँ एकटा आन डाकूक पौत्र एवं सौदा पर एकटा उचक्काक पुत्र थिक। ओ लम्बा, तगड़ा एवं रात्रिक मखमल सन अन्हार जकाँ कारीअछि। ओकर आँखि पैघ और कोमल अछि। ओकरा कविक रूपमे अपन क्षमता प्रमाणित करबाक अवसर तखन भेटैछ जखन प्रसिद्ध कवियल नोतनदास अट्टहासाक लोक सभ द्वारा आयोजित कविगानमे भाग लै सँ मना क' दैत अछि। विरोधी दलक अग्रणी कवि महादेव ओकरासँ लाज बचेबाक लेल कहैत अछि। निताई पूर्णरूपसँ प्रभाव स्थापित क' लैत अछि। ताबत धरि एकटा रेलवे कर्मचारी राजाराम, ओकर पत्नी एवं ठाकुर जी नामक ओकर भौजी निताईक एकमात्र प्रशंसक छल। ठाकुरजी निताईसँ मौन-प्रेम करैत अछि जे निताई जनैत अछि मुदा ओ अपेक्षित रूपेँ एहि प्रेमक प्रतिदान नहि करैछ कियेक तँ ओ विवाहिता अछि और एहिलेल सेहो जे निताईकेँ एकटा प्रसद्धि कवि बनबाक गूढ़ अभिलाषा अछि। जखन निताई बाह्य दुनियाक लेल प्रस्थान करैछ तखन ठाकुर जी विक्षिप्त भ' जाइछ और अनभिज्ञ गामवासी ओकरा नरकदूतसँ आविष्ट बुझैत अछि। जखन निताई एक प्रसिद्ध कवियल बनि जाइत अछि तखन ओकरा लग प्रेम झूमर दलक प्रसिद्ध गायिका और नर्तकी बसन्ताक रूप मे अबैत अछि। झूमर लोक गाम सभमे गबैत और नचैत घूमैत रहैत अछि। झूमर-सत्रक समाप्ति पर ओकरा सभक स्त्री ग्राहक सभक मनोरंजन करैत अछि। बसन्ताक आकर्षणसँ निताई मंत्रमुग्ध भ' जाइछ। बसन्ता सब किछु एतेक तीव्रताक संग करैत अछि जेना पृथ्वीपर रहबाक लेल ओकरा लग बड़ कम समय अछि और जे समय अछि ओकर पूर्ण उपभोग क' लेबाक चाही। ओ भरि राति शराब पीबैत अछि,

नचैत अछि और दहलाबै वला तीव्रता सँ स्वयं कें अशक्त क' लैत अछि। "ओकर आँखि विचित्र अछि। जखन ओकर आँखि शराबक उत्तेजनाकें व्यक्त करैत अछि तखन रक्तसँ डूबल छूरी जकाँ लाल और तीक्ष्ण भ' जाइछ।" निताई ओकरा एक शांतिमय जीवन देबाक लेल कृतसंकल्प अछि मुदा बसन्ता जनैत अछि जे ओकरा क्षय-रोग अछि और ओकरा मरैयेटा पड़तै। जीवनक प्रति निष्ठावान, ताराशंकर बसंताक हृदय-परिवर्तन नहि करबैत छथि। ओ जाहि तरहें मृत्युकें ग्रहण करैत अछि, ओ ओकरा भावनात्मक शिखर पर उन्नत क' दैत अछि।

"मृत्यु पूर्व ज्वरग्रस्त बैचैनीमे अकस्मात् बसन्ता शान्त और स्थिर भ' गेली। ओकर पैघ आँखि आरो पैघ भ' गेल जखन ओ पुछलक, "की हम मरि रहल छी ?"

निताई क्षीण मुस्कानक संग अपन आँगुरसँ ओकर माथकें प्रेमसँ स्पर्श कैलक और बाजल, "भगवानक नाम–बासन, गोविन्दक स्मरण तोहर कष्ट कें सहज क' देत।

नहि ! आकस्मिक झटकाक संग धनुषसँ बहरायल तीर जकाँ घुमैत बसन्ता बाजल, "नहि ! ईश्वर हमरा अखन धरि की देलक ? पति, बच्चा, घर–ओ की देलक हमरा ? नहि।"

निताई चुप भ' गेल जेना कोनो अपराधी होय।

बसन्ता पुनः करौट फेरलक और बाजल, "दया करू गोविन्द,– अगिला जन्ममे दया करू–।" ओकर पैघ आँखि पावस ऋतुक वर्षामे जलमग्न कमलक पंखुड़ी जकाँ नोरसँ भरि जाइत अछि। निताई सावधानीपूर्वक अपन धोतीक कोरसँ नोर पोछि देलक। "बासन !" ओ बाजल।

"नहि ! आब हमरा नहि बजाबी। नहि !"

दोसरहि क्षण ओकर कोर मे खसि कय ओ मृत्युमे डूबि गेल।"

ओकर मृत्युक पश्चात् नाम एवं यशमे निताईक रूचि समाप्त भ' जाइत अछि। ठाकुर जी चाहैत छली जे ओ एकटा पदक जीतय। ओ लोलुपतापूर्ण पदक जीतैत अछि और घुरि क' ठाकुरजी लग जाइत अछि। मुदा एहि बीच ओहो ओकरा लेल लालायित रहैत प्राण त्यागि दैत अछि। निताईक प्रेम आकांक्षा अपूर्ण रहि जाइछ। ओ गीत जे ओकरा प्रसिद्ध बनैने छल अन्तमे वैह सत्य होइछ–

"हम हृदयक संतोष भरि प्रेम नहि क' सकलहुँ
हमर जीवन–अवधि हमरा एकर अवसर नहि देलक
जीवन एतेक छोट कियैक अछि ?"

निताईक चरित्र दूटा स्त्रीक संग ओकर सम्बन्धक माध्यमसँ विकसित भेल अछि। निम्न कुलमे जन्म ओकरा एक मर्मस्पर्शी नम्रता देने छल। कवियलक रूपमे ओकर प्रसिद्धिक उपरान्तो ओकरा अपन मूल जाति बिसरय नहि देल जाइत अछि। ओ जे गीत रचैत छल

ओहिमे ओकरा अपन भावनाक निष्कृति भेटैत छल । बसन्ता और ठाकुरजीक चरित्र सहानुभूति और कुशल सूझ-बूझक संग रचल गेल अछि मुदा बसन्ताकेँ लेखकसँ बेसी सावधानी और मनोयोग भेटल अछि । दूटा प्रेम-प्रसंगक विविधताक मध्य निताईक चरित्र बड़ नीक जकाँ प्रकट भेल अछि । ''कवि'' मूलतः बंगालक एकटा कथा थिक । भारतक दोसरहु भाग सभमे सेहो निताईक प्रतिरूप हैत मुदा पृष्ठभूमि, घटनास्थल, गीत सभ लेखकक स्वदेश, बंगालक पश्चिमी भागक अछि । बंगला साहित्यमे एकरा उत्कृष्टतम रूमानी उपन्यास सभ मे सँ एक स्वीकारल गेल अछि । निताई और ओकर दूटा प्रेम-प्रसंगक रूमानी त्रासदीक संग-संग लेखक द्वारा एकटा आन त्रासदीक कथा सेहो अन्तर्ग्रन्थित कैल गेल अछि । ई एकटा मनुष्यक तथाकथित निम्नजातिक होयबाक त्रासदी अछि जे एहि घोर जातिवादी समाजमे अपन प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक लेल संघर्षरत अछि । गुणी और प्रतिभासम्पन्न होयबाक उपरान्तो सम्पूर्ण उपन्यासमे निताईक जीवनकेँ ओकर कुलक छाया निष्प्रभ रखने अछि । ताराशंकरक उत्कृष्ट पुस्तक सबमे नायक और नायिका साधारण, पद-दलित और निर्धन लोक अछि । एकर उपरान्तो ओ अखनो भारतक प्रतिनिधित्व करैत अछि और ताहिहेतु अपन सम्पूर्ण क्षेत्रीयताक संग ताराशंकर अपन उपन्यासक माध्यमसँ भारतीयताक बोध करयवामे सफल भेलाह । ई कहब मिथ्या नहि हैत जे हुनक उत्कृष्टतम उपन्यास स्वरूपमे वस्तुतः भारतीय अछि कियैक तँ हुनक पुस्तकसँ साधारण लोक सभसँ परिचित भ' हमरा सभकेँ भारतकेँ जनबाक अवसर भेटैत अछि ।

अध्याय ९

"हाँसुली बाँकेर उपकथा" अखन धरि ताराशंकरक उत्कृष्टतम कथा-साहित्यमे सँ एक कृतिक रूपमे स्वीकृत भ' गेल अछि एवं एहने वंगला साहित्यमे सेहो ।

वीरभूम जिला द'क' बहैत 'कोपाई" नदी एकटा तीक्ष्ण मोड़ घुमि गेल अछि और ई मोड़ अनमन 'हँसिया' आकारक कण्ठा जकाँ लगैत अछि जे ग्रामीण महिला सभ द्वारा पहिरै वला आभूषण "हँसुली" क नामसँ जानल जाइत अछि । मोड़क द्वारा निर्मित पट्टी वाँसक सघन झाड़ीसँ आच्छादित अछि । अंगरेजीक "वम्बू" कें वंगलामे "बाँस" कहल जाइत अछि ताहिहेतु निकटवर्ती गाम बाँसबाड़ीक नामसँ जानल जाइत अछि । एहि गामक मालिक जंगलक जमींदार अछि और ई एकटा उपजाति, भूमिहीन, खेतिहर मजदूर, कहार सभ द्वारा किरायापर लेल जाइत अछि । ग्राम माता सुचाँद अतीतक प्रतिनिधित्व करैत अछि । ओ आशुविश्वासी कहार सभसँ हँसिया मोड़क दन्तकथाक वर्णन करैत अछि । कहार सभक मुखिया बनवारी पुरान पद्धतिक अनुयायी अछि । ओ सामन्ती कानूनकें मनैत अछि और ग्रामीणक एहि शोषण और गरीबक जीवनकें छोड़ि लगक रेलवे-यार्डमे औद्योगिक मजदूरी, जे सरलतासँ प्राप्त अछि कियेक तँ दोसर विश्वयुद्ध चलि रहल अछि और औद्योगिक रोजगार पायब सरल अछि, केर खोजमे जएबाक विरोध करैत अछि । एकटा युवा विद्रोही कराली वर्त्तमानक प्रतिनिधित्व करैत अछि । ओ कहार जीवनक वास्तविकतासँ पूर्णरूपेण सचेत अछि । ओ गाममे रहैत अछि मुदा बनवारी और पुरान मान्यता सभक विरोध करैत अछि । ओ रेलवे-यार्डमे काज करैत अछि और ओहि ग्रामीण सभकें तुच्छ बुझैत अछि जे वर्त्तमानमे जीबासँ अस्वीकार करैत अछि । बनवारी और करालीमे पहिल संघर्ष तखन होइत अछि जखन कराली एकटा नम्हर दुबोइया, जकरा ग्रामीण ग्राम देवता या कर्त्ताक रक्षित मानैत अछि, कें मारि दैत अछि । जखन कराली ओहि देवतासँ दण्डित नहि होइछ और वीरताक लेल ओकरा पुलिस–दरोगा द्वारा पुरस्कार देल जाइत अछि, तखन बनवारी अपन प्रतिष्ठा गमा दैत अछि । तत्पश्चात् गामक सामाजिक संहिताक तिलांजलि दय ओ एकटा आन व्यक्तिक पत्नी पाखीक संग प्रस्थान क' जाइत अछि । बनवारीकें डर अछि जे कराली ओकर एक सशक्त प्रतिद्वन्द्वी भ'गेल

अछि। ओ कराली और पाखीक विवाहक व्यवस्था क' करालीकेँ अपनापक्षमे अनबाक प्रयास करैत अछि। ग्राम प्रधान, करालीकेँ अनुदान द'क' ग्रामीणक क्रोध अपनापर ल'लैत अछि। मुदा कराली आपस लौटब अस्वीकार करैत अछि। ओ ओहि पुरान दुनियाकेँ अस्वीकार करैत जाइत अछि जाहिमे मे कहार दासोचित अज्ञनतामे जीवैत अछि। जतय धरि करालीक प्रश्न अछि ओकर लोक बनवारी और सुचाँद द्वारा रचित एकटा काल्पनिकताक दुनियाँमे जीबैत अछि।

मात्र सुचाँद हँसुली मोड़क दन्तकथा जनैत अछि। एक समय ई स्थान अँगरेज नील रोपक सभक छल। कहार ओकरा सभक लेल काज करैत छल और ओकरा सभकेँ काश्तकारीपरभूमि देल जाइत छल। जखन बाढ़ि मे बगान दहि गेल और रोपक मरि गेल तखन अन्ततः जंगलक घोष परिवार बगानक भूमि कीनि लेलक और कहार सभकेँ काश्तकार बनैने रहल। कहार भूमिपर अधिकार नहि रखैत अछि, ओ भूमि जोतैत अछि एवं मजदूरीक रूपमे पाइ और धान प्राप्त करैत अछि। जमींदार ओकरा सभक अज्ञानताक लाभ उठबैत अछि और ओकरा सभसँ पालकी ढोअवैत अछि और जखन आवश्यकता होइत अछि, बेगारी करबैत अछि एवं एही तरहेँ आन सभ काज सेहो। मात्र कराली जमींदार सभक खेलकेँ बुझैत अछि मुदा कहार यथार्थमे पैर राखयसँ डेराइत अछि। बनवारीसँ प्रेरित ओ विवेकशून्य भ'कय सामन्त प्रथाक अनुसरण करैत अछि। जखन बनवारी ई स्पष्ट अनुभव करैत अछि जे कराली कखनहु ओकर सहायक नहि बनि सकत तखन ओ पुनः विवाह करैत अछि। पुत्र प्राप्त करवाक उद्देश्यसँ एहि बेर एकटा विधवा युवतीसँ ओ विवाह करैत अछि, जकरा ओ अपन पैतृक सम्पत्ति प्रदान क' सकय। ओकर पहिल पत्नी मरि जाइत अछि। कराली ओकर दोसर पत्नीक संग भागि जाइत अछि। बनवारी ओकरासँ लड़ैत अछि मुदा लड़ाई हारि जाइत अछि। महीनो बीमार और कष्टक अवस्थामे पड़ल रहबाक पश्चात् जखन ओ स्वस्थ होइत अछि तँ देखैत अछि जे ओकर पुरना दुनिया समाप्त भ' चुकल अछि। ओ जकर विरोध करैत छल से युद्ध पूरा क' देलक अछि। युद्धकालीन निर्माण-कार्य ठेकेदार सभकेँ एहि सुदूर गामक दिसि आकर्षित कैलक। १९४२ ई. क चक्रवात पहिनहि गामक फसिलकेँ नसट क' चुकल अछि। लोक सभ रेलवे-यार्डक लेल गाम छोड़ि देलक कियैक तँ जमींदार सब ओकरा सभक हितक रक्षा करैसँ अस्वीकार क' देलक अछि। करालीसँ प्रेरित ठेकेदार सब गाछ एवं बाँसक उपवन काटि देलक अछि। एतबा धारि जे ग्राम देवताक वास-स्थान, पवित्र बेल वृक्ष सेहो काटि क' खसा देल गेल अछि। बनवारी मरि जाइत अछि। कराली ओहि कहार सभक नव नेता बनि जाइत अछि जे अपन पृथक स्मिता हेराय कय मजदूर सभक एक पैघ संस्थामे विलीन होयबाक लेल वाध्य भ' जाइत अछि। सुचाँद भिखारिन बनि शहर चलि जाइत अछि जतए भीख मँगैत हँसुली मोड़क दंतकथाक अन्तक वर्णन करैत रहैत अछि।

ई कथा पुस्तकक भाव प्रस्तुत करैत अछि। शीर्षक बतबैछ जे ई एकटा दन्तकथा थिक। दंतकथा अतीत आ वर्त्तमानक नहि होइछ। ओ सर्वकालीन होइत अछि। हँसुली-मोड़क दन्तकथा वस्तुतः एक सर्वकालिक कथा थिक–एकटा छोट समुदायक एकटा पैघ एवं प्रभावी समुदायसँ पराजय स्वीकार करबाक कथा। बनबारी और कराली दूटा प्रधान पात्र अछि मुदा पुनः उपन्यासक नायक सम्पूर्ण जनता अछि। आधुनकि बात–व्यवहारसँ पूर्ण अनभिज्ञताक कारणेँ कहार सब जमींदार, ठेकेदार एवं उद्योगपति सभक सहजहिँ शिकार बनि जाइत अछि। ओ सब प्रकृतिक बात-व्यवहारसँ घबड़ा जाइत अछि और आश्वासनक लेल अपन अशक्त देवता लग दौड़ैत अछि। सुचाँद ओकरा सभक आदिमवादक प्रतिनिधित्व करैत अछि। बनवारी सामंत सभक अधीन स्वामीभक्त कृषकक अंतमि अवशेषक प्रतिनिधित्व करैत अछि। बनवारीक लेल देवता जमींदार एवं पुरान बात-व्यवहार सभ अलंघनीय अछि। ओ हमरा लोकनिक कृषक वर्गक एक अति यथार्थ प्रतीक थिक जे घटना सभक क्रमकेँ ओकर वैधतापर कखनहु बिना कोनो संदेहक स्वीकार क' लैत अछि। तथापि ओ एक गरिमामय चरित्रक स्वामी अछि जे ठेठ भारतीय अछि। सुचाँद एकटा आद्यरूपी चरित्र अछि। ओ सब किछुक व्याख्या क' सकैत अछि किएक तँ ओकरा प्राचीन देवता सभक बात-व्यवहार ज्ञात अछि। ओकरा लेल दुबोइया देवताक रक्षित तथा चक्रवात और आन्हीक आक्रमण पाप कैनिहार कहार सभक लेल उचित दण्ड थिक। हमरा लोकनिक ग्राम एहन महिला सभसँ भरल अछि मुदा बंगला साहित्यमे एहिसँ पूर्व कहियो सुचाँद सन सशक्त और सजीव प्रतिकृति नहि भेटल अछि। लेखक एहन दावा कैलनि अछि जे ओ सुचाँदकेँ प्रत्यक्ष जीवनसँ लेलनि अछि। विद्रोही कराली भविष्यक मूर्त्तरूप अछि। बनवारीक विरोधीक रूपमे चित्रित कैल गेलाक पश्चातो ओ वृद्ध ग्राम-प्रधानसँ बेसी भिन्न नहि अछि। ओ सेहो कहार सभक नेतृत्व करै चाहैत अछि। उपन्यासक अन्तमे ओ परित्यक्त ग्राममे आपस जाइत अछि और पुनः ओकर निर्माणक सपना देखैत अछि। कराली "गणदेवता" और "पंचग्राम" क अनिरूद्धमे एकटा अन्तर रखैत प्रतिध्वनित करैत अछि। अनिरूद्धक मामिला मे विद्रोह सम्पूर्ण अछि कियेक तँ एकटा लोहार होयबाक पश्चातो ओ माँटिक प्रति निष्ठाक भावनासँ कखनहु शासित नहि भेल अछि। जखन कि कराली एक विद्रोही रहितहुँ माँटिसँ बद्धमूल अछि यद्यपि ओ ई नहि जनैत अछि। स्वयंकेँ जनबाक लेल ओकरा पुरान व्यवस्था अवं ग्रामक नाश करय पड़ैत अछि। अन्तमे ओ ई अनुभव करैत अछि जे ओकर जड़ि बहुत किछु माँटिमे अछि।

कहार सभक जीवनक चित्रण गम्भीर अन्तर्दृष्टि और स्नेहक संग कैल गेल अछि। गरीब एवं शोषित होयबाक पश्चातो ई अल्पसंख्यक समाज अनेक विषमताक विपरीत एकटा सम्पन्न जन-जातीय सभ्यताक अवशेषकेँ सुरक्षित कैने रहल। अपन दयनीय जीवनकेँ ओ गीत और नृत्यसँ अनुप्राणित करैत अछि। ओकरा सभक मुख्य आनन्दोत्सव

कृषिपर केन्द्रित अछि। ओकरा सभक नैतिकताक कोटि ओहि पैघ समूहक अवलोकित कोटि सँ भिन्न अछि जाहिसँ ओ सभ घेरायल अछि। ओ मुक्त-प्रेमक सम्मान और आदर करैत अछि। ओकरा सभक पुरुष और महिला संग-संग मदिरा पान करैत अछि। ओकरा सभक पुरुष जखन भूखसँ मरै लगैत अछि तखन अपराधक जीवनमे लागि जाइत अछि। साधारण कृषक वर्गक विवर्ण जीवनक मध्यमे ओ जनजातीय सभ्यताक विरासतसँ अलंकृत जीवन जीबैत अछि। और एहन जीवन जीबैत ओ एकटा अन्तर्विरोधकेँ उत्पनन करैत अछि। ओ अपन विशिष्टता ताबत धरि सुरक्षित राखि सकैत अछि जाबत धरि ओ वास्तविकताक माँगक विरोध क' कय ओहि पुरान तौर-तरीकाक अनुसार जीवन जीवैत अछि जे समाप्त होयबाक लेल निराकृत अछि। जखनहि ओ आधुनिक तौर-तरीकाकेँ स्वीकारैत अछि तखनहि अपन विशिष्टता और अपन सांस्कृतिक परम्परा गमा दैत अछि। ताराशंकर देखोलनि अछि जे एहन घटित होइत अछि। अे कोनो प्रश्न नहि उठोलनि अछि। तथापि ओ एकटा संगत विषय प्रस्तुत कैलनि। भारतमे निर्धन और शोषित जन-जाति अपन सम्पन्न सभ्यताक विरासतक लेल ख्यात अछि। ओ समूह सभ्यतामे वेसी सम्पन्न अछि जे पुरान तौर-तरीका सभक कठोरतासँ अनुसरण करैत अछि। मुदा, एहन करबामे ओ विलुप्त भ' जाइत अछि। अपन विलोपनसँ बचबाक लेल ओ पैघ समाजमे विलीन भ' जाइत अछि और अपन सांस्कृतिक विशिष्टता हेरा दैत अछि। आधुनिक तौर तरीका सभक संग समन्वय स्थापित करैत, आर्थिक समस्याक समाधान करैत अपन विशिष्टता कायम राखब–एहि असंभव केँ ओ कोना प्राप्त क' सकैत अछि, ई प्रश्न उत्तरित नहि भेल अछि। कहार सभक छोट और विशिष्ट समाजक एकटा पैघ समाजमे विलीन भेनाइ ऐतिहासिक रूपेँ संसाधित अछि तथापि ई हमरा लोकनिक सहानुभूति उत्पनन करैत अछि किएक तँ एहन संसाधनक पाछाँ एक गम्भीर त्रासदी अछि। सघन बाँसक उपवनसँ घेरायल हँसुली–मोड़ प्रतीकात्मक अछि। ई कहार सभक आधुनिक समयसँ रक्षा करैत अछि और ओकरा भूतकालसँ बान्हि क' रखैत अछि। बाँसक उपवन काटि क' खसा देल जाइत अछि तखन कहार सब पुरान समयक मर्यादाकेँ पार करैत अछि और बीसम शताब्दीक क्रूर वास्तविकतामे पैर रखैत अछि। ताराशंकर कहार सभक बोलीक प्रयोग कयने छथि जे बीरभूममे बाजल जायवला बोलीसँ गोचर अछि। एहन करबामे ओ जीवित भाषाक परिचय देलनि एवं बंगला लेखक लोकनि द्वारा पूर्णतः उपेक्षित एकटा पैघ समस्याक समाधानक पथ देखोलनि अछि। बंगालमे प्राचीन कालहिसँ कृषक, बुनकर, मलाह, बड़ही, कुम्हार एवं दोसर अनौद्योगिक श्रमजीवी लोक सभ अपन कालक सन्दर्भमे अपन पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयोग कयने अछि। मात्र मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग अखन धरि बंगला साहत्यिमे लेखक उत्पन्न कयने अछि। तेँ जखन एहन लेखक एकटा मछुआरा अथवा कृषकक विषयमे लिखैत अछि तखन ओ पुरान पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयोग करैत अछि

जे ओ ओहि विषयपर अपन परोक्ष ज्ञानसँ अथवा शब्दकोषसँ प्राप्त कयने रहैत अछि। एतबा धरि जे जखन मानिक वंद्योपाध्याय "पद्म नदीर माँझी" लिखैत छथि तखन ओ आन स्थान सभपर अपन विशिष्टता देखवैत छथि मुदा एकटा मलाह द्वारा प्रयुक्त शब्दावलीक संचालनमे नहि। तेँ बंगला साहित्यक प्रारम्भहिसँ एकटा जीवित भाषाक सक्रिय-विरासत साहित्यमे सतत् बाधित रहल अछि। मात्र बोलीमे लिखव पर्याप्त नहि अछि। संवद्ध लोक सभक प्रतिदिनक जीवनमे प्रयोग कैल गेल शब्दावलीक अनिवार्य रूपसँ प्रयोग होयबाक चाही। एहि प्रकारेँ आइ बंगला साहित्यक भाषा शून्य और क्षीण भ' गेल अछि। मात्र उनैसम शताब्दीमे कालिप्रसन्न सिंहा, बीसम शताब्दीमे दिनेन्द्र कुमार रॉय एवं आधुनिक कालमे अद्वैत मल्ल बर्मन जीवित भाषाक सफल प्रयोग कैलनि अछि। मुदा एहिमे सँ क्यो पूर्ण विकसित उपन्यासकार नहि होयबाक कारणेँ हुनक भाषाक प्रयोग दोसर प्रभाव सभक लेल प्रशंसित भेल अछि मुदा बंगला साहित्यमे जीवित भाषाक प्रवेश करैबाक लेल नहि। ताराशंकर एहि भाषाक प्रयोग किछु प्रभाव मात्रक लेल नहि कैने छथि। ओ एकर प्रयोग साधारण तर्कक लेल कैने छथि जे ओ एकटा विशेष समुदायक विषयमे लिखि रहल छथि और तेँ ओहि समुदाय द्वारा प्रयुक्त भाषाक ओ प्रयोग कैने छथि। उपन्यासक संरचना आरो परिष्कृत भ' सकैत छल। पुस्तक बेसी संक्षिप्त भ' सकैत छल। एहि सभ त्रुटिक संग सेहो ई हुनक प्रमुख उपलब्धिमे सँ एक एवं हुनक लिखल अंतिम महान पुस्तक रहि जाइत अछि। ओ बादमे किछु नीक पुस्तक सभ लिखलनि, मुदा महान नहि। ओ महानता तखन प्राप्त कैलक जखन ओ सामग्रीकेँ प्रत्यक्ष जनैत छलाह। सुचाँदकेँ ओ प्रत्यक्ष जीवनसँ लेने छलाह। स्त्रीक कोमल सहज वृत्तिकसंग जनमल, एकटा स्त्री जकाँ वेश–भूषा रखनिहार और व्यवहार केनिहार अद्भुत नासुवाला सेहो प्रत्यक्ष जीवनसँ लेल गेल अछि। जखन ओ प्रत्यक्ष अनुभव सँ लिखैत छलाह तखन ओ सर्वश्रेष्ठ लिखैत छलाह। ओ कखनहु पूर्व विमर्शित कला-कौशल पर अधिकार प्राप्त नहि कैलनि और जखन ओ एहन करबाक चेष्टा कैलनि ओ विफल रहलाह। मुदा कोनहु प्रमुख उपन्यासकार जकाँ हुनक अस्तगमन मन्द और क्रमिक छल।

पुरान आलोचक "नागिनि कन्यार काहिनी" (सर्प-स्त्रीक कथा) क वड़ प्रशंसा कैने छथि, मुदा सर्प-भगवतीक मुख्य पुजारिन एवं मुख्य सर्प-चिकित्सकक मध्य युग-पुरान प्रतिद्वन्द्विताक कथा मुख्यतः साँप और ओकर आदत सभक विषयमे सार्वजनिक अज्ञानपर आधारित अछि। यदि क्यो ई बुझैत अछि जे साँप मात्र एक आन सरीसृप प्राणी, अपन अधिकारमे जन्तु-जगतक एकटा सदस्य थिक तँ कथा अविश्वसनीय लागत। यदि क्यो ई बुझैत अछि जे साँप एकटा सरीसृप प्राणी नहि भ' क' एक हजार चीज थिक तखन स्त्री सभक स्वभाव और व्यवहारमे साँप-सन वनवाक कथा आशु-विश्वासी प्रतीत होयत। एक गरीब, गामक प्राथमिक शिक्षक सीतानाथक कथा "संदीपन पाठशाला", एकरासँ

बड़ बेसी महत्त्वक अछि। एहन शिक्षकक त्रासदी हुनका लेल बड़ वास्तविक छल। ई शिक्षक जे राष्ट्रकेँ साक्षरतामे प्रवर्तित करबैत अछि ओ शिक्षक-वृन्दमे न्यूनतम वेतन भोगी अछि। ताराशंकर १९४६ ई.क पहिल संस्करणक भूमिकामे लिखलनि : ''पाठशालाक शिक्षक सभक विषयमे किछुओ कहबाक नहि अछि। हुनका सभक आवश्यकता और खुशी पूर्णतः उपेक्षित अछि। हुनका सभक विषयमे थोड़ सन हास्यजनक कथा सभ लिखल गेल अछि..... सीतानाथ हमरा लेल बड़ वास्तविक अछि। हम ओकरा जनने छी। ''उपन्यास'' १८९३/९४ ई. मे प्रारम्भ होइत अछि। एकटा कृषकक पुत्र सीतानाथ मैट्रिक पास करबामे विफल रहैत अछि मुदा गाममे शिक्षा प्रसारक उद्देश्यमे अपन जीवन समर्पित करबाक निश्चय करैत अछि। बादमे ओ एकटा प्राथमिक विद्यालय वा ''पाठशाला'' खोलैत अछि। पाठशाला चलैबाक ओकर पहिल प्रयास उच्च वर्गीय ग्रामीण सभक द्वारा विफल क' देल जाइत अछि जे ओकरा ईर्ष्यासँ एकटा खादी कटनिहार एवं राष्ट्रवादी विचारक उपदेशकक रूपमे पुलिसकेँ सूचित क' दैत अछि। ओ निम्न कुलक एकटा व्यक्तिक पढ़ैबाक साहस रखबाक अपमान बर्दाश्त नहि क' सकल। सीतानाथक संरक्षिका जमींदारक विधवा छली जकर पुत्र धीरनन्द सीतानाथक पूर्व-छात्र अछि और जे १९२१ ई. मे बन्दी बना लेल जाइत अछि। पुलिस सीतानाथकेँ पाठशाला बन्द करबाक लेल बाध्य करैत अछि। मुदा सीतानाथ एकटा वृक्षक तरमे बाहरी पाठशाला खोलैत अछि। दरिद्रतम परिवार सभसँ छात्र सभ अबैत अछि। ओकर एक छात्र छात्रवृत्ति पबैत अछि। अनेक विषमताक विरुद्ध और घोर गरीबीक मध्य सीतानाथ अपन पाठशाला चलबैत अछि। ओकर वैयक्तिक जीवन पूर्णतः उपेक्षित अछि। समय बदलैत अछि। १९३० ई. मे आयोजित एक सम्मेलनमे गाममे निःशुल्क पाठशाला चलैबाक निर्णय लेल जाइत अछि। सीतानाथ अत्यधिक पुस्कृत अनुभव करैत अछि। ओकर आँखि कष्ट दैत अछि और जखन ओ प्रायः आन्हर भ' जाइत अछि तखन सेवा-निवृत्त होयबाक लेल वाध्य भ' जाइत अछि। एहि बीच ओ अपन पत्नीकेँ गमा चुकल अछि। ओकर एकमात्र पुत्री विधवा भ' गेल अछि। सीतानाथ भाग्यक संग अपन सामंजस्य स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि। १९४७ ई. अबैत अछि। धीरनन्द, जे आब एक प्रसिद्ध लेखक अछि, सीतानाथसँ भेँट करबाक लेल अबैत अछि। ओ सीतानाथक आँखिक जाँच करबाक लेल ओकरा लग कलकत्ता ल' जैबाक प्रस्ताव रखैत अछि। स्वयंकेँ भाग्यकेँ समर्पित क' देबाक पश्चात् ओकरा शांति भेटि गेल अछि। धीरनन्द ओकर समक्ष झुकि जाइत अछि किएक तँ ओ सीतानाथमे महानता देखैत अछि। सीतानाथ एक प्रतिनिधिक भारतीय अछि जे अपन निम्न कुल स्वीकार करैत अछि तथापि समाजक प्रति जे वचन बद्धता ओ अनुभव करैत अछि ओकरा पूर्ण करबाक प्रयास करैत अछि। अंत धरि ओ जमींदार और ब्राह्मण सभक प्रति निष्ठावान रहैत अछि। ताराशंकर ओकरा, केहन होयबाक चाही, ओनहन नहि बनौलनि। ओ जीवनमे जे किछु प्रतीक

देखलनि ओकर अनुसारेँ सीतानाथकेँ चित्रित कयलनि। अत्यन्त हृदयस्पर्शी एहि कथाकेँ बड़ संयमक संग कहल गेल अछि जे ताराशंकरक सामान्य सद्‌गुण नहि थिक। ताराशंकरक गामक प्राथमिक शिक्षाक दशाक ज्ञानक कारणेँ कथा वास्तविक भ' गेल अछि। एक समय प्राथमिक शिक्षाक एकमात्र पाठशाला सभकेँ गाममे स्थापित नव प्राथमिक विद्यालय सभक संग-संग प्राथमिक विद्यालय सभ मे परिवर्तित क' देल गेल। ओ सरकारी कानून और संशोधनक आधार पर प्राथमिक शिक्षाक इतिहासक रूपरेखा प्रस्तुत कैलनि। गाममे एकटा प्राथमिक स्कूल शिक्षकक जीवन पर बादक लेखक सभक द्वारा विचार नहि कैल गेल अछि यद्यपि प्राथमिक शिक्षक अखनहु निर्दयतासँ उपेक्षित छथि और अखनहु ओ राष्ट्रकेँ भीषण निर्धनता एवं दुर्भाग्यक बीच साक्षरतामे प्रवर्तित करैत आबि रहल छथि। सीतानाथ पुस्तकक सर्वोत्तम चित्रित चरित्र अछि। आन सभ पात्र गौण भ' जाइत अछि और सीतानाथक चारू दिस घुमैत अछि। धीरनन्दक संग, जे अंशतः स्वयं लेखकक चित्रण थिक, लेखकक सहानुभूति देखल जाइत अछि, मुदा धीरनन्दक काज उपन्यासमे थोड़ सन अछि।

चिकित्सा महाविद्यालयसँ उपाधि नहि प्राप्त कैनिहार एक चिकित्सकक विषय मे एक उपन्यास "आरोग्यनिकेतन" (एकटा अस्पतालक नाम) क विषयमे बहुत किछु कहल गेल अछि। एक समर्पित ग्राम-चिकित्सकक विषयमे ई उपन्यास, विषय-वस्तुक दृष्टिमे एक पुस्तकसँ बेसी महत्त्वक अछि। नायक जीवन मोशाय नब्ज बड़ नीक जकाँ पढ़ि सकैत अछि और आसन्न मृत्युक विषयमे ओकर ज्ञान अलौकिक अछि। चिकित्सकक रूपमे ओकर ई कर्त्तव्य थिक जे ओ लोक सभक मृत्युसँ रक्षा करबाक प्रयास करय। एकटा रूमानीक रूपमे ओकरा मृत्युक कल्पनासँ प्रेम अछि। ओ मृत्युक कल्पना एक भयानक रूपसँ मोहक स्त्रीक रूपमे करैत अछि। ओ असकर, एकक पश्चात् दोसर विषय–वस्तुक रचनाक अवसर दैत अछि। ओकर अतीत और मंजरीक लेल ओकर युवा प्रेम सम्पूर्ण पुस्तकमे अंत धरि नायकक संस्मरण सभक माध्यमसँ व्याप्त अछि और अन्तमे मंजरी एक वृद्धाक रूपमे चित्रित भेल अछि। पुनः ओकर वैयक्तिक जीवन एक पृथक विषय-वस्तु थिक। ओकर पत्नी जे एक तीक्ष्ण बजनिहार एवं स्वत्वबोधक महिला अछि, क संग ओकर तनावपूर्ण सम्बन्ध अछि। जखन ओकर एकमात्र पुत्र मुइल छल तखन शान्त रहबाक कारणेँ ओ ओकरा कखनो क्षमा नहि कैलक। जीवन मोशायक कथाक संग-संग चिकित्सा शास्त्रक पुरान आयुर्वेदिक पद्धति और व्यवहृत आधुनिक पद्धतिमे अनुरूपता लेखककेँ औषधीय प्रणालीक दुनू शाखाक विषयमे अपन व्यक्तिगत विचार अभिव्यक्त करबाक अवसर दैत अछि। ताराशंकर दृढ़ विश्वासक संग लिखैत छथि जे पुरान आयुर्वेदिक चिकित्सक भाग्य और ईश्वरक शक्तिकेँ स्वीकार करैत अछि, मुदा आधुनिक व्यवसायी नहि। जाहि ठाम आयुर्वेदिक प्रणाली शरीरकेँ रोगमुक्त करैत अछि एवं चित्तक स्वासथ्य लाभक ध्यान रखैत

अछि ओहिठाम आधुनिक प्रणाली एकमात्र शरीरक स्वास्थ्यलाभमे संलग्न रहैत अछि एवं वैज्ञानिक शोध द्वारा प्राप्त शक्तिक अतिरिक्त कोनो शक्तिकेँ नहि स्वीकार करैत अछि। पुस्तक एहन सामान्यानुमान सभसँ भरल अछि। जीवन मोशाय पुरान विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैत अछि। एकटा युवा-चिकित्सा व्यवसायी नव विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैत अछि। ओ संघर्ष करैत अछि और एक-दोसराकेँ बुझतै जाइत अछि और अन्तमे दुनूक मध्य एक स्निग्ध सम्बनध उत्पन्न होइत अछि। जाहि तरहेँ लोक आसन्न मृत्युक प्रति प्रतिक्रिया देखबैत अछि ओ जीवन मोशायकेँ मोहित क' लैत अछि। ओकरा ई देखबामे आनन्द अबैत अछि जे लोक ओकर प्रेयसी मृत्युक पदचापपर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि। ओ अपन मृत्युक प्रतीक्षा सेहो करैत अछि। मंजीरक स्मरणक प्रति निष्ठा ओकरा अपन पत्नी अतरकसंग गम्भीर सम्बन्ध नहि बनबै देलक। यैह कारण अछि जे वृद्धावस्थामे दुनू अपन-अपन एकान्तमे दफनायल अछि। आब मात्र मृत्यु जीवन मोशायकेँ अपराध और विषादक स्मृतिक देवालक मध्य स्वगृहीत बन्दीकरणसँ मुक्तक' सकैत अछि। जीवन मोशायकेँ छोड़ि आन सभ पात्र आन पुस्तक सभमे ताराशंकर द्वारा पूर्व निर्मित पात्र सभक रूपान्तरण थिक। अतर ''धतृदेवता'' क गौरीक अतिरिक्त विकास थिक। रचना असंगठित एवं जीवन मोशायक संस्मरणात्मक प्रलापसँ बोझिल अछि। भारतीय मृत्यु-दर्शनक चित्रणक लेल पुस्तक अत्यन्त प्रशंसित भेल आछे। एहन चित्रण आधुनिक पाठकक लेल बोधगम्य हैत अथवा नहि ई पूर्णतः ओहि पाठकपर निर्भर करैत अछि जे एकरा पढ़ैत अछि। संदिग्ध मस्तिष्क वला पाठक सभक लेल एहन चित्रणकेँ स्वीकारब कठिन भ' सकैत अछि। मुदा जीवन मोशायक चरित्र एवं किछु आन प्रसंग पाठकक स्मृतिमे दीर्घकाल धरि रहत, जेना कि मंजरीक संग जीवन मोशायक अन्तिम भेँट। मंजरी ओकरा लेल मृत्युक संदेश अनैत अछि किएक तँ एकर पश्चात् ओ शीघ्रहि मरि जाइत अछि। मृत्युसँ ओकरा अन्तिम शांति भेटैत अछि।

अपराध और दण्ड, पाप और प्रायश्चित, कानून और अपराधी दीर्घ समय धरि ताराशंकरकेँ आकर्षित कयलक और अपन सम्पूर्ण लेखनक जीवन वृत्तिमे ओ एहि विषय–वस्तु सभक विषयमे लिखने छथि। ''विचारक'' (न्यायधीश) मे नायक न्यायधीश पाश्चातापक पापशंका भोगैत अछि जखन ओ एकटा अपराधीकेँ आश्चर्यजनक परिस्थितिक दवाब मे अपन भायक मृत्युक कारण बनबाक दोषी ठहरबैत अछि किएक तँ ओ अपन जुआनीकेँ स्मरण करैत अछि जखन ओ अपन पहिल पत्नीकेँ जरि क' मरैसँ नहि बचैने छल। सिद्धदोषीक कथा और ओकर अपन कथा समानान्तर चलैत अछि। कथावस्तु पाठककेँ टैगोरक एक-दूटा लघुकथा सभक स्मरण करा सकैत अछि। अपराध और दण्डक ई कथा नाटकसँ प्रभावित, सुगठित और अत्यन्त नीतिसंगत अछि। धर्मोपदेश और संदेश सभसँ भरल रहितहुँ ई एक लघु पुस्तकक रूपमे रोचक अछि किएक तँ ई हुनक

विस्तृत उपन्यास सभ जे ओ साभान्यतया लिखैत छलाह ओकरासँ भिन्न अछि । हुनक सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास सभमे सँ एक ''सप्तपदी'' (सात पद) एहन एक व्यक्तिक स्मरणमे लिखल गेल छल, जकरा लेखक १९१६ ई. क आरम्भमे जनने छलाह । ई हिन्दू व्यक्ति एक छात्रक रूपमे कलकत्ता आयल छल और एकटा एंग्लो इंडियन लड़कीसँ प्रेम करय लागल छल । स्वयंकेँ ईसाई धर्ममे परिवर्तित करबाक पश्चात् ओ ओकरासँ विवाह करबाक निश्चय क' लेने छल । चालीस वर्षक पश्चात् ताराशंकरकेँ ओ व्यक्ति हिमालय पर्वतक मध्य एक छोट सन गिरजाघर मे भेटल । ओ व्यक्ति कहलक जे ओ लड़की ओकर आँखि खोलि देने छल किएक तँ औ एहन व्यक्तिसँ विवाह करबासँ अस्वीकार क' देने छल जे एकटा लड़कीक लेल अपन धर्म त्यागि सकैत अछि । ताहि हेतु ओ व्यक्ति ईश्वरक सेवा करय लागल किएक तँ मात्र ईश्वरे ओकरा एक स्त्रीक प्रेमसँ महत्तर प्रेम द' सकैत छल । नायक, श्रद्धेय कृष्णस्वामी एही व्यक्तिक चरित्रपर आधारित अछि । द्वितीय विश्वयुद्धक एक सुन्दर शिविर-पारिचारिका हुनका नायिकाक कल्पना देलक । सुलिखित और संक्षिप्त ई पुस्तक मात्र अपन रोचकताक लेल अखनो स्मरण कैल जाइत अछि । किएक तँ एहि पुस्तककेँ लिखबाक लेल ताराशंकर अपन सुविदित क्षेत्र, ग्राम और ग्रामीण सभसँ विषयान्तर भ' गेल छलाह । भौतिक लालसाक खोजमे मृत्युमे अन्त पएनिहार एक नास्तिकक कथा ''योगभ्रस्ट'' क विषय-वस्तु थिक । नायक सुदर्शन आधुनिक डॉ. फॉस्ट थिक । ओ अपन अन्वेषण ईश्वरक ज्ञानसँ प्रारम्भ करैत अछि मुदा स्वर्ण मूर्तिकेँ पिघलाबैपर समाप्त करैत अछि जे ओकर प्रियाकेँ संत्रस्त क' दैत अछि । उटपटांग घटना सभक क्रम एवं सुदर्शन द्वारा कैल गेल हत्या सभक पश्चात् ओ बन्दी बना लेल जाइत अछि और मृत्युसँ दण्डित कैल जाइत अछि । ओ मृत्यु–कक्षमे अपन जीवन-कथा अपराध-स्वीकरणक रूपमे लिखैत अछि । एहि पुस्तकमे ताराशंकर सुदर्शनक पतनक आरोपण ओकर नास्तिकता पर करैत छथि । जहिना नायक ईश्वरकेँ अस्वीकार करैत अछि ओकर पतन प्रारम्भ भ' जाइत अछि । लेखकक नैतिक मनोवृति होइतहुँ सुदर्शन एक रूचिकर पात्रक रूपमे प्रकट होइत अछि । ओकरामे जीवनक लेल उत्साह, कामुकता, शक्ति, लाभ और जिज्ञासा–सभक अधिकता अछि । ओ एक अपराधी होएब पसिन्न करैत अछि किएकतँ अपराधीक जीवन ओकरा स्वतन्त्रता दैत अछि । ई पुस्तक छोट अछि मुदा सुदर्शनक चरित्र-चित्रण ई दर्शबैत अछि जे ताराशंकर सुदर्शन सन लोक सभकेँ नहि बिसरल छथि, अपन अपरिष्कृत, आदिम रूप मे भेटयवला लोक, एहन लोक जे जीबाक लेल जीबैत अछि और एहि प्रकारेँ रूढि बद्ध पाखंडी समाजमे अनुपयुक्त सिद्ध भ' जाइत अछि ।

मुदा ई सभ एवं आनो बहुत सभ पुस्तक जे ओ अपन अन्त समय धरि लिखैत रहलाह, उपन्यासकारक रूपमे हुनक क्रमिक ह्रास दर्शबैत अछि । ''हाँसुली बाँकेर उपकथा'' हुनक लिखल अन्तिम महान रचना अछि । अन्त समयक आसपास ओ स्वयंकेँ प्रायः

दोहरौलनि । एक भावनात्मक एवं आवेगशील लेखकक रूपमे ओ जे देखलनि, सभक विषयमे लिखलनि ओ जे शहरमे रहलाह ओहिमे हुनक जड़ि कहियो नहि जमल । ओ पूर्वविमर्शित और उपार्जित ज्ञानक आधारपर लिखनिहारमे सँ नहि छलाह । तेँ जखन ओ शहरी विषय-वस्तुपर लिखलनि, ओ असफल भ' गेलाह । नैतिकताक अभाव, नास्तिकता और विश्वासक अभाव प्रायः हुनक ध्यानकेँ घेरलक । एकटा उपन्यासकारक रूपमे ई सभ हुनकर मदद नहि कैलक । ''हाँसुली बाँकेर उपकथा'' क पश्चात् ओ अठ्ठासी पुस्तक लिखलनि जाहिमे कतेको उपन्यास छल मुदा ओहिमे सँ कोनहु मे ओ अपन पुरनाशक्ति नहि देखयलनि ।

अध्याय १०

उपन्यासकारक रूपमे ताराशंकरक की उपलब्धि अछि ? हुनक परिसम्पत्ति की अछि और कोन सभ वात मे हुनक असफलता निहित अछि। गत कैक वर्षसँ आलोचक पाठक सभपर निरन्तर ई बल दैत आबि रहल छथि जे एकमात्र शरत्चन्द्रकेँ छोड़ि ताराशंकर, विभूतिभूषण और माणिक ई॰ तीनू वनर्जी, टैगोरक पश्चात् वंगला-उपन्यासक इतिहास मे तीनटा मीलक पाथर छथि और ताराशंकर तीनूमे सभसँ महान छथि। आलोचनात्मक एवं वस्तुगत दृष्टिसँ ताराशंकरक उपलब्धिक मूल्य निर्धारण करवाक समय आवि गेल अछि। वंगला आलोचनामे आइ वस्तुपरकता प्रायः अविद्यमान अछि। गत बीस सालसँ प्रत्येक साल हमार सभकेँ एकटा बंगाली रोमाँ-रोलाँ अथवा एकटा बंगाली दोस्तोएवस्की अथवा एकटा बंगाली टॉल्सटॉयसँ परिचय करा देल जाइत अछि। विभिन्न दल अपन-अपन दलक लेखक सभक लेल सभसँ ऊँच पीठिका बनवैवला चेहरा सँ वेसी व्यस्त अछि। एहन एकपक्षीय आलोचना वास्तवमे एकटा प्रभावशाली लेखककेँ कोन सीमा धरि क्षति पहुँचा सकैत अछि एकर सभसँ नीक उदाहरण माणिक वनर्जी छथि। हुनक सभसँ नीक रचना "पद्मा नदीर माँझी" और "पुतुल नाचेर इतिकथा", द्वितीय विश्वयुद्ध सँ बहुत पहिनहि प्रकाशित भेल छल। चारिम दशकक प्रमुख उपन्यासकार सभमे सँ एकक रूपमे हुनक उचित प्रशंसा कैल गेल छल। मुदा, युद्धक समयमे अपन दृढ़ धारणाक कारणें ओ साम्यवादी सभसँ मिली गेल छलाह। बादमे जे सभ पुस्तक ओ लिखलनि से पहिलुक दुनू रचनाक पराकष्ठा धरि नहि पहुँचल। शीघ्रहि पूर्व आलोचकक हुनका प्रति उत्साह शान्त पड़ि गेल, जे कि पुनः गलत छल, एवं आलोचनाक एकटा नव शाखा हुनक वादक लिखल गेल रचना सभपर, जे पूर्व लिखित दुनू उपन्यासक समकक्ष नहि छल, जोड़ दैत हुनक प्रशंसा प्रारम्भ क' देलक। आजुक एकटा शाखा बादक उपन्यास सभपर कम वल दैत अछि तँ दोसर शाखा पहिलुकपर। माणिक बनर्जी एहिपर केहन प्रतिक्रिया करितथि एकर अनुमान लगैबाक प्रयास नहि करब बेसी नीक अछि किएक तँ हुनक विचार बड़ स्वतंत्र छल और हुनक प्रतिक्रिया प्रभावशाली होइत छल।

आन दुनू लेखकक संग तुलना करैत ताराशंकर वंद्योपाध्यायक आकलन करव

सम्भव नहि अछि । तीनू एक दोसरासँ सुस्पस्ट ढंगसँ भिन्न छलाह । मतैक्यताक एहन कोनो बिन्दु नहि अछि जकरा ओ सभ एक संग बँटैत छथि । ताराशंकर, सामाजिक ढाँचाक हृदयमे लागल घुनक विश्लेषक नहि छथि और ने पहिलुक उल्लिखित दुनू रचनामे माणिक बनर्जी सन् भाग्यवादी । हुनकामे विभूति भूषणसँ समानताक सेहो कोनो विन्दु नहि अछि, मुदा कोन लेखकमे अछि ? विभूति भूषण जकाँ जीवनक रहस्य और प्रकृतिसँ प्रेम करबाक लेल बड़ बेसी मानसिक क्षमता और विवेक अपेक्षित अछि । ''पथेर पाँचाली'' क अपुक शैशवक विपत्ति और गरीबीक स्मरण के करैत अछि ? मात्र एकटा शिशुक काल्पनिक आँखिसँ देखल गेल मोहक संसारक स्मरणे सदिखन पाठकक संग रहि जाइत अछि और ओ लेखकक प्रति ओकरा मानव-मनोभाव तथा एक जंगली फूलक पँखुड़ीमे समान रूपसँ अभिव्यक्त परमानन्दकेँ अनुभव करबाक और देखबाक अनुमति देबाक लेल कृतज्ञ अनुभव करैत अछि । बंगला साहित्यमे विभूतिभूषणक कलाक नहि तँ पूर्ववर्तिता अछि और न उत्तरवर्तिता । ओ बंगला उपन्यास परम्पराक तर्क संगत निष्कर्ष नहि छथि । कोनो आन लेखक ''पथेर पाँचाली'' या ''अरण्यका'' (जंगल) नहि लिखि सकैत छल कियैक तँ एकटा ग्रामीण बालकक शैशव अथवा एक अक्षत जंगलक आदिम और भव्य सुन्दरता ओकरा एक प्रमुख उपन्यासक अनुकूल विषय नहि प्रतीत हैत । विभूति भूषण आन कोनहु लेखकसँ विशेष रूपेँ अप्रभावित एकमात्र लेखक छथि । माणिक बनर्जीक प्रमुख कथा सभ सेहो जगदीश गुप्तक आलोचनात्मक विश्लेषण और अवचेतनमे नुकायल दुष्टताक परीक्षण करैत अनावरण करबाक किछु प्रभाव सभकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि । अन्यथा माणिक बनर्जीकेँ सेहो हुनका समय धरि बंगला उपन्यासक परम्परासँ बहुत किछु बाहर कहल जा सकैत अछि ।

मुदा ताराशंकरक विषयमे ई बात नहि कहल जा सकैत अछि । ओ विषय वस्तुक चयनमे, प्राचीन मान्यता सभक समर्थनमे, महाकाव्य और मिथक शास्त्रमे आपस जायमे–वहुत किछु परम्परावादी मनुष्य छलाह, जखन कि आन दुनू एहन नहि छलाह । यद्यपि विभूतिभूषणकेँ महाकाव्यक गम्भरी ज्ञान छलनि ।

ताराशंकर पाठक वर्ग द्वारा एतेक सहजतासँ कियेक स्वीकार कैल जाइत छलाह ? उत्तर मुख्यतः हुनक विषय सभक चयनमे निहित अछि । सर्वप्रथम ओ तीन महकाव्यात्मक उपन्यासक सफलताक संग ई प्रमाणित कैलनि जे जखन एकटा लेखक एक विशेष व्यक्ति अथवा परम्पराक विषयमे नहि लिखि एक पूर्ण जनसाधारणक विषय मे लिखैत अछि तखन पाठकक अधिकतम संख्या धरि पहुँचब बेसी सरल भ' जाइत अछि । दोसर, ओ एहन किछु नहि लिखलनि जकर स्वीकार्यताक खण्डित होयबाक संभावना छल । यद्यपि ओ निरन्तर मानव उन्नतिक विषय मे लिखलनि, ओ एक परम्परा–प्रेमी छलाह जे राष्ट्रक मनमे बड़ बेसी गम्भीरतासँ बद्धमूल छल । और अन्तमे ओ प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुभवक आधारपर

ग्रामीण बंगालक विषयमे लिखैत छलाह, जाहि सँ ओ चारिम और पाँचम दशकक पाठकक, जिनक जड़ि ग्राममे छल, निष्ठा जीति लेलनि। आगाँ चलि बुद्धिजीवी सभक दिगूविन्यास शीघ्रतासँ नगरीय भेल गेल। और एहिठाम, ई उल्लेख करब असंगत नहि हैत जे मात्र ग्रामीण विषय-वस्तु वला उपन्यासे बंगला साहित्य मे गौरव ग्रन्थ मानल जाइत अछि। बड़ आश्चर्यजनक रूपसँ बंगला साहित्यमे प्रायः सभ उल्लेखनीय उपन्यास (टैगोरक उपन्यास सभक अपवादक संग) ग्रामीण विषय-वस्तुपर आधारित अछि। आधुनिक लेखक सेहो जखन किछु विशेष लिखबाक प्रयास करैत छथि तखन ओ ग्रामीण विषय-वस्तुपर लिखबाक प्रयास करैत छथि। सम्भवतः हमरा सभक मन अखनहु गाममे बद्धमूल अछि। किनको ई कहब आश्चर्यजनक नहि अछि, ''वास्तवमे हम अमुक गामक छी'' यद्यपि ओकर परिवार पिछला चारि पीढ़ीसँ कलकत्तामे रहि रहल अछि।

ताराशंकर जखन लिखब आरम्भ कैने छलाह तखन ओ एहि पक्ष पर पूर्वविचार नहि कयने छलाह। एकटा भावनात्मक एवं आवेगशील लेखकक रूपमे ओ मात्र ओही विषयपर लिखि सकैत छलाह जकरा ओ प्रत्यक्ष रूपेँ जनैत छलाह। यद्यपि ओ मानव-भूगोल अथवा मानव-आलेखक विषयमे लिखिनिहार पहिल लेखक नहि छथि तथापि पहिल सफल लेखक अवश्य छथि। हुनक महाकाव्यात्मक उपन्यास एकर प्रमाण थिक। ग्राम एवं ग्रामीण लोक सभक विषय मे लिखैत ओ कोनो नव क्षेत्रक विश्लेषण नहि कैलनि कियैक तँ शरत्चन्द्र चटर्जी और किछु अल्पज्ञात लेखक सेहो गामक विषय मे लिखि चुकल छलाह। मुदा शरतचन्द्रकेँ ताराशंकर सन ज्ञान और विस्तृत दृष्टि नहि छल। हुनकामे ताराशंकरक इतिहास बोधक कमी छल।

अपन विषयक प्रत्यक्ष ज्ञान ताराशंकरक सम्पत्ति छल। विषय हुनका लेल सर्वोच्च महत्त्वक छल। हुनक सफलताक रहस्य कोन बात मे निहित अछि ? गाम मे जन्म लेबाक कारणेँ ओ बुझि गेल छलाह जे गामक आर्थिक संरचना शहरी अर्थव्यवस्थाक लगातार दवाबक कारणेँ एकटा सशक्त परिवर्तनक अनुभव क' रहल अछि। ओ ई स्पष्ट अनुभव कैलनि जे यद्यपि पश्चिम बंगालक गामक विनाशक कोनो एकटा कारण छल तँ ओ छल कलकत्ता और सटल औद्योगिक क्षेत्र सभक अत्यधिक वृद्धि। एहन एक–पक्षीय वृद्धि अस्वास्थ्यकर छल और ओ शीघ्रतासँ गामकेँ अशक्त क' रहल छल। ओ देखलनि जे ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक विकास पूर्ण रूपेँ उपेक्षित छल जे एक कृषि-प्रधान देशक लेल सांघातिक भूल छल। हुनक उपन्यास दर्शबैत अछि जे कोना निर्धन कृषक-मजदूर भूस्वामी और साहूकार सभक द्वारा जानि-बूझि कए निर्धन बना देल जाइत अछि और कोना ओ रोजगारक खोजमे गाम छोड़बाक लेल बाध्य भ' जाइत अछि। ई ज्ञान निश्चित क' देलक जे हुनकर दृष्टि केहन होबाक चाही।

तत्पश्चात् अपन विषय धरि पहुँचबाक लेल ओ मुगल शासनसँ ल' क' हमरा सभक

अपन समयक भूमि व्यवस्थाक अत्यन्त कठिन ज्ञानसँ अपनाकेँ पुष्ट क' लेलनि। इतिहास एवं प्रलेख सभक अध्ययनसँ एहन ज्ञान उपार्जित करब हुनका लेल अत्यन्त प्रशंसनीय छल किएक तँ कृषक-वर्गक विषयमे आधिकारिक और विश्वसनीय रूपसँ लिखबाक लेल वैह एक मार्ग आछि। ओ भूमि-निर्धारण, भूमि-वितरण, वरगादरी व्यवस्था, भूमि-राजस्व, कानून और भूमि-सर्वेक्षणक विषयमे जनैत छलाह। ओ जनैत छलाह जे कहिया डोरीसँ सर्वेक्षण समाप्त कय देल गेल और जंजीरसँ सर्वेक्षण आरम्भ कैल गेल। ओ जनैत छलाह जे भूमि-नापमे कहिया ''बीघा'' (एक एकड़क एक तेहाइ) शब्द स्वीकार कैल गेल एवं ''कुदा'' अथवा ''कुदावा'' छाँटि देल गेल। ओ प्रत्येक कर-सुधार, उगाही और भूमि-चकबन्दीक विषयमे जनैत छलाह। ओ जनैत छलाह जे पश्चिम बंगालमे भूमि-कर-भुगतानक कतेक प्रक्रिया प्रचलित छल। ई सभ निःसन्देह दोसर लेखक सभक अपेक्षा हुनका बेसी लाभ देलक। देश कोनो अमूर्त्त वस्तु नहि थिक। देश, जनता, माटि, फसल, कृषि, करारोपण, राजस्व, कृषि-, ऋण, नहर-कर, फसल-क्षय, अकाल, बाढ़ि और भूमिहीन कृषि-मजदूर सभ द्वारा देहतोड़ परिश्रम थिक।

हुनकर अतिरिक्त लाभ एक दिस हुनक वेद, पौराणिक कथा, दन्त-कथा और लोक-साहित्यक ज्ञान छल एवं दोसर दिस ओहि लोक सभक ज्ञान छल जकरा विषयमे ओ लिखैत छलाह। हुनकर पात्र वास्तविक लोक सभ अछि। ओ जनैत छथि जे मुकुन्द पाल सन एकटा कृषक जे धान सँ लहलहाइत खेतक फसिल स्वयं नहि काटत, तँ केहन अनुभव करत। ओ जनैत छथि जे नसुबाला सन सनकी ग्रामीण केहन अनुभव करैत अछि और कोना प्रतिक्रिया करैत अछि एवं डाइनक रूपमे निन्दित एक महिला अपन प्रवासमे मृत्युक प्रतीक्षामे दफन भ' क' वैसल रहैत अछि।

ई कहब संभवतः मिथ्या नहि हैत जे उपन्यासकारक रूपमे हुनक कलात्मक सफलताक रहस्य हुनक ओहि विषयक ज्ञानमे निहित छल जकरा विषयमे ओ लिखैत छलाह। ओ ई सोचैत छलाह जे एहन ज्ञान एकटा लेखक लेल आवश्यक अछि—ई हुनक मरणोपरान्त प्रकाशित उपन्यास ''शताब्दीर मृत्यु'' सँ पुनः प्रमाणित होइत अछि। एहि पुस्तकक लेखनमे ओ अपन चिर-परिचित भूमि, बीरभूमक एक गाम केँ पाछाँ छोड़ि देलनि। ई उपन्यास कलकत्तासँ सटल एकटा गामक एक लड़काक विषयमे अछि जे पढ़बाक लेल शहर अबैत अछि। एहि ठाम पुनः ताराशंकर शहरक वृद्धि और प्रसारक एक रोचक कालक चयन कैलनि। वास्तवमे ओ मानैत छथि जे मात्र सामन्ती परिवार सभक अपमानजनक कथाकेँ भावुक बनैनाइ और ओकर राग अलापब पर्याप्त नहि अछि जेहन कि किछु आन लोकनि कैने छथि। ई नगरक निर्माण सामन्त सभ नहि कैलक। कलकत्ता जे कि जंगल थिक, ओ व्यापार और वाणिज्यपर फड़ल-फूलल अछि एवं ताराशंकर ई देखैबाक प्रयास कैलनि अछि जे कोना लोक व्यापार और वाणिज्यक आधारपर धनी भ' जाइत अछि,

ओ जमींदार सभक अनुकरण करबाक प्रयास करैत अछि एवं एहि तरहेँ नगरक उन्नतिमे नहि अपितु ओकर अपकर्षमे सहयोग दैत अछि। विषय-वस्तु अखनुक पाठक लोकनिक लेल दुगुना-रोचक अछि किएक तँ शोधकर्त्ता सभक माध्यम सँ हमरा लोकनि आब ई जानि गेल छी जे बंगाली लोक अठारहम शताब्दीक अन्त और उनैसम शताब्दीमे उत्साही उद्योगपति और व्यापारी छल। वास्तवमे बहुतो व्यापारी-गृह हुनके सभ द्वारा स्थापित कैल गेल अछि। जखन ओ लोकनि औद्योगिक पूँजीपति सभक आत्म-निर्वाचित भूमिकाक पालन करबासँ अस्वीकार क' देलनि और ह्रासोन्मुख सामन्त सभक अनुकरण करबाक प्रयास कैलनि तखन ओ लोकनि राज्यक उद्योगक आर्थिक संरचनामे हिस्सेदारीक सुयोग गमा देलनि। ताराशंकरक ई निर्दिष्ट करब उचित अछि जे उनैसम शताब्दीक पुनर्जागरण ओहि ह्रासोन्मुखी लोक सभक द्वारा नहि उत्पन्न कैल गेल छल जे अपन धन गणिका सभ पर व्यय करैत छल और अपन स्त्रीकेँ सतबैत छल। ताराशंकर जनैत छलाह जे एहि बेरओ भिन्न विषय उठा रहल छथि और शहरक विकासक विषयमे पढ़बाक और अध्ययनकरबाक पश्चात् ओ विषय-वस्तुक संग न्याय करबाक प्रयास कैने छलाह।

ई एकटा उपन्यासकारक रूपमे हुनक सफलता और उपलब्धिक रहस्य छल। कथा कहबाक लेल ओ स्पष्ट ढंग अपनौलनि जाहिसँ हुनका आरो बेसी मदति प्राप्त भेल। मानव-मनक नाटकीय, विकराल और वक्र ढंगमे रूचि रखनिहार पाठक सभकेँ ओ मुख्यतः अपन कथा कहबाक सम्मोहक ढंगसँ आकर्षित करैत छलाह। पाठकगण कथा सभक हुनक उत्कृष्ट पठनीयताक लेल पढ़ैत छल, पुनः ओहिमे सँ गम्भीर लोक रहस्यमय गम्भीरता और विस्तृत आयाम तकैत छल। पाठक प्रभावित छल कियैक तँ कथा और उपन्यास सभमे वर्णित लोक सभक अस्तित्वक विषयमे ओ जनैत छल मुदा ताराशंकरकेँ पढ़बासँ पूर्व ओ ई नहि जनैत छल जे हुनक ज्ञान मात्र सतही छल एवं जनबाक लेल अखनहु बहुत किछु शेष छल।

ताराशंकरक भाषा सेहो एकटा गुण छल। हुनक भाषामे चातुर्य, कृत्रिमता और कलाकौशलक अभाव छलमुदा ओजस्वी और समृद्ध छल। जाहि तरहेँ ओ संस्कृत निष्ठ शब्द सभकेँ बंगलाक चालू भाषाक संग मिलौने छलाह ओ सोलहम शताब्दीक ग्रामोत्पन्न कवि कविकंकण मुकुन्दराम चक्रवर्तीक स्मरण करबैत छल। एहि सुविख्यात कविक भाषा सेहो हुनक संस्कृत और ग्रामीण बोलीसँ घनिष्ठ परिचयक छाप रखैत अछि। हमरा सभक ग्रामीण लोक एवं ओहिमे निरक्षर सेहो अपन साधारण वार्तालापमे संस्कृत-निष्ठ शब्द सभक सुगमतासँ व्यवहार करैत अछि। हुनका सभक द्वारा व्यवहृत शब्दावली ओहि महाकव्य, मिथकशास्त्र और पुराण सभक परम्पराक वहन करैत अछि जकरा संग ओ पलैत-बढ़ैत छथि। एवं अन्ततः जेहन कि पहिनहि स्पष्ट कैल गेल अछि, ताराशंकर साधारण लोक सभ द्वारा व्यवहृत शब्द और भाषा पद्धतिसँ युक्त जीवन्त भाषाक सफलतापूर्वक प्रयोग

कैनिहार प्रथम लेखक छलाह। दीर्घ समय धरि साहित्यमे प्रवेश सँ वंचित ई जीवित भाषा ताराशंकर द्वारा वयवहृत भ' कय बंगला भाषाक एक अरक्तक शून्यताक अवस्थासँ ओकर पुनरूज्जीवनक दिस संभावनाक नव आयाम खोलि देलक। एक कृषक अथवा एक मलाह द्वारा व्यवहृत उपयुक्त और ओजस्वी शब्दावलीक व्यवहार करबाक लेल लेखकेँ एकटा कृषक अथवा मछुआरा हैब आवश्यक नहि अछि। मध्यम वर्गीय एक लेखककेँ ताराशंकरक ज्ञान और अनुभव नहि भ' सकैत अछि, तथापि साधारण लोक सभक विषयमे लिखैत ओ हुनक भाषा सीखि और लीखि सकैत अछि। आइ हमरा सभक लेखक ज्ञानक क्षमत्ताक अनिवार्यताकेँ अस्वीकार करैत अछि और मात्र अपन अनुभवसँ लाभ उठबैत अछि जे कि बड़ सीमति अछि और वास्तविक जीवनसँ नहि केर बराबर अभिज्ञेय अछि।

और अन्ततः एकटा ग्रामक कथा कहनिहार सदृश ताराशंकर बड़ वास्तविकता और तटस्थताक संग अपन तीन प्रधान उपन्यास सभक सदृश कथा कहलनि और एहि प्रकारेँ ऐतिहासिकताक बोध प्रदान कैलनि। पाँचो गाम और कहार सभक विषयमे उपन्यासकेँ पढ़ैत पाठक एहन अनुभव करैत अछि जे एक इतिहासकार एक सम्पूर्ण जातिक उन्नति, अवनति, पुनरारम्भ और पुनरूत्थानक इतिहासक वर्णन क' रहल अछि। ओ जाहि तरहक उपन्यास लिखलनि ओकरा लेल ई स्वयंमे एकटा कलात्मक उपलब्धि अछि।

ई सब हुनक पूजी छलनि। कतय ओ विफल रहलाह? विषय-वस्तुक चयनमे जखन ओ अपन प्रत्यक्ष अनुभवसँ, जाहि संग ओ पैघ भेल छलाह, सँ पृथक होइत छलाह तखन ओ पाठक सभ धरि पहुँचबामे और ओकरा द्रवित करबामे विफल भ' जाइत छलाह। ई सत्य अछि जे बादमे ओ अपन चारू दिसक नगर-जीवनक अनुभवपर आधारित विषयपर लिखलनि। राष्ट्रीय घटना सभ, जेना दंगा और भारतक विभाजन, भारतक स्वाधीनता आदि एक मनुष्यक रूपमे हुनका उत्तेजित कैलक एवं ओ ओहि घटना सभक विषयमे लिखबाक लेल बाध्य भेलाह। मुदा एहि विषय सभपर हुनका ओहन अधिकार नहि छलनि जेहन जीवनक आरम्भिक अनुभव सभ सँ लेल गेल विषय सभपर छलनि। ओ १९३३ ई. मे जखन पैंतीस वर्षक भ' चुकल छलाह तखन कलकत्तामे रहबाक लेल आयल छलाह। ओहि समय धरि हुनकर मन स्थिर भ' चुकल छल।

प्रधान उपन्यास सभमे सेहो हुनकर विफलता एहि बातमे निहित छल जे राष्ट्रीय जीवनमे उद्योगक भूमिकाकेँ ओ ओतेक नीक जकाँ नहि बुझि सकल छलाह जतेक नीक जकाँ कृषिक भूमिकाकेँ बुझैत छलाह। क्रमबद्ध गणना और जनगणना वृत्तान्त ई दर्शबैत अछि जे बीरभूममे कखनो कोनहु पैघ उद्योग नहि छल। जिलामे मात्र चाउरक अनेक कारखाना अछि। स्टेशनपर रेलवे यार्ड अछि। यदि ई तथ्य अछि तखन हुनक उपन्यास सभक पात्र कोन तरहेँ ओहि जिलामे स्थित औद्योगिक क्षेत्र सभमे जा सकैत अछि? उद्योग कृषि मजदूर सभकेँ आकर्षित करैत अछि, ई एक तथ्य अछि मुदा बीरभूममे नहि।

आधिकारिक वृत्तान्त और स्वीकृत तत्व सभक अनुसारेँ ई ज्ञात होइत अछि जे ओतुका लोक भूखसँ मरबाक उपरान्तो अपन जिला नहि छोड़ैत अछि। भ' सकैत अछि जे ताराशंकर कृषि मजदूर सभक औद्योगिक क्षेत्र दिसि जायबकेँ प्रमाणित तथ्य स्वीकार क' लेने होथि और एकरा अपना पुस्तक सभमे प्रवेशित कैने होथि अथवा संभवतः हुनक जिलामे की भ' रहल छल ई बुझबामे ओ विफल रहल होथि।

हुनक शैलीक अभावक विषयमे बहुत किछु कहल गेल अछि। ई सत्य अछि जे प्रेमेन्द्र मित्रक लघु कथा सभमे अथवा माणिक बनर्जीक "पुतुल नाचेर इतिकथा" जकाँ ओ अपना शैलीपर अधिकार नहि रखलनि मुदा ताराशंकरकेँ हुनक शैली मात्रक लेल नहि पढ़ल जाइत अछि। आन लेखक अपन साहित्यिक विचार सभकेँ शैलीगत ढंगसँ व्यवस्थित क' अभिव्यक्त करैत अछि। ताराशंकरमे भावना हुनक लेखनीपर शासन करैत अछि और ओ एकर परवाहि नहि करैत छथि जे भावनाक तरंगकेँ ओ कोन तरहेँ अभिव्यक्त करैत छथि। हुनक साहित्यिक विचार, मुख्य रूपेँ हुनक प्रधान लघु-कथा सभमे, एक नाटकीय ढंग सँ व्यवस्थित भ' क' अवैत अछि। मुदा दुर्भाग्य ई अछि जे हुनक भाषा और कथा कहबाक ढंग जे ग्रामीण विषयक लेल सर्वाधिक उपयुक्त अछि, आन विषयमे गम्भीर पाठककेँ प्रभावित करबा मे विफल रहैत अछि। जखन कोनो लेखक अकाल, युद्ध, साम्प्रदायिक दंगा और भारतक विभाजन सन स्थानीय विषयपर लिखैत अछि और जीवनक विभिन्न क्षेत्रक प्रतिनिधित्व करैवला पात्र सभक रचना करैत अछि तखन ओकरा ई बुझबाक चाही जे समसामयिक लोक एकटा समसामयिक भाषामे गप्प करैत अछि। कोनो क्षणिक वातक वर्णनक लेल पुराण या पुराकथाक मददि लेब सदिखन पर्याप्त नहि अछि। सम्भवतः एक भिन्न प्रकारक सादृश्य और विम्ब एकटा आधुनिक नर अथवा नारीक द्विविधाकेँ नीक तरहेँ अभिव्यक्त क' सकत। ताराशंकरक भाषा समयक संग नहि चलैत अछि, यद्यपि हुनक विचार चलैत अछि। हुनका सन उच्चकोटिक लेखक ओही लापरवाह शैली और बोझिल भाषामे सालो धरि लिखैत रहल, एवं विषय-वस्तुक माँगक अनुसारेँ शैलीकेँ सुधारबाक और भाषाकेँ बदलबाक परवाहि नहि कैलक, ई देखब एकटा दुर्भाग्य थिक।

ने ओ अपन उपन्यास संभक संरचना और गठनपर ध्यान दैत छथि। गठनक दृष्टिसँ "गणदेवता", "पंचग्राम" और "धातृदेवता" सर्वोत्तम अछि। आन उपन्यास जाहिमे हुनक उत्कृष्टतम उपन्यास सभ मे सँ एक "हाँसुली बाँकेर उपकथा" सम्मिलित अछि, बेसीभाग स्थूल गठन वला अछि। ओ जतेक पैघ होइत अछि ओकर गठन ओतबे बेढंग भेल जाइत अछि। हुनक प्रधान उपन्यास सभकेँ छोड़ि, प्रायः सब पैघ उपन्यास, जेना "राधा" (नायिकाक नाम), "मंजरी ओपेरा" (स्वामिनी मंजरीक नाम पर एकाट ओपेरा मण्डली), नागिनी कन्यार काहिनी", "आरोग्य निकेतन", "योगभ्रष्ट", कथानकक प्रचुरतासँ लदल अछि। एहि उपन्यास सबमे ओ एकटा सोझ–सरल कथा कहबामे विफल

होइत छथि, मूल कथानक उपकथा सभमे डूबि जाइत अछि और ई हुनक एकटा आन अभ्यास पुनरुक्तिकेँ जन्म दैत अछि। प्रायः ओ स्वयंकेँ दोहरबैत छथि या अनावश्यक वाकप्रपंचमे पड़ि जाइत छथि जे पुस्तककेँ पढ़बामे अनावश्यक रूपेँ बोझिल बना दैत अछि। मुदा हुनक प्रधान लघु कथा सभ एहि सब दोषसँ मुक्त अछि।

उपन्यासक रूप–विधानक दृष्टिसँ ई सब हुनक विफलता थिक। हुनक उपन्यासक विषय-वस्तुक त्रुटिकेँ निर्दिष्ट करब कठिन अछि। एहन करबाक अर्थ हैत ताराशंकरक व्यक्तित्वक आलोचना करब। आधुनिक पाठककेँ हुनकामे जे दोष देखा पड़ैछ ओ थिक नैतिकता और अनुदारवादसँ बढ़ैत हुनकर तन्मयता। एहि तथ्यकेँ स्वीकारैत जे ओ अनुदारवादी छलाह और ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक प्रति श्रद्धालु छलाह, ई देखि आश्चर्य होइछ जे ओ सम्पूर्ण सामाजिक दुर्गुणकेँ निष्कपटतासँ पाश्चात्य जीवन-शैलीक परिणाम कहि दैत छथि। प्रत्येक पाश्चात्य वस्तुक भर्त्सनाक उत्साह मे ओ "सप्तपदी" क नायक केँ पाश्चात्य ढंगसँ रहैत देखबैत छथि जखन कि ओ एक जिला प्रमुखक मात्र तेसर मुन्सिफ अछि। यदि ओ यथार्थवादी होइतथि तँ ओ ई अनुभव करितथि जे कोनो तेसर मुन्सिफ अपन वेतनपर ओहन जीवन नहि जी सकत। की ताराशंकर वास्तवमे मानैत छलाह जे हमरा सभक शिक्षा व्यवस्थामे अंग्रेजीक समावेश और आधुनिक जीवन-शैली मनुष्यक अधःपतन क' देने अछि? ओ आधुनकि मनुष्यक मात्र सतही पहचान रखैत छलाह एवं कोनो आधुनकि सुसंस्कृत मनुष्य कोना बजैत अछि और कोना व्यवहार करैत अछि ई नहि जनैत छलाह। हुनक विश्लेषणसँ ई प्रमाणित होइछ जे आधुनकि मनुष्य अपन नास्तिकताक कारणेँ दुःख उठबैत अछि। मुदा, अखनो आधुनकि मनुष्य बेकारी, गरीबी, भूख और महगी सन विभिन्न कारण सँ दुःखी अछि जकर वास्तविकता सँ कोनो सरोकार नहि अछि। भारत सन नितान्त ईश्वरवादी देशमे सेहो ईश्वर दिनो-दिन धनी वर्गक विलासक वस्तु बनल जा रहल अछि और दरिद्र सभक लेल अन्तिम शरण-स्थल। भारतक शिक्षित युवक केँ ईश्वरपर सोचबाक समय कतय अछि? यदि ताराशंकरक मन मे अपार सम्पदासँ उत्पन्न एकटा जड़िहीन पीढ़ी अछि तँ ई बात सम्बद्ध विषयपर हुनक उपन्यास सबसँ स्पष्ट नहि होइछ और कटु सत्य ई अछि जे देशमे एहि तरहक पीढ़ीक कोनो जड़ि नहि अछि।

तँ ई सभ हुनक विफलता थिक। मुदा हुनक उपलब्धि हुनक विफलता सँ बेसी समय धरि जीवित रहत। यदि आधुनिक पाठक मात्र सतहपर हुनक अध्ययन करैत अछि एवं गहराईमे नहि जाइत अछि तँ ई एकटा खेदक विषय अछि। अपन तीन महाकावयात्मक उपन्यासक बलपर ओ आन लेखक लोकनिसँ बेसी समय धरि स्मरणीय रहताह कियेक तँ एकरा पढ़ि पाठक भारतक पुनराविष्कार करत, ओहि भारतक जे मूलतः अपन गामक दरिद्रतामे बन्दी अछि। ओ सभसँ बेसी समय धरि स्मरणीय रहताह, कियेक तँ ओ ओहि बड़ थोड़ सन भारतीय लेखक सभमे सँ छथि जे बंगला साहित्य अखन धरि देने अछि।

हुनक प्रशस्त कैल पथ खुजल रहि सकत एकर उत्तर देब कठिन अछि, कियेक तँ एकरा लेल हुनका सन साहस और पौरुष, कर्मक प्रति हुनका सन पूर्ण लगाव और पूर्ण निष्ठा दुर्लभ अछि। ई कोनो साधारण काज नहि थिक, कियेक तँ अतिमानव सभक युग तत्काल समाप्त भ' गेल अछि एवं मात्र उमेद कैल जा सकैछ जे गम्भीर पीड़ाक मूर्तिमान रूप पश्चिम बंगालमेपुनः लेखक सभक एकटा नव पीढ़ी जन्म लेत जे अनजानहिमे सही, एकटा सम्पूर्ण देशक पीड़ा और एकटा सम्पूर्ण देशक दैन्य एवं संघर्षक विषयमे जखन-जखन लिखत तखन-तखन ताराशंकरक पथक अनुसरण करत। वास्तवमे जखन एहि तरहक भारतीय लेखक लोकनिक पीढ़ी समक्ष आयत मात्र तखनहि ताराशंकरक उपलब्धि पूर्ण हैत, ओहि सँ पूर्व नहि।

ताराशंकर बंद्योपाध्यायक कृति

१. त्रिपत्र : कविता संग्रह : १९२६
२. चैताली घुरनी (चैतक आन्ही) उपन्यास : १९३२
३. पाषाण पुरी (जेल) : उपन्यास : १९३३
४. नीलकंठ : उपन्यास : १९३३
५. राईकमल : उपन्यास : १९३५
६. प्रेम ओ प्रयोजन : उपन्यास : १९३६
७. छलनामयी : कथा संग्रह : १९३७
८. जलसाघर : कथा संग्रह : १९३८
९. आगुन : उपन्यास : १९३८
१०. रसकली (तिलक) : कथा संग्रह : १९३९
११. धातृदेवता : उपन्यास : १९३९
१२. कालिंदी : उपन्यास : १९४०
१३. तीन शून्य : कथा संग्रह : १९४२
१४. कालिंदी : नाटक : १९४२
१५. दुई पुरूष : नाटक : १९४३
१६. गणदेवता : उपन्यास : १९४३
१७. पथेर डाक (रस्ताक पुकार) : नाटक : १९४३
१८. प्रतिध्वनि : कथासंग्रह : १९४३
१९. बेदिनी (बंजारिन) : कथा संग्रह : १९४३
२०. दिल्लीक लड्डू : कथा संग्रह : १९४३
२१. मनवंतर (अकाल) : उपन्यास : १९४४
२२. पंचग्राम : उपन्यास : १९४४
२३. जादूकारी : कथा संग्रह : १९४४
२४. स्थलपद्म : कथा संग्रह १९४४
२५. कवि : उपन्यास : १९४४
२६. तेरशो पंचास (१३५०) : कथा संग्रह : १९४४
२७. विंश शताब्दी : १९४५
२८. चकमकी : (स्वांग) : १९४५

२९. द्वीपांतर (निर्वासन) : नाटक : १९४५
३०. प्रसादमाला : कथासंग्रह : १९४५
३१. हरानो सुर (हरायल स्वर) : कथा संग्रह : १९४५
३२. संदीपन पाठशाला : उपन्यास : १९४६
३३. झार ओ झारपात (आन्ही और पात) : उपन्यास : १९४६
३४. अभियान : उपन्यास : १९४६
३५. इमारत : कथा संग्रह : १९४७
३६. रामधनु (इन्द्रधनुष) : कथा संग्रह : १९४७
३७. ताराशंकरक श्रेष्ठ गल्प : कथा संग्रह : १९४७
३८. श्री पंचमी : कथा संग्रह :
३९. संदीपन पाठशाला (बच्चा सबहक लेल) : उपन्यास : १९४८
४०. कामधेनु : कथा संग्रह : १९४९
४१. पदचिह्न : उपन्यास : १९५०
४२. ताराशंकर बंद्योपध्यायेर श्रेष्ठ गल्पः कथा संग्रह : १९५०
४३. उत्तरायण : उपन्यास : १९५०
४४. माटी (धरती) : कथा संग्रह : १९५०
४५. आमार कालेर कथा (हमर युगक कथा) : संस्मरण : १९५१
४६. हाँसुली बांकेर उपकथा (हंसुली मोड़क कथा) : उपन्यास : १९५१
४७. युगविप्लव : नाटक : १९५१
४८. शिलासन : कथा संग्रह : १९५२
४९. तमस तपस्या : उपन्यास : १९५२
५०. नागिनी कन्यार काहिनी : उपनयास : १९५२
५१. विचित्र स्मृति काहिनी : संस्मरण : १९५३
५२. आरोग्य निकेतन : उपन्यास : १९५३
५३. आमार साहित्य जीवन : संस्मरण : १९५३
५४. ताराशंकर बंद्योपाध्यायेर प्रिय गल्पः कथा संग्रह : १९५३
५५. स्वनिर्वाचित गल्प (ताराशंकर द्वारा चुनल गेल कथा) सन : १९५४
५६. चम्पाडांगेर बोउ (चम्पाडांगक नववधु) : उपन्यास : १९५४
५७. गल्प संचयन : कथा संग्रह : १९५५
५८. विस्फोरन (विस्फोट) : कथा संग्रह) : १९५५
५९. किशोर स्मृति : संस्मरण : १९५६
६०. पाँच पुतली : उपन्यास : १९५६
६१. छोटोदेर श्रेष्ठ गल्प (बच्चा सबहक श्रेष्ठ कथा) : १९५६
६२. कालान्तर : कथा संग्रह : १९५६
६३. कवि : नाटक : १९५७
६४. विचारक : उपन्यास : १९५७

६५. कालरात्रि : नाटक : १९५७
६६. विषपाथर : कथा संग्रह : १९५७
६७. सप्तपदी : उपन्यास : १९५८
६८. विपाशा : उपन्यास : १९५९
६९. राधा : उपन्यास : १९५९
७०. मानुषेर मन (मनुष्यक मन) : उपन्यास : १९५९
७१. डाक हरकारा : उपन्यास : १९५९
७२. रचना संग्रह : प्रथम भाग : १९५९
७३. रविवारेर आसार (रविदिनक बैठक) : कथा संग्रह : १९५९
७४. मास्को ते क्येक दिन (मास्को मे किछु दिन) यात्रा वृत्तन्त : १९५९
७५. महाश्वेता : उपन्यास : १९६१
७६. योगभ्रष्ट : उपन्यास : १९६१
७७. प्रेमेर गल्प : कथा संग्रह : १९६१
७८. पौष लक्ष्मी : कथा संग्रह : १९६१
७९. आलोकाभिसार : कथा संग्रह : प्रकाशन तिथि अज्ञात
८०. ना : उपन्यास : १९६१
८१. साहित्येर सत्य : निबन्ध : १९६१
८२. नागरिक : उपन्यास : १९६१
८३. निशिपद्म : उपन्यास : १९६२
८४. चिरंतनी : कथा संग्रह : १९६२
८५. यतिभंग : उपन्यास : १९६२
८६. एक्सीडेंट (दुर्घटना) : कथा संग्रह : १९६२
८७. संघट (संघर्ष) : नाटक : १९६२
८८. छोटो देर भालो–भालो गल्प (बच्चा सबहक लेल नीक-नीक कथा) : १९६२
८९. आमार साहित्य जीवन : संस्मरण : द्वितीय भाग : १९६२
९०. कांना (नोर) : उपन्यास : १९६२
९१. तमाशा : कथा संग्रह : १९६३
९२. कालवेशाखी (वैशाखक आन्ही) : उपन्यास : १९६३
९३. भारतवर्ष ओ चीन : निबंध : १९६३
९४. गल्प पंचासत (पचासटा कथा) कथा संग्रह : १९६३
९५. एकटो चौरी पाखी ओ कालो में (गौरैया और कार लड़की) उपन्यास : १९६३
९६. आइना : कथा संग्रह : १९६३
९७. जंगलगढ़ : उपन्यास : १९६४
९८. चिन्मयी : कथा संग्रह : १९६४
९९. मंजरी आपेरा : उपन्यास : १९६४
१००. भुवनपुरेर हाट : उपन्यास : १९६४

१०१. संकेत : उपन्यास : १९६४
१०२. वसंतराग : उपन्यास : १९६४
१०३. एकटी प्रेमेर गल्प : कथा संग्रह : १९६५
१०४. स्वर्ग मर्त्य : उपन्यास : १९६५
१०५. विचित्र : उपन्यास : १९६५
१०६. गन्ना बेगम : उपन्यास : १९६५
१०७. अरण्यवह्नि : उपन्यास : १९६६
१०८. हीरा पन्ना : उपन्यास : १९६६
१०९. किशोर संचयन : कथा संग्रह : १९६६
११०. महानगरी : उपन्यास : १९६६
१११. गुरूदक्षिणा : उपन्यास : १९६६
११२. तपोभंग : कथा संग्रह : तिथि अज्ञात
११३. दीपार प्रेम : कथा संग्रह : १९६६
११४. नारी रहस्यमयी : कथा संगह : १९६७
११५. पंचकन्या : कथा संग्रह : १९६७
११६. शुकसरि कथा (तोता मैना कथा) : उपन्यास : १९६७
११७. शिवानीर अदृष्टा : कथा संग्रह : १९६७
११८. शक्करबाई : उपन्यास : १९६७
११९. गोविन्द सिंहेर घोरा (गोविन्द सिंहक घोड़ा) : कथा संग्रह : १९६८
१२०. जया : कथा संग्रह : १९६८
१२१. आरोग्यनिकेतन : नाटक : १९६८
१२२. एक पशला वृष्टि (वर्षाक झोंक) कथा संग्रह : १९६९
१२३. मोनी बऊदी (मणि भोजी) उपन्यास : १९६९
१२४. छोटोदेर श्रेष्ठ गल्प (बच्चासभहक श्रेष्ठ कथा) : १९६९
१२५. मिच्छिल (जुलूस) कथा संग्रह : १९६९
१२६. छायापथ (आकाशगंगा) उपन्यास : १९६९
१२७. कालरात्री : उपन्यास : १९७०
१२८. रूपसी विहंगिनी : उपन्यास : १९७०
१२९. अभिनेत्री : उपन्यास : १९७०
१३०. फरियाद : उपन्यास : १९७१
१३१. रवीन्द्रनाथ ओ बांगलार पल्ली (रवीन्द्रनाथ और बंगालक गाम) निबन्ध १९७१
१३२. उन्नीस शो एकहत्तर (१९७१) दूटा कथा : १९७१
१३३. शताब्दीर मृत्यु : उपन्यास : १९७१
१३४. किष्किंध्या काण्डो (किष्किंधा काण्ड) : बाल उपन्यास : १९७२

जीवन-वृत्त

ताराशंकर बंद्योपाध्यायक जन्मबीरभूम जिलाक लाभपुर गाममे २३ जुलाई १८९८ ई. मे अपन पैतृक घरमे भेल छलनि। १९०५ ई. मे हुनक पिता हरिदास बंद्योपाध्याय और १९६९ ई. मे हुनक माता प्रभावती देवीक देहान्त भेल। १९१६ ई. मे ओ लाभमुर जादवलाल हायर एजूकेशन स्कूलसँ मैट्रिक पास कैलनि। ओ पहिने सैंट जेवियर्स कॉलेज कलकत्तामे और तत्पश्चात् साऊथ सबर्बन कॉलेज कलकत्तामे प्रवेश लेलनि, मुदा खराब स्वास्थ्य और राजनैतिक गतिविधिक चलते विश्वविद्यालयक शिक्षा पूर्ण नहि क' सकलाह।

१९१६ ई. मे ओ उमाशशि देवीसँ विवाह कैलनि। हुनक पैघ पुत्र सनत्कुमारक जनम १९१८ ई. मे भेल, सभसँ छोट पुत्र सरित्कुमारक जन्म १९२२ ई. मे भेल, सभसँ पैघ पुत्री गंगाक जन्म १९२४ ई. मे, दोसर पुत्री बुलू १९२६ ई. मे और सभसँ छोट पुत्री वाणीक जन्म १९३२ ई. मे भेल। १९३२ ई. मे बुलूक मृत्यु भ' गेल।

१९३० ई. मे ओ गिरफ्तार भेल छलाह और दिसम्बरमे मुक्त भेल छलाह। १९३२ ई. मे ओ शान्तिनिकेतनमे सर्वप्रथम टैगोरसँ भेंट कयने छलाह। हुनक पहिल उपन्यास "चैताली घुरनी" १९३२ ई. मे प्रकाशित भेल।

१९३५ ई. मे लाभपुरक निवासी द्वारा हुनकर अभिनन्दन कैल गेल। १९३७ ई. मे ओ सभ दोसरबेर अभिनन्दन कैलक। १९४० ई. मे ओ बाग बाजार कलकत्तामे भाड़ापर घर लेलनि एवं अपन परिवारकेँ कलकत्ता ल' अनलनि। १९४१ ई. मे ओ उत्तर कलकत्ताक एकटा उपनगर बड़ा नगरमे रहबाक लेल चलि गेगाह। १९४२ ई. मे ओ बीरभूम जिला साहित्य सम्मेलनक साहित्यिक विभागक अध्यक्षता कैलनि। १९४२ ई. मे फासिस्ट विरोधी लेखक एवं कलाकार संघक अध्यक्ष भेलाह। १९४४ ई. मे ओ कानपुर-प्रवासी साहित्य सम्मेलनक साहित्यिक विभागक अध्यक्षता कैलनि। १९४७ ई. मे कलकत्तामे आयोजित प्रवासी बंग साहित्य सम्मेलनक ओ उद्घाटन कैलनि। एहि साल ओ बम्बईमे रजत जयन्ती प्रवासी बंग साहित्य सम्मेलनक साहित्यिक विभागक अध्यक्षता कैलनि। १९४७ ई. मे हुनका कलकत्ता विश्वविद्यालय शरद-स्मृति पदक प्रदान कैलक। जुलाई १९४७ ई. मे बंगालक लेखक लोकनि हुनक पचास वर्ष पूर्ण भेलापर अभिनन्दन कैलक। १९४८ ई. मे ओ कलकत्ताक टाला पार्कमे नवनिर्मित अपन घरमे प्रवेश कैलनि।

१९५१ ई. मे ओ सोवियत संघ जयबाक निमंत्रण अस्वीकार क' देलनि। १९५२ ई. मे हुनका विधान सभाक सदस्य मनोनीत कैल गेल छल।

१९५४ ई. मे ओ मातासँ दीक्षा लेलनि। १९५५ ई. मे पश्चिम बंगाल सरकार हुनका रवीन्द्र-स्मृति-पुरस्कार प्रदान कैलक। १९५६ ई. मे हुनका चीनी लेखक लूशुनक बरसीक अवसरपर भारत सरकार चीन पठौलक, मुदा बीमारीक चलते ओ रंगूनसँ लौटि गेलाह। १९५६ ई. मे हुनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल। १९५७ ई. मे चीन सरकारक निमंत्रणपर ओ चीन गेलाह। १९५८ ई. मे ओ अफ्रो-एशिया-लेखक-सम्मेलनक प्रारम्भिक समितिमे सम्मिलित होमय सोवियत संघ गेलाह। एही वर्ष ओ अफ्रो-एशिया लेखक-सम्मेलनमे भारतीय लेखक प्रतिनिधि मंडलक नेताक रूपमे ताशकन्द गेलाह।

१९५९ ई. मे ओ कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ जगततारिणी स्वर्ण पदक प्राप्त कैलनि। एही वर्ष मद्रासमे आयोजित अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक ओ अध्यक्षता कैलनि। १९६० ई. मे ओ राज्य विधान सभाक सदस्यतासँ निवृत भ' राष्ट्रपति द्वारा संसद सदस्य मनोनीत भेलाह। एहि सम्मानक उपलक्षमे बांत्रा, हावड़ाक नागरिक हुनकर अभिनन्दन कैलक। एही साल लाभपुरक निवासी तेसर बेर हुनकर अभिनन्दन कैलक। १९६२ ई. मे ओ पद्मश्रीसँ अलंकृत भेलाह। एही वर्ष हुनक सबसँ पैघ जमाय शान्तिशंकर मुखर्जीक देहान्त भ' गेल। एहिसँ हुनका गम्भीर आघात पेहुँचल एवं अपन ध्यान एहि दिससँ हटैबाक लेल ओ चित्रकला और काठक खेलौना बनबैमे लागि गेलाह। १९६३ ई. मे हुनका सिसिरकुमार पुरस्कार भेटलनि। १९६६ ई. मे ओ संसद सँ अवकाश प्राप्त कयलनि। १९६६ ई. मे ओ नागपुर बंग साहित्य सम्मेलनक अध्यक्षता कैलनि। १९६७ ई. मे हुनका ज्ञानपीठ पुरस्कार भेटलनि। एहि अवसरपर कलकत्ता नगर निगम हुनकर सार्वजनिक अभिनन्दन कैलक।

७० वर्षक भेलापर पश्चिम बंगालक नागरिक महाजातीय सदन मे हुनकर सार्वजनित अभिनन्दन कैलक। १९६८ ई. मे ओ पद्मभूषणसँ अलंकृत भेलाह। एही वर्ष कलकत्ता और जादवपुर विश्वविद्यालय हुनका डॉक्टर ऑफ लिटरेचरक उपाधिसँ सम्मानित कैलक। १९६९ ई. मे ओ साहित्य अकादमीक फैलो बनलाह। एही वर्ष ओ बंगीय साहित्य परिषदक अध्यक्ष भेलाह एवं त्रैमासिक पत्र "शतरूपा" क सम्पादक मंडलक अध्यक्ष भेलाह। १९७० ई. मे लाभपुर वासी हुनकर चारिम बेर अभिनन्दन कैलक। १९७१ ई. मे विश्वभारतीक निमंत्रणपर ओ नृपेन्द्रचन्द्र-स्मृति व्याख्यान देलनि। कलकत्ता विश्वविद्यालय हुनका डी. एल. राय स्मृति–व्याख्यान देबाक लेल आमंत्रित कैलक।

१९७१ ई. क जुलाईसँ हुनका साइनसक तकलीफ होमय लागल। १३ अगस्तकेँ ओ अकस्मात् बेहोश भ' गेलाह मुदा दुपहर धरि ठीक भ' गेलाह। सात सितम्बर धरि ओ पूर्णतः स्वस्थ छलाह। तत्पश्चात् दोसर दौरा पड़ल। १४ सितम्बरक भोरमै हुनकर देहान्त भ' गेल। हुनकर अन्तिम संस्कार उत्तर कलकत्ताक नीमतल्ला घाटमे कैल गेल। हुनक ज्येष्ठ पुत्र सनत्कुमार बंद्योपाध्याय हुनकर अन्तिम संस्कार कैलनि।

117163
10·12·04

ताराशंकर बंद्योपाध्याय (1898-1971) विभूतिभूषण और माणिकक संग टैगोरोत्तर बंगला उपन्यासक इतिहास मे तीनटा मीलक पाथर मानल जाइत छथि । शरतचन्द्र एकमात्र अपवाद छथि । मुदा ताराशंकरक मूल्यांकन आन दुनू लेखकक तुलना मे करब संभव नहि अछि । तीनू एक दोसरा सँ सुस्पष्ट रूपें भिन्न छथि । एकटा उपन्यासकारक रूप में ताराशंकरक की उपलब्धि अछि ? ओ माणिक बंद्योपाध्याय जकाँ सामाजिक ढाँचा मे लागल आन्तरिक रोगक धुनक विश्लेषक नहि छथि । विभूतिभूषण सँ सेहो हुनकर कोनो साम्य नहि अछि । विभूतिभूषणक कला अप्रतिम अछि, जकर सानी बंगला साहित्य मे हुनक पहिने अथवा बाद मे नहि भेटैछ ।

मुदा ताराशंकर केँ पाठक सभ एतेक सहजता सँ किये स्वीकार केने छल ? एकर उत्तर मुख्यत: हुनक विषयक चयन मे निहित अछि । विषयक प्रत्यक्ष ज्ञान हुनकर सम्पत्ति छल । हुनका लेल देश कोनो अमूर्त वस्तु नहि अछि। देश, जनता, माटि, फसिल, खेती, कराधान, राजस्व, कृषि-ऋण, नहर-कर, सूखा, अकाल, बाढ़ि और भूमिहीन खेतिहर-मजदूर सभक कमर-तोड़ परिश्रम थिक । हुनकर सफलताक यैह रहस्य अछि और महाश्वेता देवी, जे स्वयं श्रेष्ठ उपन्यासकार छथि, एहि महान उपन्यासकारक ज चित्रित केलन्हि अछि, जे एक इतिहासकार जकाँ नैरन्तर्य और पुनरुत्थानक आख्यानक वर्णन करै

Library IIAS, Shimla
MT 891.443 092 4 B 223 M
00117163

ISBN 81-7201-983-1

पन्द्रह टाका